ब्राह्मण बनाम ब्राह्मणवाद



डॉ. धर्मकीर्ति

ब्राह्मण बनाम ब्राह्मणवाद

डॉ. धर्मकीर्ति

एम.ए., एम.एड., एम.फिल्.

पी-एच.डी. (मनो.), पी-एच.डी. (दर्शनशास्त्र)

पी-एच.डी. (बौद्ध अध्ययन), डी.लिट्. (दर्शनशास्त्र)

सम्यक प्रकाशन



"वेदप्रामाण्यं कस्यचित् कर्तृवादः,
स्नाने धर्मेच्छा जातिवादावलेपः।
संतापारंभः पापहानाय चेति,
ध्वस्तप्रज्ञानां पंच सिंगानि जाड्ये।।"

(आचार्य धर्मकीर्ति कृत प्रमाणवार्तिक-स्वतृत्ति 1/342)

अर्थात *"वेद (=ग्रंथ) की प्रमाणता, किसी (ईश्वर) का (सृष्टि) कर्त्तापन (=कर्तृवाद), स्नान (करने) मैं धर्म (होने) की इच्छा रखना, जातिवाद (=छोटी बड़ी जाति-पांत) का घमंड, और पाप दूर करने के लिए (शरीर को) सन्ताप देना (=उपवास तथा शारीरिक तपस्याएं करना)—ये पांच हैं, अकल-मारे (लोगों) की मूर्खता (=जड़ता) की निशानियां।"*

समर्पण

ब्राह्मणवाद के कट्टर पोषक एवं अंध संरक्षक

मा. कुलानन्द भारतीय

पूर्व कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) दिल्ली को,
जिसकी खून की एक-एक बूंद, रग-रग एवं जीन्स में,
ब्राह्मणवाद ठूंस-ठूंसकर भरा एवं समाया हुआ है,
को

समर्पित

प्राक्कथन

इस महत्वपूर्ण पुस्तक का प्राक्कथन लिखने के पूर्व मैं प्रबुद्ध पाठकों को यह बता देना चाहता हूं कि मैंने इस पुस्तक को मा. कुलानन्द भारतीय, पूर्व कार्यकारी पार्षद (शिक्षा), दिल्ली को क्यों समर्पित किया है? उसके दो महत्वपूर्ण कारण हैं। पहला कारण यह है कि मैंने अपने जीवन में मा. कुलानन्द भारतीय जैसा अंधविश्वासी और पाखण्डी ब्राह्मणवादी नहीं देखा। मा. भारतीय ने दलित विरोधी होने के कारण इस पुस्तक को लिखने के लिए मुझे प्रोत्साहित किया है। इसका दूसरा कारण यह है कि मा. भारतीय ऐसे जुगाड़ू ब्राह्मणवादी व्यक्ति हैं, जो संस्कृत भाषा की ए.बी. सी.डी. एवं 'राम' पद के रूप नहीं जानते, फिर भी जुगाड़ के कारण संस्कृत एकैडमी के उपाध्यक्ष बने हुए हैं जबकि प्रोफेसर संघसेन सिंह जैसे संस्कृत एवं पालि भाषाओं के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान और भारत के महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत व्यक्ति इसके केवल सामान्य सदस्य ही हैं। यहां यह भी बताना आवश्यक है कि प्रोफेसर सिंह दिल्ली विश्वविद्यालय के बौद्ध अध्ययन विभाग में अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

मैं अपने छात्र जीवन से ही महापंडित राहुल सांकृत्यायन, डॉ. भदंत आनन्द कौसल्यायन, भिक्खु धर्मरक्षित, प्रोफेसर बुद्धप्रिय मौर्य जी के सानिध्य में रहा, इस कारण मैं ब्राह्मणवाद का विरोधी हो गया था। लेकिन सरकारी नौकरी में आने के बाद वह विरोध कुछ कुंठित सा हो गया था। लेकिन जब मैं मा. कुलानन्द भारतीय के सम्पर्क में आया, तब कुंठित विरोध अति तीव्र एवं ब्लेड की धार की तरह तेज हो गया। इसका मैं श्रेय मा. भारतीय को देना चाहूंगा। यहां मैं दो-तीन घटनाओं का जिक्र करना चाहूंगा, जो नीचे दी जा रही हैं।

मैं एक समय शिक्षा निदेशालय, दिल्ली में उपशिक्षा निदेशक (डिस्ट्रिक्ट ईस्ट) में तैनात था। राजकीय (आदर्श) सह-शिक्षा सीनियर सैकण्ड्री स्कूल, विवेक विहार, दिल्ली में स्कूल की छुट्टी के बाद कुछ अध्यापकों ने शराब की पार्टी की। इसकी शिकायत प्रधानाचार्य ने मुझसे की और मैंने शिक्षा अधिकारी से उसकी जांच कराई। शिकायत सच्ची पाने पर मैंने उन अध्यापकों का ट्रांसफर कर दिया। उनमें कुछ अध्यापक ब्राह्मणवादी थे। वे सभी भारतीय जी के कार्यालय में आए और मेरे विरुद्ध शिकायत की, कि उनका ट्रान्सफर बिना किसी कारण के कर दिया है और उन्होंने चुगली खाई कि मैंने मा. भारतीय को पहाड़ी चूहा भी कहा है।

मा. कुलानन्द भारतीय ने अपनी अक्ल का प्रयोग नहीं किया और उन्होंने इसकी

शिकायत दिल्ली के उपराज्यपाल मा. जगमोहन से कर दी कि मैंने मा. भारतीय को गालियां दी हैं और उन्हें पहाड़ी चूहा कहा है। यह पहाड़ी चूहे वाली बात सारी दिल्ली में जंगल में आग की तरह फैल गई। जब की सत्य यह है कि मा. भारतीय मुझसे उम्र में बड़े और मेरे विभाग के कार्यकारी पार्षद (शिक्षा) थे। इन हालात में मैं इतना अशिष्ट और अभद्र नहीं को सकता था कि मैं उन्हें पहाड़ी चूहा कहता। मा. भारतीय ने ब्राह्मणवाद से प्रेरित होकर उन शराबी अध्यापकों का ट्रान्सफर रोक दिया और मेरा ट्रान्सफर कर दिया। इसके अतिरिक्त की मा. भारतीय द्वारा ब्राह्मणवाद की सनक मैं मेरे साथ अनेक ऐसे जातिवादी पक्षापात, भेदभावपूर्ण दुर्व्यवहार किए गए, जिनका मैं यहां जिक्र नहीं करना चाहता हूं। इन बातों के कारण मैंने मा. कुलानन्द भारतीय को यह महत्वपूर्ण पुस्तक समर्पित की है और उन्हीं के ब्राह्मणवाद से प्रेरित होकर मैं यह पुस्तक लिख सका हूं।

यथार्थ मैं ब्राह्मणवाद बड़ा ही खतरनाक पागल जानवर होता है, जो बिना किसी कारण कमजोरों पर हमला करता है और जो ताकतवर होते हैं, उनके पास जा पूंछ हिलाकर जमीन में लेट जाता है और पैर के तलवे चाटने लगता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि भारत में सबसे पहला मुसलमान बनने वाला व्यक्ति और सबसे पहले ईसाई बनने वाला आदमी भी ब्राह्मण ही थे। महर्षि दयानन्द को दूध में पिसा हुआ कांच मिलाने वाला उन्हीं का रसोइया ब्राह्मण था। गुरु गोविन्द सिंह जी के लड़कों को चांदी के चन्द टुकड़ों के लिए मुसलमान बादशाह को बेच देने वाला व्यक्ति ब्राह्मण था, जिन्हें गुरु गोविन्द सिंह साहब युद्ध में जाने के पूर्व अपने ब्राह्मण रसोइए की सुपुर्दी सौंप गए थे और एक थैली अशर्फियों की उसे दे गए थे। गुरु गोविन्द सिंह जी के बच्चों को दीवार में चुनने वाले भी दो ब्राह्मण ही थे। ऐसा सुना जाता है अशोक के प्रपौत्र की हत्या करके राजा बन बैठने वाला व्यक्ति भी देशद्राही अग्निहोत्री ब्राह्मण था। सौ नहीं, दौ सौ नहीं, इस प्रकार के हजारों-लाखों उदाहरण हैं, जब ब्राह्मणों ने देश के साथ गद्दारी की और इसे गुलाम बनाया। यह सब उनके ब्राह्मणवाद का परिणाम था।

ब्राह्मणवादी लोगों की यह खूबी रही है कि वे इतने शातिर किस्म के लोग होते हैं कि वे दूसरों के कंधों पर बन्दूक रखकर निशाना लगाते हैं। ब्राह्मण जाति हमेशा सत्ता के साथ रही है। पहले यह कांग्रेस के साथ सत्ता का भोग करके मजा लेती रही। जब कांग्रेस में दाल गलना बन्द हो गई, तो ये भारतीय जनता पार्टी के साथ जाकर मजे लेते रहे। जब वहां इनके वर्ग चरित्र का पता चला तो अब कुमारी मायावती के साथ मिलकर मजे ले रहे हैं। वे इस बात को भली-भांति जानते हैं कि कुमारी मायावती का यह नारा प्रसिद्ध था कि "तिलक तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार।" यथार्थ में ब्राह्मण एक ऐसी जाति है, जो अत्यन्त ही खतरनाक है जिसने समाज और देश का सत्यानाश कर दिया है।

ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद के बारे में विस्तृत रूप से इस पुस्तक में विचार देने का प्रयास किया गया है। ब्राह्मणों ने ब्राह्मणवाद को उत्पन्न किया है, जिससे भारत में अनेक प्रकार कि बुराइयां पैदा हो गई हैं। जातिवाद, भेदभाव, छुआछूत और भारत का एक हजार वर्ष गुलाम रहना ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद का ही परिणाम है। जहां तक मेरी जानकारी है, इन विषय पर अभी तक कोई पुस्तक नहीं लिखी गई है। पाखंडियों व अंधविश्वासियों को छोड़कर प्रबुद्ध पाठकों और संवेदनशील व्यक्तियों को यह पुस्तक पसंद आएगी।

अंत में, मैं महोपासक शान्ति स्वरूप बौद्ध जी और सम्यक् प्रकाशन परिवार के सदस्यों का साधुवाद देना चाहता हूं कि उन्होंने इतने कम समय में यह पुस्तक प्रकाशित करके जनता के हाथों में समर्पित कर दी है।

भवतु सब्बमंगलं

—डॉ. धर्मकीर्ति

विषय-सूची

विषय का परिचय

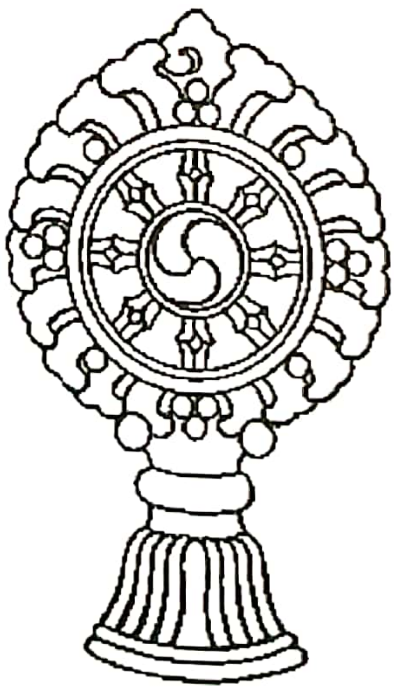
यदि भारत के इतिहास का निष्पक्ष एवं वस्तुनिष्ठ अध्ययन किया जाए, तो यह बात शतप्रतिशत सत्य प्रमाणित होगी कि प्राचीन काल से लेकर आज तक भारत की जितनी हानि ब्राह्मणवाद ने की है, शायद उतनी हानि अब तक किसी भी संस्था एवं सिद्धांत के द्वारा नहीं की गई होगी। ब्राह्मणवाद के कारण मुनष्य, मनुष्य के मनों व दिलों में अप्राकृतिक, बनावटीपन, भेदभाव, ऊंचनीच एवं छुआछूत की भावना एवं मानसिकता पैदा हो गई है। जिसके कारण कुछ जातियों का जीवन स्वर्ग के समान हो गया, तो कुछ जातियां जानवर बन कर रह गई और उनका जीवन नरक के समान हो गया। ब्राह्मणवाद कोई जीव, जानवर, खाद्य पदार्थ एवं वस्तु नहीं, बल्कि यह मुनष्य के पिछड़ेपन, मानसिक कुंठाओं, बिगड़े हुए दिमाग और निम्न स्तर की भावनाओं का परिणाम है, जिससे ब्राह्मणवाद का जन्म होता है।

ब्राह्मणवाद भाई चारे के स्थान पर मनुष्य-मनुष्य में भेद पैदा करता है, इससे समानता के स्थान पर असमानता पैदा होती है। मित्रता व दोस्ती के स्थान पर शत्रुता व दुश्मनी पैदा होती है। दुनिया में जितने भी रोग हैं, लगभग सबका इलाज सम्भव है, लेकिन ब्राह्मणवाद का इलाज न तो ऐलोपैथिक पद्धति में है और न होमोपैथिक में, न आयुर्वेद में है और न यूनानी पद्धति में एवं न नेचुरोपैथी में है और न अन्य किसी योग आदि में। न तो इसका इलाज किसी मनोचिकित्सालय में है और न किसी विकसित देश में है। यह एड्स की तरह लाइलाज रोग है।

दुनिया में चीन, मिश्र और भारत की संस्कृतियां सबसे प्राचीन हैं। भारत की प्राचीन संस्कृति होने पर यह चीन की अपेक्षा काफी पिछड़ी हुई संस्कृति है। इसके पिछड़ेपन के कारण की खोज की जाए, तो उसका एक मात्र कारण यहां पर फैला हुआ ब्राह्मणवाद है, जो हिन्दुओं के अलावा ईसाइयों, मुसलमानों, जैनों, सिखों और पारासियों तक में फैल चुका है। ब्राह्मणवाद एक मानसिक विकृति एवं पागलपन की निशानी है, जो केवल भारत के हिन्दुओं में ही नहीं, बल्कि सभी धर्मों एवं जातियों में फैल चुकी है। ब्राह्मणवाद ने भारतीयों के संगठन, एकता एवं भाईचारे को इस तरह तार-तार कर खंडित दिया है, कि निकट भविष्य में उसके सुधार के आसार नहीं दिखाई देते।

ब्राह्मणवाद के कारण ही भारत का विभाजन हुआ और इसी के कारण यह देश लगभग एक हजार वर्ष तक गुलामी की जंजीरों में जकड़ा रहा। आश्चर्य की बात यह है, जो धर्म भाईचारे की स्थापना के लिए पैदा हुए थे, वे भारत की जमीन में

आकर ब्राह्मणवाद के शिकंजे में फंस कर रह गए। भगवान महावीर, संत कबीर और सिख धर्म के सभी गुरु ब्राह्मणवाद के विरुद्ध लड़ने के लिए पैदा हुए थे, लेकिन उनके शिष्य भी ब्राह्मणवाद में फंस कर भेदभाव, जातपांत और छुआछूत में फंस कर रह गए। यथार्थ मैं ब्राह्मणवाद ने भारत जैसे महान देश का सत्यानाश एवं बेड़ा गर्क करके रख दिया है।



वैदिक संस्कृति में ब्राह्मण की अवधारणा

विज्ञान और तर्कशास्त्र कार्य कारण के नियम का प्रतिपादन करते हैं। बिना कारण के कोई भी कार्य कभी सम्भव नहीं हो सकता। यह प्रकृति का नियम है कि इन दोनों का आपस में न टूटने वाला एवं न समाप्त होने वाला सम्बंध है। विश्व के सभी दार्शनिक एवं वैज्ञानिक इस नियम पर विश्वास करते हैं। अब प्रश्न उत्पन्न है कि जब 'ब्राह्मणवाद' कार्य है, तो इसका कारण एव जनक क्या है? इस प्रश्न का सत्य, निर्विवाद, शतप्रतिशत एवं निरपेक्ष उत्तर यह है कि ब्राह्मणवाद का एकमात्र कारण 'ब्राह्मण' वर्ण है, जो वैदिक वर्ण-व्यवस्था के प्रथम स्थान पर आता है और जिसे ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुआ बताया जाता है। वैदिक-वाङ्मय में 'ब्राह्मण' को उत्तम, आदर्श, महानतम, सर्वश्रेष्ठ, दर्शनीय एवं सर्वोच्च वर्ण माना गया है।

अब वैदिक संस्कृति में प्रदत्त वर्ण-व्यवस्था की उत्पत्ति पर विचार कर लिया जाए, जिस व्यवस्था में ब्राह्मण वर्ण प्रथम स्थल पर आता है। अधिकांश इतिहासकारों की यह मान्यता एवं अटूट विश्वास है कि भारत के आर्य किसी शीत प्रधान देश के रहने वाले थे, जिसके कारण उनका कद-काठी लम्बी, गौर वर्ण, नाक की हड्डी पतली एवं ऊंची तथा आंखें और केश भूरे रंग के थे। इसके विपरीत भारत जैसे गम देश में चिरकाल से निवास करने के कारण यहां के मूलनिवासियों का रंग श्याम, कद छोटा, नाक की हड्डी कुछ चौड़ी तथा आंखें और केश काले हुआ करते थे। इन दोनों में एक भेद और था कि आर्यों की खोपड़ी लम्बी और मूलनिवासियों की गोल होती थी। आर्य अपने को श्रेष्ठ कहते थे और यहां के मूलनिवासियों को अनार्य अर्थात निम्न व नीच। इसलिए सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय में ये दोनों जातियां आर्य एवं अनार्य नाम से जानी जाती हैं। आर्य हमेशा अनार्यों को हेय, नीचा एवं निम्नकोटी समझते थे।

प्राचीन काल में आर्यो ने स्वयं को श्रेष्ठ, महान एवं उत्तम और अनार्यों को नीच, हीन एवं निकृष्ट सिद्ध करने के लिए काल्पनिक, झूठी, आधारहीन एवं चण्डूखाने की पौराणिक कहानियां, स्मृतियां, पोथियां एवं दार्शनिक सिद्धांत गढ़े, जिनका सहारा लेकर आज तक अनार्यों एवं उनकी जातियों का शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, बलात्कार, अन्याय और हत्याएं करते रहे हैं। यथार्थ में आर्यों के द्वारा रचित ग्रंथों में अप्राकृतिक, अवैज्ञानिक, प्रज्ञाहीन, पागलपन की, बेवकूफियों से भरी, अनैतिक एवं वाहियाद बातें कही गई हैं। जिनकी प्रशंसा एवं डींग मारने में आज भी आर्य लोग नहीं थकते। यदि वैज्ञानिक ग्रंथों का मानवता के मापदण्ड पर मूल्यांकन किया जाए, तो यह निष्कर्ष प्राप्त होगा की वैदिक वाङ्मय के समस्त ग्रंथ या तो जला कर राख कर देने

चाहिएं अथवा उन्हें किसी कूड़ेदान में फैंक देना चाहिए, क्योंकि इन ग्रंथों ने भारत का बेड़ा-गर्क एवं सत्यानाश करने में बड़ी भारी भूमिका का निर्वाह किया है।

ब्राह्मणवाद पर प्रकाश डालने एवं चर्चा के पूर्व पहले यह देख लिया जाए कि 'ब्राह्मण' वर्ण की उत्पत्ति कैसे हुई है? उसके उपरान्त 'ब्राह्मणवाद' पर विस्तृत चर्चा करना सार्थक एवं उपयोगी बात होगी। क्योंकि 'ब्राह्मण' और 'ब्राह्मणवाद' में उच्चकोटी का सकारात्मक सह-सम्बंध (High Possitive Co-relation) दिखाई देता है। आर्यों के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के मण्डल 10, सूक्त 90, मंत्र 11 व 12 में पुरुष सूक्त आया है, जिसमें दिया गया है "प्रजापति ने मानव-समाज रूपी, जिस पुरुष का विधान किया है, उसकी कल्पना कितने प्रकार से हुई है? इस पुरुष का मुख क्या है? इसके दोनों बाहु कौन हैं? कौन इसकी दोनों जांघें हैं? कौन इसके दोनों पैर हैं? (मंत्र 11) इन कतिपय प्रश्नों के उत्तर में इसके आगे के मंत्र में दिया गया है, जो इस प्रकार है, इस पुरुष का मुंह ब्राह्मण है, बाहु क्षत्रिय हैं, जांघें वैश्य है और पैर शूद्र हैं, (मंत्र 12)।

ऋग्वेद की भांति यजुर्वेद के अध्याय 31, मंत्र 10 व 11 तथा अथर्ववेद कं. 19/6/6 में पुरुष सूक्त की कल्पना की गई है। इन वेदों में पुरुष सूक्त के मंत्र सब अंशों में मेल खाते हैं, लेकिन अथर्ववेद में 'उरू' शब्द के स्थान पर 'मध्य' शब्द आया है, जैसे 'मध्यं' तदस्य यद्वैश्यः' ऐसा संदर्भ मिलता है। लेकिन इनके अर्थ में कोई भेद एवं अंतर नहीं है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में प्रदत्त पुरुष सूक्त के आधार पर अन्य वैदिक ग्रंथों में चातुर्वर्ण्य की उत्पत्ति की नकल की गई है। मनु अपनी मनुस्मृति के (अध्याय 1, श्लोक 31) में कहता है, 'प्रजापति ने लोकों की वृद्धि के निमित्त मुख, बाहु, उरू और चरणों से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को उत्पन्न किया।' महाभारत के शान्तिपर्व में (श्लोक 1 व 2) लगभग इसी प्रकार की बात कही गई है, "हे भरत वंशियों में श्रेष्ठ युधिष्ठर! फिर महाभाग कृष्ण ने मुख से सौ ब्राह्मणों को, दोनों बाहुओं से सौ क्षत्रियों को, दोनों जंघाओं से सौ वैश्यों को तथा दोनों चरणों से सौ शूद्रों को उत्पन्न किया।"

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र भौतिक शरीरधारी मनुष्य होते हैं। उनको पैदा करने के लिए अभौतिक ब्रह्मा और ईश्वर के स्थान पर, किसी शरीरधारी स्त्री की कल्पना करनी पड़ेगी, उसी अवस्था में ब्राह्मण एवं क्षत्रिय आदि उत्पन्न हो सकते हैं। क्योंकि मनुष्य की उत्पत्ति किसी स्त्री से ही हो सकती है, यदि वेदों, मनुस्मृति और महाभारत की बात मान भी ली जाए, तो ब्रह्मा एवं श्रीकृष्ण के मुंह में, हाथों में, जांघों औ पैरों में योनियों का होना जरूरी है, जिनसे क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र उत्पन्न हो सकें।

यह प्रकृति का अकाट्य व अपरिवर्तनशील नियम है कि मनुष्य की उत्पत्ति प्रकृति के नियमों के अधीन होती है, लेकिन अंधविश्वासी, अज्ञानी पाखण्डी, महामूर्ख

एवं पागल ब्राह्मणों ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए पुरुष सूक्त के मंत्रों का आक्षरिक अर्थ करना आरंभ कर दिया, जिससे उनकी श्रेष्ठता, महानता और उच्चता बनी रहे और उनका लोहा क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र मानते रहें। यह कितनी हंसी और पागलपन की बात है कि ब्राह्मण कहते हैं कि वे ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुए हैं। जबकि प्राकृतिक नियम यह है कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी मां की जननेन्द्रिय से उत्पन्न होता है। एक बार अश्वलायन ब्राह्मण ने भगवान बुद्ध से कहा, "ब्राह्मण ही ब्रह्मा के औरस पुत्र हैं। उसके मुंह से पैदा हुए हैं। अतः ब्राह्मण ही उसके वास्तविक उत्तराधिकारी हैं।"[1] भगवान बुद्ध ने इसका वैज्ञानिक एवं सटीक उत्तर देते हुए कहा, "परन्तु अस्वलायन! ब्राह्मणों की स्त्रियां भी तो ऋतुमती, गर्भवती, बच्चा पैदा करती तथा दूध पिलाती हुई देखी जाती हैं। यों वे ब्राह्मण, ब्राह्मणी योनियों से उत्पन्न होते हुए भी कहते हैं कि ब्राह्मण ही श्रेष्ठ हैं, ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुए हैं और ब्रह्मा के वास्तविक उत्तराधिकारी हैं।"[2] भगवान बुद्ध के द्वारा बताई गई बात कोई गूढ़ एवं रहस्य वाली बात नहीं है, बल्कि यह सामान्य बुद्धि (कॉमन सैन्स) की बात है, जिसे बिना पढ़े कबीर एवं रैदास ने आसानी से समझकर यह कहा था कि यदि तुम ब्राह्मण हो, तो ब्राह्मणी की योनि को छोड़कर किसी दूसरे मार्ग से क्यों नहीं आए?

प्रबुद्ध पाठक इस प्राकृतिक नियम से भली-भांति अवगत हैं कि मनुष्य के पैदा होने की एक प्राकृतिक प्रक्रिया होती है। इस प्रक्रिया में पुरुष स्त्री से संभोग करता है, जिसके फलस्वरूष मनुष्य का वीर्य स्त्री के गर्भाशय में जाता है। वहां स्त्री के रज से मिलकर क्रिया-प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती है, जिसके कारण भ्रूण पैदा होता है। वही भ्रूण नौ माह के बाद स्त्री की योनि से बाहर आकर जन्म लेता है। बच्चे के जन्म लेने की यह प्राकृतिक प्रक्रिया है, जो सभी पशुओं पर भी लागू होती है।

मनुष्य के धड़ के अन्दर का भाग दो हिस्सों में बंटा हुआ है। ऊपर के भाग से वह खाना खाता है और पेय पदार्थ पीता है, जो पेट के अन्दर आमाशय में जाकर पहुंचते हैं। जहां विभिन्न ग्रन्थियों से रस निकलता है और उस खाने को पचाता है, जिसके परिणामस्वरूप रक्त, वीर्य और ऊर्जा आदि पैदा होते हैं, जिनसे शारीरिक क्रिया आगे बढ़ती है। शरीर में अंतड़ियों की व्यवस्था है, जो आमाशय से बचे हुए अनुपयोगी और व्यर्थ के पदार्थ को मल द्वार के द्वारा बाहर भेज देता है। यदि आमाशय के अन्दर व्यर्थ का अनुपयोगी, हानिकारक अथवा उसकी मात्रा से अधिक खाना-पीना खाद्य पदार्थ पहुंच जाता है, तो शरीर उसका वमन (=उल्टी) करके बाहर फैंक देता है। यह शरीर की प्राकृतिक प्रक्रिया है। इसके विपरीत अगर कोई यह कहे कि योनि में किए गए संभोग से पेट में पल रह बच्चा मुंह के रास्ते वमन (उल्टी) की तरह पैदा हो जाए

1. *मज्झिम निकाय, अस्सलायन सुत्त 43/2*

2. *वही।*

अथवा मुंह के माध्यम से खाई गई खीर एवं फल वीर्य का काम करें और वह आमाशय से होता हुआ योनि में पहुंच कर भ्रूण पैदा कर दे और नौ माह के बाद बच्चा पैदा हो जाए, यह बात असत्य, झूठ, मूर्खतापूर्ण कोरी कल्पना, पागलपन एवं चण्डूखाने की वाहयाद बात होगी।

परिनिर्वृत मा. राधेश्याम शर्मा मेरे घनिष्ठ मित्र थे। वह भारद्वाज ब्राह्मण थे और वह अपने ब्राह्मणत्व और ऋषि भारद्वाज के वंशज होने पर बड़ा गर्व अनुभव किया करते थे। मा. शर्मा अक्सर ब्राह्मणों की श्रेष्ठता बताने के लिए मुझसे कहा करते थे, "गौतम साहब! ब्राह्मण ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुए हैं।" जब मैं शर्मा जी की बात सुन-सुनकर परेशान हो गया, तब मैंने एक दिन पूछ ही लिया, "शर्मा जी! यह बताओ कि जब आप पैदा हुए होंगे तब तो आपको पता नहीं होगा कि आप कहां से पैदा हो रहे हैं, लेकिन अब यह बताओ कि आप के जो ये तीन पुत्र और दो पुत्रियां हैं, वह अपनी मां के किस भाग से पैदा हुए हैं?" फिर क्या था शर्मा जी की बोलती बंद। थोड़ी देर के बाद मैंने शर्मा जी से पूछा, "यार शर्मा जी! आज जब कोई अजूबे की घटना घटती है, तो तुरंत टेलीविजन, अखबारों और रेडियो पर आ जाती है। किसी भी व्यक्ति का मुंह से पैदा होना, चाहे वह ब्राह्मण ही क्यों न हो, यह अजूबे की बात है, आज तक मैंने न तो अखबारों में पढ़ा, न रेडियो से समाचार सुना और न टेलीविजन पर देखा कि कोई ब्राह्मण मुंह से पैदा हुआ है।" उसके बाद मैंने अंतिम प्रश्न किया, "शर्मा जी! आपकी रिश्तेदारी, भाईबंदी एवं सम्बंधी पूरी दिल्ली और उत्तर प्रदेश में फैले हुए हैं क्या उनके यहां से ऐसा कोई समाचार आया है कि किसी ब्राह्मण के घर में मुंह से बच्चा पैदा हुआ। इतनी बात के बाद शर्मा जी! अब आप बताइए कि आप मां के मुंह से पैदा हुए अथवा योनि-द्वार से।" मेरी बात का उत्तर देते हुए शर्मा जी ने कहा, "भाई साहब! आपने सच्ची बात कह कर मेरी आंखें खोल दीं। इसका मतलब यह है कि अब तक अहंकार के कारण हम लोग ब्राह्मणों का जन्म ब्रह्मा के मुंह से बताते आए हैं, सब मूर्खता एवं बेवकूफी की बातें हैं।" मैंने अंत में कहा, "ठीक समझा शर्मा जी! आप बड़े समझदार एवं बुद्धिमान व्यक्ति हैं, जो थोड़ी सी देर में ही मेरी बात समझ गए। यथार्थ में सत्य को सत्य और असत्य को असत्य समझना चाहिए। प्राकृतिक नियम हमेशा सत्य होते हैं, उनमें कोई शक एवं संशय नहीं करना चाहिए।" उस दिन के बाद मा. राधे श्याम शर्मा ने यह कहना बंद कर दिया कि ब्राह्मण ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुए हैं।

बुद्ध की दृष्टि में ब्राह्मण

कुछ लोग कहते हैं कि कर्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था का निर्माण हुआ था। प्राचीन काल में यह कुछ मामलों में संभव भी हो सकता है कि कुछ क्षत्रीय, वैश्य और इक्का-दुक्का शूद्र ब्राह्मण बन गए होंगे। लेकिन यह बात सैद्धान्तिक अधिक और व्यवहार में गाल बजाने तक अधिक सीमित रही है। व्यावहारिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह कर्म के आधार पर वर्ण एवं जाति का निर्धारण गलत सिद्ध हुआ। अगर एक ब्राह्मण के परिवार में चार पुत्र हुए हों। उनमें से योग्यता और बुद्धि के आधार पर चारों पुत्र ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र की श्रेणी में आते हों, तो उनका पिता इस बात को किसी भी अवस्था में स्वीकार नहीं करेगा कि उसका पुत्र शूद्र बनकर सेवा करे, बस्ती व गांव में झाड़ू लगाए और सभी के मल-मूत्र व कूड़े कर्कट को सिर पर ढोये। इससे तो वह मृत्यु का चयन करना उचित समझेगा, पर अपने चौथे बेटे को शूद्र, चमार, भंगी नहीं बनाएगा। इसी स्थिति के कारण ब्राह्मणों ने अपने चालाक, शातिर एवं धूर्त दिमाग से वर्णों एवं जातियों का आधार कर्म से बदल कर जन्म से कर दिया। यह व्यवस्था वैदिक युग में ही चालू हो गई थी। श्रमण युग के आते-आते वर्ण एवं जाति का निर्धारण कर्म के स्थान पर जन्म के आधार पर करने लगे थे।

श्रमणों ने जन्म के आधार पर जाति व्यवस्था के निर्धारण के विरुद्ध बहुत बड़ा एवं तगड़ा-फ्रंट खोल दिया था। श्रमणों ने निष्कर्ष प्राप्त किया कि जन्म से जाति का निर्धारण करने से शोषण, भेदभाव, जातिवाद, अत्याचार, अन्याय और अमानवता बढ़ती है। इसी परम्परा में आने वाले चौरासी सिद्ध भी तथाकथित नीची जातियों में से थे। श्रमण-परम्परा के बुद्ध पुरोधा थे और उसके बाद महावीर का नाम आता है। इन दोनों ही महामानवों ने अपने युग में वर्ण-व्यवस्था और जातिवाद का भयंकर विरोध किया था और उन्होंने इसकी चूलें हिला दीं। उन्होंने अपने संघों के द्वार सभी जातियों के लिए खोल दिए थे। भगवान् बुद्ध तो महावीर से सौ कदम आगे बढ़ गए और उन्होंने महिलाओं के लिए संघ के द्वार खोल दिए थे।

बुद्ध सम्पूर्ण मनुष्य जाति को एक समान मानते थे। वह मनुष्य में जन्म, कर्म, स्थान, धन एवं समाज में स्थान की दृष्टि से कोई भेद नहीं करते थे। बुद्ध ने वर्ण-व्यवस्था एवं जाति को न तो कर्म के आधार पर माना था और न जन्म के आधार पर। लेकिन आजकल कुछ आर्यसमाजी भ्रमात्मक बातें फैलाकर यह प्रचार करते हैं कि बुद्ध ने धम्मपद में ब्राह्मण की परिभाषा करके उसके अस्तित्व को स्वीकार किया है, इसलिए बुद्ध वर्ण-व्यवस्था को मानते थे। एक बार मेरे मित्र डॉ. अमरसिंह, जो

आर्यसमाज के कार्यकर्ता थे, ने इसी प्रकार का तर्क देकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि बुद्ध वर्ण-व्यवस्था को मानते थे। मैंने डॉ. अमरसिंह को समझाते हुए कहा, "डॉ. अमर सिंह! आपके द्वारा दिया गया तर्क, तर्क नहीं, बल्कि कुतर्क है। आप उंगली पकड़ कर पहुंचा पकड़ने की बात करते हैं। यथार्थ में भगवान् बुद्ध ने वर्ण-व्यवस्था और जाति को न तो कर्म के आधार पर माना है और न जन्म के आधार पर। बुद्ध ने जन्म से ब्राह्मण मानने वालों को उत्तर दिया है कि "न जन्म से कोई नीच होता है और न जन्म से कोई ब्राह्मण। कर्म से नीच होता है और कर्म से ब्राह्मण।" यहां पर जन्म की बात का खण्डन किया। कर्म से नीच का तात्पर्य होता कि जो व्यक्ति हत्या करता है, चोरी करता है, वह नीच होता है। यदि कोई जन्म से ब्राह्मण हिंसा करता है, चोरी करता है, व्यभिचार करता है, झूठ बोलता है और शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन करता है, वह नीच होता है, बुद्ध के अनुसार ब्राह्मण नहीं। यदि कोई शूद्र कुल में जन्म लेता है और वह हत्या नहीं करता, चोरी नहीं करता, व्यभिचार नहीं करता, झूठ नहीं बोलता और शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करता वह सच्चे मायने में ब्राह्मण होता है।

बुद्ध 'ब्राह्मण' पद का अर्थ उससे ग्रहण नहीं करते जो वैदिक ग्रंथों में दिया गया है। वह 'बुद्ध' और 'ब्राह्मण' को एक दूसरे का पर्याय समझते थे। यहां पर प्रबुद्ध पाठकों की सुविधा के लिए धम्मपद के ब्राह्मण वग्ग की कुछ गाथाओं का हिन्दी अनुवाद दिया जा रहा है, जिससे वह इसका गलत अर्थ नहीं लगा सकें। "जो ध्यानी, निर्मल, आसन बद्ध (स्थिर), कृत, आस्रवरहित है, जिसने उत्तमार्थ (निर्वाण को पा लिया है। उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं, (4)। "जिसने पाप को धोकर बहा दिया है, वह ब्राह्मण है। जो समता का आचरण करता है, वह श्रमण है। उसने अपने चित्त मलों को हटा दिया है, इसलिए मैं उसे प्रव्रजित (ब्राह्मण) कहता हूं–(6)। जिसके मन वचन, और कर्म से दुष्कृत (पाप) नहीं होते, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं।" (9)। "न जटा से, न गोत्र से, न जन्म से ब्राह्मण होता है, जिसमें सत्य और धर्म है, वह शुचि (पवित्र) और वही ब्राह्मण है। (11)।" "माता की योनि से उत्पन्न होने के कारण किसी को मैं ब्राह्मण नहीं कहता। वह तो भोग वादी है। वह तो संग्रही है, मैं ब्राह्मण से कहता हूं, जो अपरिग्रही और त्यागी है (14)।" "नद्धा (क्रोध), रस्सी (तृष्णा) पगहे (छः प्रकार की दृष्टियां और जावे (अनुशय) को काटकर तथा जूए (अविद्या) को फेंक जो बुद्ध हुआ, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं–(16)।" जो बिना दूषित मन किए गाली, बध और बन्धन को सहन करता है, क्षमा-बल ही, जिसके बल (सेना) का सेनापति है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं (17)" "जो क्रोध न करने वाला, व्रती, शीलवान, अनुत्सुक, संयमी और अन्तिम शरीर वाला है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं (18)"। "कमल के पत्ते पर जल और आरे की नौ पर सरसों की भांति जो भोगों में लिप्त नहीं होता, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं–(19)"। "जो इसी जन्म में अपने दुःख के विनाश को जान लेता है, जिसने

अपने बोझ को उतार फेंका है और जो आसक्ति रहित है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं—(20)।" "जो गंभीर प्रज्ञावाला, मेधावी, मार्ग-अमार्ग का ज्ञाता, जिसने उत्तम अर्थ (निर्वाण) को पाया है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं—(21)"। "चर-अचर (सभी) प्राणियों में प्रहार-विरत हो, जो न मरता है, न मारने की प्रेरणा देता है, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं—(23)।" "जो ऐसे आकर्षण, सार्थक तथा सत्य वचन को बोले, जिससे कुछ भी पीड़ा न हो, उसे मैं ब्राह्मण कहता हूं—(26)।" कहने का तात्पर्य यह है कि बुद्ध के अनुसार ब्राह्मण का अर्थ बुद्ध और बुद्ध का अर्थ ब्राह्मण होता है। इसलिए बुद्ध के ब्राह्मण का तात्पर्य वेदों में प्रदत्त ब्राह्मण नहीं है।

त्रिपिटक के प्रसिद्ध ग्रंथ सुत्तनिपात के वासेट्ठ सुत्त (3,9) में कर्म के आधार पर मनुष्य के व्यवहार को सफल बनाने के लिए संज्ञाएं प्रदान की जाती हैं, वर्ण एवं जातियां नहीं। इसी संदर्भ में बुद्ध वाशिष्ठ से कहते हैं, "मनुष्यों के शरीर में यह (भेदक-लिंग) नहीं मिलता। मनुष्यों में भेद (सिर्फ) संज्ञा में है। 'मनुष्यों में जो गोरक्षा से जीविका चलाता है, वाशिष्ठ! उसे कृषक जाने, ब्राह्मण नहीं।' 'मनुष्यों में जो किसी शिल्प से जीविका करता है, वाशिष्ठ! उसे शिल्पी जानो, ब्राह्मण नहीं।' 'मनुष्यों में जो व्यापार से जीविका चलाता है, वाशिष्ठ! उसे बनिया जानो ब्राह्मण नहीं।' 'मनुष्यों में जो पर-प्रेषण से जीविका करता है, वाशिष्ठ! उसे प्रेष्यक जानो, ब्राह्मण नहीं।' 'मनुष्यों में जो चोरी से जीता है, वाशिष्ठ उसे चोर जानो, ब्राह्मण नहीं। मनुष्यों में जो अस्त्र-शस्त्र से जीविका चलाता है, वशिष्ठ! उसे योधा जीविका जानो, ब्राह्मण नहीं।" "मनुष्यों में जो ग्राम, राष्ट्र का उपभोग करता है, वाशिष्ठ! उसको राजा जानो, ब्राह्मण नहीं।" "भगवान बुद्ध के इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने वर्ण-व्यवस्था और जातिवाद को न तो जन्म के आधार पर स्वीकार किया न ही कर्म के आधार पर। उनका कथन यह होता कि "मैं उसको ब्राह्मण कहता हूं, उसको क्षत्रिय कहता हूं, उसको वैश्य कहता हूं और उसको शूद्र कहता हूं।"

उपर्युक्त विवेचन से यह प्रमाणित होता है कि बुद्ध ने न तो जन्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था एवं जाति को मान्यता प्रदान की और न कर्म के आधार पर। इसलिए जो व्यक्ति यह आरोप लगाता है कि बुद्ध ने कर्म के आधार पर वर्ण-व्यवस्था जाति को स्वीकार किया है, यह ऐसा ही झूठ है, जैसा कि दिन के उजाले को काली रात कहा जाए अथवा ठंडे जल को तपता हुआ आग का गोला। इसलिए बुद्ध की दृष्टि में 'ब्राह्मण' वह है, जो संसार के सभी दुखों से निवृत्ति प्राप्त करके निर्वाण को प्राप्त कर चुका है, इसलिए बुद्ध के ब्राह्मण और वेदों में प्रदत्त वर्ण-व्यवस्था के ब्राह्मण में जमीन आसमान का अंतर है। यथार्थ में दोनों में दक्षिणी एवं उत्तरी ध्रुव का सम्बंध है। एक का आधार असत्य, झूठ है, तो बुद्ध के ब्राह्मण का आधार सत्य, शील आदि हैं।

ब्राह्मणवाद की परिभाषा एवं व्याख्या

ब्राह्मणवाद दर्शनशास्त्र के अध्यात्यवाद, आदर्शवाद, मनसवाद, आत्मवाद, भौतिकवाद एवं उपयोगितावाद की भांति कोई सिद्धांत अथवा वाद (ism) नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के मन (=चित्त) एवं मस्तिष्क में बैठी एक दूषित मानसिकता है। यथार्थ में मानसिक स्वास्थ्य की दृष्टि से ब्राह्मणवादी मानसिकता को स्वस्थ मानसिकता कदापि नहीं कहा जा सकता। ब्राह्मणवाद अनेक प्रकार के भ्रमों, विभ्रमों एवं मनोरोगों का परिणाम होता है। जब मनुष्य के मन में निम्न एवं उच्चपन की कुंठाओं का जन्म हो जाता और वे कुठाएं स्थायी होकर पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ती चली जाती हैं, तब उसे ब्राह्मणवाद कहते हैं।

ब्राह्मणवाद की मानसिकता की चपेट में आया हुआ ब्राह्मण, क्षत्रीय को नीचा समझता है, क्षत्रिय वैश्य को और वैश्य शूद्र को नीचा कहता है। इतना ही नहीं, बल्कि ब्राह्मणों में अनेक उपजातियां होती हैं। वे भी आपस में ऊंच-नीच की भावना रखते हैं और उनमें रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं होता। सरयूपारी ब्राह्मण चतुर्वेदी ब्राह्मण को नीचा समझता है और चतुर्वेदी सरयूपारी को। इसी प्रकार चमार भंगी को नीचा कहता है, तो भंगी कंजर को। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्राह्मणवाद प्रत्येक व्यक्ति और समाज में व्याप्त ऊंच-नीच की भावना है, जो आपस में भेदभाव, जातिवाद, छुआछूत, द्वेष भावना उत्पन्न करती है।

ब्राह्मणवादी मानसिकता के कारण व्यक्ति अपने आपको प्रकृति का सर्वोच्च रत्न, सबसे ऊंचा समझता है और वह इस कारण सदैव अपनी मूंछों पर ताव देकर रहता है और अगर मूंछें नहीं हैं, तो सीना तान कर टेड़ा-टेड़ा चलता है। वह अपने आप को तीस मार खां समझता है अपने से नीची जाति के आदमी को कीड़ा-मकोड़ा समझता है और उनसे छुआछूत भी करता है। उस अवस्था में रोटी-बेटी के सम्बंध का तो प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता।

तथाकथित नीची जातियों में ब्राह्मणवादी मानसिकता बड़ी भयंकर रूप से पायी जाती है। यद्यपि ये सभी जातियां शूद्र वर्ण में आती हैं, लेकिन इन जातियों में ब्राह्मणवाद खिसकते-खिसकते ऐसे फैल गया है, जिसको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। जाटव, चमार, गुलिया, रैदासी, रंगिया, जुलाहे एवं कुरील आदि उपजातियां चमार जाति के अन्तर्गत आती हैं लेकिन ये ब्राह्मणवाद के कारण ऐसी स्थिति में आ चुकी हैं कि उनमें भाईचारा नहीं पाया जाता, बल्कि वे आपस में भेदभाव और छूआछूत भी करते हैं। ऐसी स्थिति में रोटी-बेटी का तो प्रश्न ही नहीं होता।

इन तथाकथित नीची जातियों में ब्राह्मणवाद की मानसिकता के कारण ऐसी हीनता की भावना पैदा हो गई है कि अब वे अपनी जाति छिपाकर रहने लगे हैं। कुछ चमार अपने को वर्मा, कुछ यादव, कुछ चतुर्वेदी, कुछ द्विवेदी, कुछ त्रिवेदी, कुछ शर्मा, कुछ गुप्ता, कुछ अग्रवाल, कुछ सक्सैना, कुछ श्रीवास्तव, कुछ कुलश्रेष्ठ आदि कहने लगे हैं और उनके शादी-विवाह भी अन्य जातियों में होने लगे हैं। इस दृष्टि से ब्राह्मणवाद ऊंच-नीच, भेदभाव व छुआछूत की विस्तृत मानसिकता होती है, जो प्राकृतिक मनुष्य में अप्राकृतिक भेद पैदा करती है।



ब्राह्मणवाद की उत्पत्ति और उसके कारण

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, मनुस्मृति, महाभारत और गीता में जिस पुरुषसूक्त का प्रतिपादन और जिसके आधार पर वर्ण-व्यवस्था तथा उसमें भी ब्राह्मण का श्रेष्ठत्व, उत्तमता व महानता का प्रतिपादन किया गया है, वह ब्राह्मणवाद की उत्पत्ति का मुख्य कारण है। वैदिक युग में ब्राह्मणों को पढ़ने-लिखने, यज्ञ करने-कराने एवं दान देने और लेने का अधिकार प्राप्त था। उनके चतुर-चालाक और शातिर दिमाग ने वेदों के पुरुष सूक्त की रचना कर डाली, जिसके अन्तर्गत समाज में ब्राह्मणों को सर्वश्रेष्ठ, उच्चतम एवं महान स्थान प्रदान कर, सर्वोच्च वर्ण बना डाला। उनके बाद क्षत्रियों का, फिर वैश्यों का और अंत में शूद्रों का स्थान बना दिया। इस प्रकार प्राकृतिक समाज का अप्राकृतिक विभाजन करके ब्राह्मणों ने भेदभावपूर्ण ब्राह्मणवाद की नींव को और भी मजबूत कर दिया। ब्राह्मणों ने ब्राह्मणवाद का ऐसा विष बो दिया जो कभी समाप्त होने वाला नहीं है।

वर्ण-व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण एक वर्ण एवं जाति है, जो जातिवाचक संज्ञा है, लेकिन ब्राह्मणवाद एक भाववाचक संज्ञा है, जो प्रत्येक जाति और उसकी उपजातियों में पाई जाती है, जिससे एक जाति दूसरी जाति से घृणा करती है, भेदभाव करती है, ऊंच-नीच करती है और छुआछूत का व्यवहार करती है। आजकल तथाकथित ब्राह्मण को लाखों करोड़ों की संख्या में देखा जा सकता है। यहां पर तथाकथित शब्द का प्रयोग मैंने जानबूझ कर किया है, क्योंकि यदि प्रकृति की ओर से वर्ण एवं जातियां बनाई होतीं, तो उनके शरीर में भी सभी प्रकार का भेद किया जाता, जैसे गाय-भैंस में, वकरी-भेड़ में, कुत्ते-बिल्ली आदि में। लेकिन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि के शरीर में किसी भी प्रकार का भेद नहीं बनाया गया है। उदाहरण के लिए यदि ब्राह्मण श्रेष्ठ होता तो प्रकृति की ओर से चार आंख, दो नाक, चार कान, दो मुंह होते। क्षत्रिय के लड़ने के लिए चार हाथ एवं दो आंखें सिर के पीछे होतीं, वैश्य में चार जंघाएं और शूद्र के चार पैर होते, लेकिन ऐसा नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य जाति एक ही प्रकार की है। जो वर्ण और जातियां बनाई गई हैं, वे अप्राकृतिक एवं बनावटी हैं। आज जो लोग अपने को ब्राह्मण कहते है और जिन्हें हम शर्मा, दीक्षित, भारद्वाज, पाण्डे, कौशिक, तिवारी, वशिष्ठ आदि होने के कारण ब्राह्मण कहते हैं, उनमें अनुलोम-प्रतिलोम विवाहों के कारण करोड़ों वर्ण-संकर हैं, जो ब्राह्मण काले, ठिगने, नाक चौड़ी, काले केश वाले हैं, वे तो शुद्ध ब्राह्मण हो ही नहीं सकते। इस प्रकार आज जातिवाचक दृष्टि से लाखों-करोड़ों ब्राह्मणों को, वर्णसंकर, कहा जा सकता है। लेकिन ब्राह्मणवाद जो भाववाचक संज्ञा है, उसे देखा नहीं जा सकता। ब्राह्मणवाद एक

मानसिकता है, जो मनुष्य, मनुष्य में भेदभाव, ऊंच-नीच और छुआछूत की भावना पैदा करती है, जो भारत में सभी हिन्दुओं, सिखों, जैनों, ईसाइयों, मुसलमानों और पारसियों आदि में पाई जाती है। यह एक भयंकर बुराई है।

इस प्रकार वेदों में प्रदत्त पुरुषसूक्त को वर्ण-व्यवस्था और ब्राह्मण वर्ण का जन्मदाता माना जाता है, जिसके कारण ब्राह्मण ने समाज में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया और उससे ब्राह्मणवाद का जन्म हुआ। ब्राह्मणवाद का नतीजा यह निकला कि नीच से नीच, भ्रष्ट से भ्रष्ट, चरित्रहीन, व्यभिचारी, हत्यारे, बलात्कारी, जुआरी, शराबी ब्राह्मण भी अपने को सीना तानकर ब्राह्मण कह कर समाज में चलता है और सम्मान प्राप्त करता है। जबकि इसके विपरीत कैसा भी उच्चशिक्षा प्राप्त, चरित्रवान, ईमानदार, कर्मठ, परिश्रमी दलित हो, सम्मान की बात तो दूर रही, उसका भी शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार एवं अन्याय किया जाता है। यह सब ब्राह्मण और उससे उत्पन्न ब्राह्मणवाद की काली करतूतों का परिणाम है।

ब्राह्मणवाद की जन्मदाता मुख्य रूप से ब्राह्मण जाति है। लेकिन यह ऐसी बुराई एवं छूत की बीमारी है, जो धीरे-धीरे सभी वर्णों और जातियों में फैल चुकी है। अब तो स्थिति यह है कि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एवं उनकी हजारों उपजातियों में ब्राह्मणवाद ऐसे फैल गया है, जैसे सूरज के डूबने पर चारों ओर रात पसर जाती है। आज जातिवाद, भेदभाव, ऊंच-नीच की मानसिकता और छुआछूत सभी जातियों में पाई जाती है, जिसको सभी लोग जानते हैं और अनुभव करते हैं, लेकिन दूषित संस्कारों को जब तोड़ने की बात एवं समय आता है, तो ब्राह्मणवाद के कारण सब लोग उस दल-दल में फंस जाते हैं। आज अनेक चमार एवं भंगी जातियों के लोग हैं, जो अपनी जाति छिपाकर रहते हैं और कुछ चमार ब्राह्मण बन चुके हैं। अनेक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य ऐसे हैं जो ब्राह्मणवाद के विरुद्ध भाषण एवं तर्क तो भयंकर देते हैं, लेकिन व्यवहार में जब ब्राह्मणवाद को तोड़ने का जीवन में अवसर आता है, तो वे ब्राह्मणवाद की कीचड़ के दल-दल में फंस कर रह जाते हैं।

यथार्थ में मनु ने ब्राह्मणवाद को इतना सख्त, मजबूत और पुख्ता कर दिया, जिसको अब तोड़ना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है। ब्राह्मणवाद का जन्म तो वेदों के पुरुष सूक्त ने किया लेकिन इसको अमानवीय, पाशविक एवं हैवानियत का जामा मनु ने पहनाया है। मैं इस कथन को सिद्ध करने के लिए यहां मनुस्मृति से कुछ उदाहरण देना चाहूंगा, जो इस प्रकार हैं–

मनु ने "ब्राह्मण को सारे जगत का स्वामी कहा है"[1] आगे मनु कहता है, "ब्राह्मण को परमात्मा ने यज्ञादि द्वारा हव्य-कव्य पहुंचाने और समग्र सृष्टि की रक्षा के प्रयोजन से ज्ञानमय तय करके मानों अपने मुख से उत्पन्न किया है।[2] ब्राह्मण के श्रेष्ठत्व को

1. मनुस्मृति, 1/94 2. वही, 1/95

स्थापित करते हुए मनु कहता है, "स्थावर (वृक्ष) और जंगम (कृमि कीटादि) भूतों में चेष्टा समर्थ प्राणी श्रेष्ठ है—प्राणियों में बुद्धिजीवी (पशु आदि)। इन सब में मनुष्य श्रेष्ठ हैं। मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ कहे गए हैं।"[1]

आगे मनु कहता है, "जो भी कुछ इस संसार में है, उसका स्वामी ब्राह्मण है। वंशानुगत श्रेष्ठता के कारण ब्राह्मण इस सबका स्वामी है। दूसरे के दिए दान से यदि ब्राह्मण खाता है, पहनता है अथवा दान देता है, तो वह अपना ही है। अन्य लोग ब्राह्मण की कृपा से ही भोजनादि प्राप्त करते हैं।[2] चारों वर्णों की उत्पत्ति के बारे में मनु कहता है, "लोकों की विशिष्ट वृद्धि के लिए मुख, बाहु, उरू और पावों से क्रमशः ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को बनाया।"[3]

वर्णों के अनुसार नामकरण के बारे में मनु कहता है, "ब्राह्मण का नाम मंगलबोधक, क्षत्रिय का बलसूचक, वैश्य का धनयुक्त और शूद्र (मूर्ख) का निन्दाबोधक होना चाहिए। इनके नामों के साथ क्रमशः शर्मा (कल्याण), रक्षा, पुष्टि और प्रैष्य (दासता) वाचक होना चाहिए।"[4] ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व स्थापित करने के लिए मनु कहता है, "ब्राह्मण दस वर्ष का और राजा सौ वर्ष का हो, तो भी वे क्रमशः पिता-पुत्र माने जाते हैं। उनमें (दस वर्ष का) ब्राह्मण पिता के बराबर है।"[5]

मनु ने मृत शूद्र के बारे में भी भेदभाव करते हुए व्यवस्था दी है, "मृत शूद्र को नगर के दक्षिण द्वार से, मृत, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को क्रमशः पश्चिम, उत्तर व पूर्व दिशा के द्वार से ले जाए।"[6] मनु शूद्र के बारे में व्यवस्था देता हुआ कहता है, "वह राजा का न्यायधीश बने, शूद्र कभी नहीं। जिस राजा के राज्य में शूद्र धर्म का विवेचन-न्याय-निर्णय करता है, उसका राष्ट्र दल-दल में फंसी गाय के समान नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। जिस राज्य में शूद्र और नास्तिकों की भरमार हो, ब्राह्मण न हों, उसमें अकाल और रोग बढ़ जाते हैं और वह शीघ्र नष्ट हो जाता है।"[7]

दण्ड की व्यवस्था देते हुए मनु कहता है, "शूद्र यदि ब्राह्मणों को गाली देता है तो उसकी जीभ काट लेनी चाहिए। उसका जन्म तो निष्कृष्ट ही कहा जाता है। शूद्र यदि ब्राह्मणों की जाति के नाम से गाली दे, तो उसके मुंह में, आग में तपाई हुई दस अंगुल लम्बी कील ठोक दे। यदि शूद्र अहंकारपूर्वक ब्राह्मणों को उपदेश दे तो राजा उसके मुंह और कान में तपाया हुआ तेल भर दे।[8] आगे मनु कहता है, "शूद्र और चाण्डाल श्रेष्ठ द्विजाति पर अपने जिस अंग से चोट करे—शूद्र का वही अंग काट ले। जैसे कि हाथ से प्रहार करे, तो उसका हाथ काट ले, क्रोध में आकर यदि पांव से पीटे, तो उसका पांव काट लेना चाहिए। शूद्र यदि श्रेष्ठ कुलोत्पन्न के साथ एक आसन पर बैठना चाहे,

1. मनुस्मृति, 9/97
2. वही, 1/101-102
3. वही, 1/31
4. वही, 2/31-32
5. वही 2/135
6. वही, 5/92
7. वही 8/20-21-22
8. वही, 81 270-271-272

तो उसके कमर के भाग को दागकर देश से निकाल दे अथवा उसको चूतड़ों को ऐसे कटवा दे कि मरे नहीं। यदि घमण्ड से श्रेष्ठतर पर थूके, तो राजा उसके दोनों होठ कटवा दे। पेशाब करे तो मूत्रेन्द्रिय और पाद मारने पर गुदा कटवा दे।[1] बानगी के रूप में मनु के द्वारा दी गई शूद्रों के लिए अमानवीय एवं पैशाचिक व्यवस्थाएं काफी हैं।

जिस प्रकार रूस के महान् मनोवैज्ञानिक पैवलॉव ने अपने कुत्ते के व्यवहार को नियंत्रित कर दिया था। उसी प्रकार मनु ने ब्राह्मणों, क्षत्रियों और वैश्यों का अंध समर्थन करते हुए ब्राह्मणवाद को अत्याधिक व्यापक और प्रबल बना दिया जिसका प्रभाव आज भी देखा जा सकता है। भारत की स्वतंत्रता के साठ वर्ष के बाद आज भी ब्राह्मणवाद के कारण दलितों, शोषितों आदि निम्न जातियों पर शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार, जघन्य हत्याएं, कन्याओं पर पैशाचिक बलात्कार के बाद हत्याएं की जाती हैं। दलित महिलाओं को नंगा करके जुलूस निकाले जाते हैं। एक दलित महिला को सड़क पर नंगा करके उसकी योनि में लाठी ठूंस कर जोर से घुमा दिया गया और बाद में उस पर मिट्टी का तेल डालकर आग लगा दी गई। राजस्थान में हत्या के एक झूठे केस में फंसाने के लिए एक दलित युवक को उसकी मां के साथ जघन्य एवं पैशाचिक पाप करने के लिए बाध्य किया। बाद में उस युवक ने आत्महत्या कर ली। मुरैना में जेल के अन्दर जेलर ने एक दलित युवक से मुख मैथुन कराया। एक अन्य युवक को मानव-मल खाने के लिए बाध्य किया। आज भी भारत में दलित महिलाओं पर डायन का आरोप लगाकर नृशंस हत्याएं कर दी जाती हैं। इनका सबसे बड़ा कारण यह है कि विधायक, सांसद, मंत्री, पुलिस विभाग, न्यायालय में वकील और न्यायधीश सभी ब्राह्मणवाद के समर्थक हैं; फिर व्यवस्था को ठीक करे तो कौन करे?

उपरोक्त व्याख्या से निष्कर्ष प्राप्त होता है कि ब्राह्मणवाद और उसकी उत्पत्ति का एक मात्र कारण ब्राह्मण है। अब यह ब्राह्मणवाद भारत की प्रत्येक जाति में फैल कर इस महान देश का बेड़ागर्क एवं सत्यानाश करने पर तुला हुआ है। अगर इसका इलाज नहीं किया गया, तो भारत का सर्वनाश होना निश्चित है।

---

1. मनुस्मृति 8/279-280- 281-282

ब्राह्मणवाद को बढ़ावा देने वाले जातिसूचक शब्द

भारत में ब्राह्मणवाद को बढ़ावा देने वाले लाखों जाति सूचक शब्द प्रचलित हैं, जिन्हें अपने नाम के बाद लगाने के बाद लोग अपने को तीस मार खां समझने लगते हैं और साथ में यह भी समझते हैं कि उनके नाम के पीछे भरी हुई राइफल या एटम बम लगा हुआ है। इन जाति सूचक शब्दों में लगाने से सवर्णों में उच्चता की कुंठा उत्पन्न हो जाती है, जो आगे जाकर मनोरोग में बदल जाती है। यथार्थ में यह एक पागलपन है, जो मनु के कहने पर आरम्भ किया गया था। मनु के अनुसार ब्राह्मण का नाम सम्मान व आदर सूचक और उसके बाद में शर्मा लगाना चाहिए। क्षत्रिय का नाम शौर्य सूचक और उसके पीछे शौर्य प्रकट करने वाला शब्द जैसे सिंह रखना चाहिए। वैश्य का व्यवसाय सूचक और शूद्र का अपमान सूचक होना चाहिए, जिससे नाम के सुनते ही लोग अनुमान लगा लें कि यह व्यक्ति किस जाति का है।

ब्राह्मण अपने नाम के बाद शर्मा, दीक्षित, भारद्वाज, वशिष्ठ, मिश्रा, गौतम, तिवारी, चतुर्वेदी, त्रिवेदी, द्विवेदी, पराशर, कपिल जैसे जातिसूचक शब्द लगाते हैं, जिससे व्यक्ति नाम सुनकर के ही पता कर लेता है कि यह व्यक्ति ब्राह्मण जाति का है। क्षत्रिय अपने नाम के बाद अक्सर शौर्यवाचक शब्द लगाते हैं, जैसे सिंह, राजपूत, सिशोदिया आदि। वैश्य जाति के लोग व्यवसाय करते हैं, इसलिए उनके नाम व्यवसाय सूचक और उनके सोलह गोत्र होते हैं, जैसे-अग्रवाल, गुप्ता, गर्ग, मित्तल आदि से लोग इन्हीं गोत्रों को अपने नाम के बाद लगाते हैं। इनके नाम धन से सम्बंधित जैसे-दौलत राम, चांदी राम, छिदम्मी लाल, हजारीमल लखोमल आदि। तथाकथित नीची जातियों का नाम रखते समय ब्राह्मण इस बात का ध्यान रखता है कि इनका नाम अपमान सूचक होना चाहिए, जिसे सुनकर व्यक्ति स्वयं ही अनुमान लगा ले कि यह व्यक्ति किस जाति का है। चमार, भंगियों के नाम इस प्रकार होते हैं, जैसे—तोता, घूरे, छीतरिया, घसीटा, खचेरा, झरगधा, बद्धू, भगोना, काले, करकेंटा, आदि ये नाम अपमानजनक तो हैं ही, साथ ही साथ इनसे व्यक्ति की जाति का पता चल जाता है और परोक्ष रूप से उसे गाली भी दे दी जाती है।

शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने पर दलित समाज के लोग अपने नामों के बाद अपने

गोत्र लिखने लगे, जैसे—पिपल, निम, निमेश, नीलम, कदम, अरुण, पुष्प, जाटव आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि उनके पीछे जातिसूचक नाम लिखने से भेदभाव बढ़ता है, जिससे समाज में समरसता, एकता एवं संगठन को आघात लगता है। चाहे नाम के पीछे शर्मा लिखो अथवा वर्मा, जैन लिखो अथवा श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ लिखो एवं सक्सैना इन सभी से एकता व संगठन खंडित होता है। इस प्रकार जाति सूचक शब्द लिखना ब्राह्मणवाद का अंधा अनुकरण है, जो घातक एवं मानवता के माथे पर कलंक का टीका है।



ब्राह्मणों में भी ब्राह्मणवाद

ब्राह्मणों के ऋषि-मुनियों के शातिर दिमाग ने वेदों में पुरुषसूक्त को प्रदत्त कर वर्ण-व्यवस्था को जन्म दिया था और उस व्यवस्था के अन्तर्गत ब्राह्मणवर्ण को सर्वोच्च स्थान देकर ब्राह्मणवाद की भेदभावपूर्ण मानसिकता पैदा की थी। लेकिन ब्राह्मणों का पांसा उल्टा ही पड़ गया। जिस ब्राह्मणवाद के माध्यम से वे क्षत्रियों, वैश्यों और शूद्रों का शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार और अन्याय करना चाहते थे, वे इसी ब्राह्मणवाद की चपेट में आ गए और इसके चक्कर में फंस कर उनमें खुद ऊंच-नीच एवं भेदभाव की भावना पैदा हो गई, जिससे ब्राह्मण समाज संगठन के स्थान पर विघटित होता चला गया।

आज ब्राह्मण समाज में इतनी उपजातियां हैं कि उनमें आपस में रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं है। आज ब्राह्मणों में चतुर्वेदी, त्रिवेदी, द्विवेदी, शुक्ला, पाराशर, पाण्डे, मिश्रा, सरयूपारी, वशिष्ठ, भारद्वाज, कान्यकुब्ज, तिवारी, त्यागी आदि अनेक उपजाति है, जो बिना ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक प्रयास के एक दूसरे को नीचा एवं ऊंचा कहते हैं। किन्हीं-किन्हीं में तो रोटी-बेटी का सम्बंध भी नहीं है।

ब्राह्मणों के बारे में 'बामन कुत्ता हाथी, नहीं जाति के साथी' नामक लोकोक्ति प्रसिद्ध है और कन्नौजिए ब्राह्मणों के बारे में भी लोकोक्ति है कि 'आठ कन्नौजिए नौ चूल्हे।" इन दोनों लोकोक्तियों से यह प्रमाणित होता है कि ब्राह्मणों में भी ब्राह्मणवाद मौजूद है। मेरे एक मित्र मा. राधे श्याम शर्मा थे, वह अक्सर मुझसे कहा करते थे कि भारद्वाज ब्राह्मण सबसे ऊंचे ब्राह्मण होते हैं। हमारे विभाग में एक आई.ए.एस. अधिकारी शुक्ला ब्राह्मण थे, वह अपने को सबसे ऊंचा ब्राह्मण कहते थे, मिश्रा ब्राह्मण भी अपने को सबसे ऊंचा ब्राह्मण कहते हैं।

आजकल श्मशानघाट पर मुर्दों का संस्कार करने वाले व्यक्ति भी अपने आप को ब्राह्मण कहते हैं। अब तो बढ़ई भी अपने को ब्राह्मण कहने लगे हैं। अनेक जाटव, चमार, भंगी अपने को चतुर्वेदी, त्रिवेदी, द्विवेदी, भारद्वाज लिखने लगे हैं। एक बार माधोगढ़ के राम नामक राजा ने जिन अनेक जातियों के सवा लाख संख्यक लोगों को जनेऊ पहना कर अपने यज्ञ में ब्राह्मण के साथ भोजन करा दिया, वे ही सवा लाखे ब्राह्मण कहलाए। ये कन्नौजियों की एक शाखा है और इनका शरीर-सम्बंध कन्नौजियों के साथ होता है। अब ये लोग धन देकर सरयूपारीण के यहां सम्बंध करने लगे हैं।

एक चतुर्वेदी ब्राह्मण तिवारी ब्राह्मणों के बारे में कहने लगे कि कानपुर के तिवारी चावल के साथ बेंगन की सब्जी खाते हैं; इसलिए वे हमसे नीचे होते हैं, और हम ऊंचे। इस प्रकार की बेतुकी, अर्थहीन और अवैज्ञानिक सामाजिक मान्यताओं के कारण ब्राह्मणों में भी आपस में ब्राह्मणवाद बहुत फैला हुआ है, जिसके कारण उनमें अनेक ऐसी उपजातियां हैं, जिनके कारण उनमें रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं है। मैं तो इसे पागलपन के अलावा और कुछ नहीं कहना चाहूंगा।

ब्राह्मणवाद छूत की बीमारी

संसार में अनेक प्रकार की छूत की बीमारियां पाई जाती हैं, जिनमें से कुछ तो ठीक हो जाती हैं और कुछ लाइलाज होकर महामारी का रूप धारण कर लेती हैं। इनमें चेचक, हैजा, तपैदिक ऐसी छूत की बीमारियां हैं, जो कभी-कभी महामारी का रूप धारण कर लेती हैं, लेकिन ब्राह्मणवाद इनसे बढ़कर एड्स की तरह लाइलाज है, जो कभी ठीक न होने वाला रोग है। ब्राह्मणवाद एक ऐसी ही बीमारी है, जो प्रत्येक भारतीय के जीन्स में समा चुकी है। इसके इलाज के लिए जटिल आपरेशन की आवश्यकता है, जिससे ब्राह्मणवाद को जड़ से समाप्त करके सामाजिक व्यवस्था में अमूलचूल परिवर्तन किया जा सके।

ब्राह्मणवाद छूत की बीमारी इसलिए है कि इसके सम्पर्क में जो भी धर्म, समाज और व्यक्ति आया, उस पर यह बीमारी भयंकर रूप से सवार हो गई। भारत में कुछ धर्म ऐसे हैं, जिनका जन्म भारत में ही हुआ था और कुछ ऐसे हैं जो बाहर से आए थे। जो धर्म व पंथ वैदिक एवं सनातन धर्म की शाखाएं हैं, उनमें यह बीमारी परम्परागत एवं वंशगत चली आ रही हैं। लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि जिन धर्मों का जन्म भारत में नहीं हुआ, जैसे इस्लाम, ईसाई और पारसी धर्म, जब ये धर्म ब्राह्मणवादियों के सम्पर्क में आए, तो इन धर्मों के अनुयायी भी ब्राह्मणवाद की छूत की बीमारी से पीड़ित हो गए।

भारत में जैन धर्म के पैदा होने के अनेक कारणों में से एक कारण यह भी था कि यह वैदिक धर्म में व्याप्त ब्राह्मणवाद और उसके फलस्वरूप उत्पन्न बुराइयों के प्रतिक्रिया स्वरूप उत्पन्न हुआ था। भगवान महावीर ने ब्राह्मणवाद के विरुद्ध बड़ा संघर्ष किया था। उनके निर्वाण की प्राप्ति के कुछ ही वर्षों के बाद जैन धर्म के अनुयायियों ने ब्राह्मणवाद से समझौता कर लिया। इसलिए आज जो बातें एवं बुराइयां, जैसे छुआछूत, अंधविश्वास और पाखण्ड ब्राह्मणवाद में पाए जाते हैं, वे सभी जैन धर्म के अनुयायियों में देखे जा सकते हैं। इसी प्रकार कबीर पंथ, सिख धर्म, रैदास पंथ, ब्रह्माकुमारी एवं राधास्वामी आदि पंथों का जन्म भी ब्राह्मणवाद को समाप्त करके भेदभाव, जातिवाद, छुआछूत, पाखण्डों और अंधविश्वासों को समाप्त करने के लिए हुआ था, लेकिन ब्राह्मणवाद के सम्पर्क में आने से ये सभी बुराइयां कबीरपंथियों, सिक्खों, रैदासियों, ब्रह्मकुमारियों और राधास्वामियों में छूत की बीमारियों की तरह फैल गई, जो आज ला इलाज हो गई हैं।

भगवान बुद्ध ने ब्राह्मणवाद और उसके फलस्वरूप उत्पन्न सामाजिक बुराइयों के

साथ जीवन भर संघर्ष किया और उन्हें पूरी तरह सफलता भी मिली। आज बौद्ध धर्म सिरिलंका, म्यांमार, थाईलैंड, कम्बोडिया, वियतनाम, कोरिया, जापान, चीन, मंगोलिया आदि अनेक देशों में पाया जाता है, लेकिन बौद्ध धर्म के अनुशीलन के कारण वहां के बौद्धों में ब्राह्मणवाद लेशमात्र भी दिखाई नहीं देता। उन बौद्ध देशों में न जातियां हैं, न जातिवाद, न भेदभाव, न छुआछूत, न पाखण्ड और न अंधविश्वास आदि हैं। भारत में भी बौद्ध धर्म के अनुयायी पाए जाते हैं। ब्राह्मणवाद की छूत की बीमारी के कारण यहां के बौद्ध भी इससे बुरी तरह ग्रसित दिखाई देते हैं। बरुआ बौद्ध चमार, भंगी, और कंजर जाति से परिवर्तित बौद्ध से रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं रखते। इतना ही नहीं, बल्कि जो बौद्ध पहले ब्राह्मणवाद के कारण पीड़ित थे और जाटव, चमार, भंगी, खटीक, जुलाहे एवं कंजर आदि के थे, वे भी ब्राह्मणवाद के लबादे को छोड़ नहीं पाए हैं और उनमें आपस में रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं है।

इस्लाम, ईसाई और पारसी धर्मों का उद्‌गम बाहर के देशों में हुआ था। भारत में आने के पहले इन धर्मों में जातिगत भेदभाव एवं छुआछूत नहीं थी। लेकिन जब ये धर्म भारत में आए और यहां के निवासियों ने जब इन धर्मों को अपनाना शुरू कर लिया, तो ब्राह्मणवाद की छूत की बीमारी भी इनमें प्रवेश कर गई। आज ईसाइयों, मुसलमानों और पारसियों में भेदभाव, छुआछूत पाई जाती है, जिसके मैं कुछ उदाहरण देकर अपने इस कथन को प्रमाणित करना चाहूंगा।

बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर जब महाराजा बड़ौदा के साथ हुए करार के अनुसार बड़ौदा नौकरी करने गए, तो उन्हें किसी होटल, धर्मशाला एवं किराए पर मकान नहीं मिला। इसका मुख्य कारण यह था कि वह जाति के महार थे, जिसे अछूत जाति माना जाता है। आखिर बाबासाहेब ने अपनी जाति छिपा कर एक पारसी धर्मशाला में रहने का प्रबंध कर लिया। जब कुछ दिन के बाद वहां के पारसियों को पता चला तो वे छड़ी आदि लेकर आए और बाबासाहेब से जातिसूचक शब्दों के साथ गाली-गलोच किया और उनका बोरिया-बिस्तर धर्मशाला के बाहर फैंक दिया।

ईसाई होने पर भी व्यक्ति ब्राह्मणवाद की छूत की बीमारी से मुक्त नहीं हो पाता। आगरा जनपद में स्थित बैपृटिस्ट हाई स्कूल के ईसाई प्रधानाचार्य की ईसाई पत्नी अपने ईसाई चपरासी को चौके में घुसने नहीं देती थी। उसका मुख्य कारण यह था कि प्रधानाचार्य और उनकी पत्नी ईसाई धर्म ग्रहण करने के पूर्व ब्राह्मण थे और चपरासी भंगी था। मेरे मित्र मिस्टर थॉमस की पत्नी आज भी बड़े गर्व से कहती है कि उसके बाप-दादे चौहान क्षत्रिय थे। चौधरी प्रदीप कुमार का ईसाई ड्राइवर जब कभी मेरे पास आता था, तो वह भी बड़े गर्व से पूर्वजों को चौहान कहता था। आज अनेक ईसाई ऐसे हैं, जो अपने नाम के पीछे मिश्रा, शर्मा एवं शुक्ला लिखते हैं और इसमें वे बड़े गर्व का अनुभव करते हैं। आज भंगी ईसाइयों

की स्थिति उसी प्रकार है, जैसे हिन्दू धर्म में थी, आज वे भी वहां दलित ईसाई माने जाते हैं और उनके साथ अन्य ईसाई रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं रखते। दक्षिण भारत में दलित ईसाइयों के गिरजाघर अलग होते हैं मिस्टर मॉसेस माइकल ने मुझे बताया कि जब दो ईसाइयों में किसी भी प्रकार की कहा सुनी या झगड़ा हो जाता है जो वे आपस में **सातान साख** (सात पुश्तों) की पोल खोल कर रख देते हैं जब उनमें व्याप्त ब्राह्मणवाद का पता चलता है।

भारत में आने के पूर्व अरब देश में मुसलमानों में ब्राह्मणवादी भेदभाव एवं छुआछूत नहीं थी। लेकिन भारत में जब इस्लाम धर्म आया और सत्ता में रहा, तो यहां के लाखों सवर्ण अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए मुसलमान बन गए और दलित हिन्दुओं के अत्याचारों से बचने के लिए मुसलमान हो गए। लेकिन दुःख इस बात का रहा कि मुसलमान होने के बाद भी वे ब्राह्मणवाद को अपने साथ लेकर गए, जिसके कारण मुसलमानों में आज भी सैयद, शेख, मुगल, पठान, कुरैशी अपने आप को ब्राह्मणों की तरह ऊंचा समझते हैं और अंसारी, कुंजड़ा, तेली, नाई, भटियारे, तमोली आदि को नीचा मुसलमान कहते हैं। इनमें आपस में रोटी-वेटी का सम्वंध नहीं है और ऊंची जाति के मुसलमान नीची जाति के मुसलमानों से भेदभाव करते हैं।

एक मुल्ला जी मुझे ऐसे मिले जो अपने नाम के पीछे गौतम लिखते थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बतलाया कि उनके बाप-दादे मुसलमान बनने के पूर्व गौतम ब्राह्मण थे। मैंने उन्हें फटकारते हुए कहा, "जो धर्म भाई-चारे और समानता पर निर्भर करता है, वहां भी आप ब्राह्मणवाद की सड़ी-गली लाश पीठ पर लादे-लादे घूमकर दुर्गन्ध फैला रहे हैं। इसमें आपको शर्म आनी चाहिए।" मेरी बात सुनकर वह चुप रह गए। आज भी अनेक मुसलमान अपने को राव लिखते हैं और गर्व से कहते हैं कि उनके पूर्वज अहीर थे। इस प्रकार के लोग हरियाणा और दिल्ली में अधिक पाए जाते थे। संस्कृत के विद्वान डॉ. आर.डी. सप्रा ने बताया कि पाकिस्तान बनने के पूर्व उनके क्षेत्र में अनेक सवर्ण हिन्दू मुसलमानों की खूबसूरत लड़कियों से शादी करने के लिए इस्लाम कबूल कर लिया करते थे, लेकिन वे अपने मुसलमान नाम के बाद में अपनी हिन्दू जाति अथवा गोत्र को लिखने में गर्व अनुभव रहते थे।

कहने का तात्पर्य यह है कि ब्राह्मणवाद मुसलमानों में गया, तो वहां भी जातिभेद, छुआछूत, पाखण्ड फैलाकर इस्लाम का भी सत्यानाश कर दिया, जो धर्म मानवता पर निर्भर करता था। ब्राह्मणवाद की छूत की बीमारी से भारत का सम्पूर्ण मुसलमानों का समाज पीड़ित दिखाई देता है। शायर इकबाल ने इसीलिए लिखा था—

सितमते तौहीद कायम जिन नमाजों से हुई,
वे नमाजें हिन्द में आ नजर-ए-ब्राह्मण हुई

ब्राह्मणवाद भयानक मनोरोग (पागलपन) है

ब्राह्मणवाद छूत की बीमारी ही नहीं, बल्कि भयानक मनोरोग (पागलपन) है। जितने भी मनोरोग होते हैं, वे मानसिक विकृतियों के कारण हुआ करते है। सामान्यतः मरोरोगी उसे कहते हैं, जो गाली बकता रहता हो, नंगा घूमता हो, लोगों को पत्थर मारता हो, बिना किसी कारण हंसता हो, रोता हो और व्यर्थ की बातें बकता रहता हो। मनोविज्ञान की भाषा में जो व्यक्ति सामान्य नहीं है, वह मनोरोगी (पागल) होता है।

इसी प्रकार ब्राह्मणवाद से पीड़ित व्यक्ति भी मनोरोगी (पागल) होता है। भारत में प्रत्येक जाति का व्यक्ति हीन भावना (Inferiority Complex) और उच्च भावना (Superiority Complex) से पीड़ित होता है। उच्च वर्णों एवं जातियों के संदर्भ एवं तुलना में प्रत्येक नीच जाति के मनुष्य में हीनता की भावना और तथाकथित निम्न जातियों के संदर्भ एवं तुलना में ऊंची जाति के लोगों में उच्चता की भावना उनके चेतन एवं अचेतन मन में समाई रहती है। हजारों वर्षों से लोगों के मन में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आने के कारण ये भावनाएं कुंठाओं का रूप धारण कर चुकी हैं। इन कुंठाओं के कारण ही लोग एक दूसरे को छोटा एवं बड़ा समझते हैं। इस प्रकार ऊंच-नीच की मानसिक भावना ही एक प्रकार का मनोरोग होता है। यही मनोरोग अधिकांशतः भयानक रूप धारण करके पागलपन हो जाता है।

यथार्थ में ब्राह्मणवाद और पागलपन एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द हैं। ब्राह्मणवाद के कारण आदमी इतना पागल हो जाता है कि वह सत्य-असत्य, झूठ-सच, शुभ-अशुभ, मंगल-अमंगल, सही-गलत, कर्तव्य-अकर्तव्य, कुशल-अकुशल एवं अच्छे-बुरे में भेद करना भूल जाता है। यहां पर मैं अपनी बात के समर्थन में कुछ उदाहरण देना चाहूंगा। एक बार मैं शहर से दूर एक गांव में जा रहा था। नहर के किनारे एक बरगद का भारी घना पेड़ था और उसके नीचे एक झोपड़ी में एक गंवार ब्राह्मण पानी पिला रहा था। जब वह पानी पिलाता था, तो हरेक आदमी से उसकी जाति अवश्य पूछता था। उस पानी पिलाने वाले ने मेरे ठाट-बाट देखकर जाति पूछने की हिम्मत नहीं हुई। लेकिन मेरे पीछे आ रहे चार आदमियों से उनकी जाति पूछी, तो क्रमशः उनमें से एक ने अपनी जाति बोडम्, दूसरे ने फरमा, तीसरे ने हामड़ और चौथे ने पिंचिस बतायी। प्याऊ वाला यह सुनकर बड़ा खुश हुआ और उसने सीधे तांबे के सागर से पानी पिलाया। तांबे के सागर से वह ब्राह्मणों व ऊंची जाति वालों को पानी पिलाता था। मैं उन चारों आदमियों को व्यक्तिगत रूप से जानता था, वे आगरा जनपद के चक्कीपाट, नाला मन्टोला और औलियारोड के रहने वाले थे और वे चारों जाटव

(दलित) जाति के थे और जो उन्होंने अपनी जाति बताई थी, वह जाति नहीं थी, बल्कि जूते बनाने के समय प्रयोग आने वाले औजारों को अपनी जाति बता दिया। लेकिन वह पागल जनेऊधारी ब्राह्मण यह नहीं समझ सका वह बोड़म, फरमा, हामड व पिंचिश को जाति समझ बैठा। इसे ब्राह्मणवाद का पागलपन नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?

एक बार मेरे एक जानकार ने बताया कि उनका मित्र एक ब्राह्मण जाति की अध्यापिका को पटाकर लाया। जब वह उस ब्राह्मणी से शारीरिक सम्बंध की प्रक्रिया में था, तो वह नीचे से बोली, "आपकी जाति क्या है?" उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, "जरा थोड़ी देर और ठहर जा अभी बताता हूं कि मेरी जाति क्या है।" उस ब्राह्मण अध्यापिका के व्यवहार के कारण उसमें ब्राह्मणवाद का पागलपन साफ दिखाई देता है। एक समय मैं राजा बलवन्त सिंह कॉलेज में दर्शन विभाग में प्रवक्ता था, यह बात उस समय की है। उस कालेज की लेखा शाखा में एक ठाकुर जाति का व्यक्ति एकान्ट्स क्लर्क था, जिसका नाम शायद मा. एस.पी. सिंह था। उसकी एक आंख छोटी थी, तो लोग इस कारण उसे कांड़ा कहते थे। एक दिन मैं उस घड़े में गिलास से पानी पी रहा था, जिससे सभी प्रोफेसर पीया करते थे। एक दिन मा. एस.पी. सिंह ने मुझसे कहा, "आप यहां पानी नहीं पीया करें।" मैंने पूछा "क्यों?" वह इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सका, लेकिन मैंने पानी पीना जारी रखा। मा. सिंह के इस व्यवहार को ब्राह्मणवाद का पागलपन ही कहा जा सकता है।

यदि किसी पागलखाने में जाकर देखा जाए, तो पता चलेगा कि उनमें अधिकांश पागल ब्राह्मणवाद के कारण हुए हैं। हैल्यूसिनेसन, डिल्यूज़न, पैरानोइआ और उनकी सामाजिक एवं सामूहिक विकृतियां ब्राह्मणवाद के कारण ही उत्पन्न होती हैं। वस्तुनिष्ठ एवं यथार्थ सत्य यह है कि ब्राह्मणवाद स्वयं में एक बड़ा मनोरोग (पागलपन) है, जिसने पूरे भारत वर्ष को पागलखाना बना रखा है। आज इसके इलाज की अत्यन्त आवश्यकता है। अन्यथा यह पागलपन देश का सत्यानाश कर देगा।

आर्यसमाजियों में ब्राह्मणवाद

हिन्दुओं में आर्यसमाजी अपने को सबसे अधिक प्रगतिशील मानते हैं। आर्यसमाज का धर्म प्राचीन वैदिक धर्म का सुधरा हुआ रूप माना जाता है। कुछ लोग इसे हिन्दुओं के सनातन धर्म के विरुद्ध मानते हैं। उसका कारण यह है कि सनातनी अवतारवाद, मूर्तिपूजा एवं अनेक देवी-देवताओं के अस्तित्व पर अंधविश्वास एवं अंधश्रद्धा रखकर उनकी पूजा करते हैं, जबकि आर्य समाजी अवतारवाद, मूर्तिपूजा एवं देवी-देवताओं की पूजा नहीं करते। सनातनी और आर्यसमाजी दोनों ही वर्ण व्यवस्था, जातिभेद और छुआछूत पर विश्वास करते एवं मानते हैं। सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक तौर पर सनातनी वर्ण-व्यवस्था और जातिवाद को जन्म के आधार पर, तो आर्य-समाजी कर्म के आधार पर मानते हैं। लेकिन वस्तुनिष्ठ एवं कटुसत्य यह है कि व्यावहारिक आधार पर आर्यसमाजी भी वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद को जन्म के आधार पर मानते हैं और छुआछूत पर विश्वास करते हैं।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। आर्यसमाजी कहते हैं कि महर्षि दयानन्द वर्ण-व्यवस्था को कर्म के आधार पर मानते थे और वह छुआछूत पर विश्वास नहीं करते थे। लेकिन यह बात आधारहीन और गलत है। जबकि कि कटु सत्य यह है कि महर्षि दयानन्द पक्के ब्राह्मणवादी और छुआछूत पर विश्वास करने वाले व्यक्ति थे। मैं यहां जिज्ञासु पाठकों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती की महानकृति सत्यार्थ प्रकाश के दशम-समुल्लास से एक उदाहरण देकर यह प्रमाणित करना चाहूंगा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती पाखण्डी, अंधविश्वासी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति थे, जिन्होंने ब्राह्मणवाद के प्रचार-प्रसार के लिए तर्कहीन, अवैज्ञानिक एवं ऊट-पटांग बातें कही हैं।

मैं अपने कथन को प्रमाणित करने के लिए सत्यार्थ प्रकाश के दशमसमुल्लास से उदाहरण देना चाहूंगा, जिससे महर्षि दयानन्द की मानसिकता ज्ञात हो सकेगी। एक व्यक्ति ने महर्षि दयानन्द से प्रश्न किया, "कहो जी! मनुष्य मात्र के हाथ की, की हुई रसोई, उस अन्न को खाने में क्या दोष है? क्यों कि ब्राह्मण से लेके चाण्डाल पर्यन्त के शरीर हाड़, मांस, चमड़े के हैं और जैसा रुधिर ब्राह्मण के शरीर में है, ऐसा ही चाण्डाल आदि के, पुनः मनुष्य मात्र के हाथ की पकी हुई रसोई खाने में क्या दोष है?"

स्वामी दयानन्द उत्तर देते हैं, "दोष है, क्योंकि जिन उत्तम पदार्थों के खाने-पाने से ब्राह्मण और ब्राह्मणी के शरीर में दुर्गन्धादि दोषरहित रज-वीर्य उत्पन्न होता है, वैसा चाण्डाल और चाण्डालों के शरीर में नहीं। क्योंकि चाण्डाल का शरीर दुर्गन्ध के

परमाणुओं से भरा हुआ होता है, वैसा ब्राह्मणादि वर्णों का नहीं। इसलिए ब्राह्मण उत्तम वर्णों के हाथ का खाना और चाण्डालादि भंगी, चमार आदि का न खाना। भला जब कोई तुमसे पूछेगा कि चमड़े का शरीर माता, सास, बहन, कन्या, पुत्र-वधू, का है, वैसा ही अपनी स्त्री का तो क्या माता आदि स्त्रियों के साथ भी स्वस्त्री के समान बर्ताएंगे? तब तुमको संकुचित होकर चुप रहना पड़ेगा। जैसा उत्तम अन्न हाथ और मुख से खाया जाता है, वैसे दुर्गन्ध भी खाया जा सकता है, तो क्या मदादि भी खाओगे? क्या ऐसा भी कोई हो सकता है?"

महर्षि दयानन्द ने अपनी पुस्तक यज्ञ करने की विधि में बताया है कि यज्ञ करने के लिए चाण्डाल आदि नीच जातियों के घर से आग नहीं लानी चाहिए, क्योंकि चाण्डाल के घर से लाई गई आग अपवित्र होती है और ब्राह्मण आदि के घर से लाई गई अग्नि पवित्र होती है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के द्वारा ऊपर कही गई बातों पर तर्क शास्त्र एवं वैज्ञानिक आधार पर निम्नलिखित टिप्पणियां की जा सकती हैं—

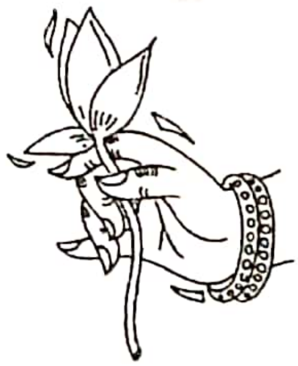
1. क्या महर्षि दयानन्द एक वैज्ञानिक व्यक्ति थे कि उन्होंने ब्राह्मण व ब्राह्मणी एवं चाण्डाल चमार व भंगी आदि के वीर्य व रज को अपने हाथ से निकालकर स्वयं विज्ञान की प्रयोगशाला में जाकर प्रयोग किया था, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने ऐसी अवैज्ञानिक बात कही है।
2. महर्षि दयानन्द के पास ऐसा कौन सा प्रमाण है, जिसके आधार पर वह कहते हैं कि सभी ब्राह्मण शुद्ध व पवित्र खाना खाते हैं और उसके विपरीत चाण्डाल, चमार, भंगी गंदा खाना खाते हैं।
3. महर्षि दयानन्द स्वयं एक ब्राह्मण थे, इसलिए वह ब्राह्मणवाद के मनोरोग से स्वयं ग्रसित थे। असल में एक ब्राह्मणवादी मानसिकता से पीड़ित व्यक्ति से और क्या अपेक्षा की जा सकती है?
4. महर्षि दयानन्द का उपरोक्त कथन प्रज्ञा, तर्क शास्त्र व इंसानियत पर नहीं टिक पाता, बल्कि ये विचार मूर्खता एवं ब्राह्मणवादी हैवानियत की उपज मालूम पड़ते हैं।
5. एक तो महर्षि दयानन्द कर्म के आधार पर वर्णों व जातियों का निर्धारण करते हैं, तो दूसरी ओर इस प्रकार की अवैज्ञानिक एवं वाहियाद बात कह कर अपनी विकृत बुद्धि का परिचय देते हैं। इनके विचारों में स्पष्ट रूप से विरोधाभास दिखाई देता है।
6. कोई भी प्रज्ञावान एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति महर्षि दयानन्द की इस प्रकार की अवैज्ञानिक एवं बेतुकी बात पर अवश्य ही हंसेगा।
7. अग्नि को पवित्र देवता माना जाता है, जो सबको जलाकर भस्म कर देती है और उसमें भी यह भेद करना कि यह चाण्डाल के घर की अग्नि है और यह ब्राह्मण के घर की। इस प्रकार की बात करना ब्राह्मणवादी मानसिकता की पहचान है

उपरोक्त तर्कों के अतिरिक्त कुछ बातें ऐसी हैं, जो प्रमाणित करती हैं कि आर्यसमाजी शत-प्रतिशत ब्राह्मणवादी होते है, जिनके मन में जातिगत भेदभाव एवं छुआछूत भरा हुआ होता है। क्या आर्यसमाजी नीचे लिखी बातों का उत्तर दे सकेंगे?

1. नौलक्खा, सदर बाजार, आगरा जनपद में एक वाल्मिकी परिवार रहता है। उस परिवार में सभी शिक्षित, आर्यसमाजी और सुबह-शाम यज्ञ करने वाले उच्च चरित्रवान, कुछ शिक्षक, कुछ अधिकारी, वे सत्यार्थ प्रकाश को प्रतिदिन पढ़ने वाले और गले में यज्ञोपवीत पहने हुए रहते हैं, सुबह-शाम हवन करने वाले, लेकिन आगरा के आर्यसमाज ने उन्हें कर्म से ब्राह्मण होने का प्रमाण पत्र नहीं दिया और उस परिवार के आज भी रोटी-बेटी के सम्बंध वाल्मिकियों में होते हैं। कहां गया आर्यसमाजियों का कर्म से ब्राह्मण वाला सिद्धांत? किसी भी आर्यसमाजी ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ने उनसे रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं किया, बस आर्यसमाजी कोरे गाल बजाते रहते हैं।
2. आगरा जनपद में एन.सी. वैदिक इन्टर कालेज आगरा कैन्ट में स्थित है। उसके प्रधानाचार्य मा. रोशन लाल गुप्ता थे। वह भी सौ सैकड़ा आर्यसमाजी थे। रविवार को नाममेर के आर्यसमाज मन्दिर में जाकर हवन करना, घर पर सुबह-शाम हवन करना, सुबह-शाम वेद व सत्यार्थ प्रकाश का अध्ययन करना, यह उनका नित्य दैनिक कर्म था। लेकिन जन्म के अनुसार वह वैश्य वर्ण के थे और कर्म के अनुसार ब्राह्मण थे। लेकिन आगरा जनपद के आर्यसमाजियों ने उन्हें कर्मानुसार ब्राह्मण घोषित नहीं किया था और मृत्युपर्यन्त वे गुप्ता ही रहे और उनके बच्चों के शादी विवाह भी बनियों में होते रहे। इससे स्पष्ट होता है कि ब्राह्मणवाद के पागलपन के कारण उन्हें ब्राह्मण नहीं बनाया जा सका।
3. दिल्ली में कोली जाति के मेरे मित्र हैं, जो कपड़े का व्यवसाय करते हैं। वह भी आर्यसमाजी हैं। सुबह-शाम वह हवन करते रहते हैं और अपनी जाति के लोगों में आर्यसमाज का झुन-झुना बजाया करते हैं। व्यवसाय से वह वैश्य हैं, लेकिन अफसोस इस बात का है कि अभी तक दिल्ली के आर्यसमाजियों ने उन्हें वैश्य नहीं घोषित किया है। उनके बच्चों के शादी-विवाह कोलियों में ही हुआ करते हैं।
4. आगरा जनपद में अनेक जाटव परिवार ऐसे हैं, जिसमें से कुछ आर्यसमाजी हैं। वे परिवार विभिन्न प्रकार के व्यवसाय जैसे अध्यापन का कार्य, होटल का व्यवसाय, गैस एजेन्सी व पैट्रोल पम्प का व्यवसाय आदि करते हैं लेकिन कर्म के अुनसार उन्हें ब्राह्मण एवं वैश्य घोषित नहीं किया गया है। इसका ,कमात्र कारण आर्यसमाजियों के सिर पर सवार ब्राह्मणवाद का भूत का होना है।

5. प्रत्येक आर्यसमाजी रुपये दो रुपये का जनेऊ लेकर अपने गले में डाल लेता है और कहता है कि कर्मानुसार उसकी जाति बदल गई। लेकिन असलियत में यह पागलपन होता है, जो ब्राह्मणवाद के कारण मनुष्य के ऊपर सवार हो जाता है। सवर्णों के अनुसार जिस जाति में जिस मनुष्य का जन्म होता है, वह उसी जाति का माना जाता है। ब्राह्मणवाद के अनुसार भंगी व चमार वेद पढ़ें या उपनिषद्, गीता पढ़ें, चाहे सत्यार्थ प्रकाश, हवन करें या यज्ञ, गले में यज्ञोपवीत पहने या मोटा रस्सा वह सनातनी और आर्यसमाजियों के लिए, भंगी-भंगी रहेगा, चमार-चमार।

इस मामले में आर्यसमाजी पाखण्डी, छुपे रुस्तम और धोखेबाज नम्बर एक होते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि समस्त आर्यसमाजी ब्राह्मणवादी होते हैं और वे सनातनी हिन्दुओं की तरह जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत पर विश्वास एवं व्यवहार करते हैं।



क्षत्रियों, वैश्यों और कायस्थों में ब्राह्मणवाद

आज के क्षत्रिय ब्राह्मणवाद के कारण मनोरोगी हो गए हैं। कोई अपने को सूर्यवंशी कहता है, तो कोई चन्द्रवंशी। लेकिन वे यह नहीं जानते कि परशुराम ने अपने परशु से इक्कीस बार पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर दिया था। जब बची हुई क्षत्राणि अपनी सन्तति चलाने के लिए वीर्य-दान हेतु ब्राह्मणों के पास गई थी, तब ब्राह्मणों ने सभी क्षत्राणियों के साथ संभोग किया, उसके बाद जो संतान हुई, जो वे आज क्षत्रिय हुए। कहने का मतलब यह है कि आज जो क्षत्रिय हैं, वे सभी दोगले, हरामी अर्थात् वर्णसंकर हैं। लेकिन ब्राह्मणवाद के कारण ऐसे मूर्ख एवं अज्ञानी हैं कि हमेशा अहंकार एवं घमंड में मूंछों पर ताव देते रहते हैं। चाहे क्षत्रिय सूर्यवंशी हों अथवा चन्द्रवंशी वे सभी वर्ण संकर हैं।

क्षत्रियों की उत्पत्ति के बारे में परशुराम वाली पौराणिक कथा केवल मात्र कल्पना एवं झूठ का पुलिन्दा है और महज क्षत्रियों को नीचा दिखाने के लिए ब्राह्मणों के द्वारा गढ़ी थी। इसका मुख्य कारण यह था कि वैदिक युग में ब्राह्मण वर्ण-व्यवस्था के क्रम संख्या एक और क्षत्रियों का स्थान नम्बर दो पर आता था। लेकिन श्रमण युग में भगवान महावीर एवं भगवान बुद्ध आदि श्रमणों ने यह क्रम बदल दिया, जिससे क्षत्रिय नम्बर एक और ब्राह्मण नम्बर दो पर कर दिए गए। इससे ब्राह्मणों का समाज में भारी अपमान, असम्मान और बेइज्जती का सामना करना पड़ा और वे बदले के लिए समय की ताक में रहे। जब दूसरी सदी से लेकर तीसरी सदी तक जैन एवं बौद्ध धर्मों की स्थिति हल्की पड़ गई और सत्ता पुष्यमित्र शुंग जैसे ब्राह्मण राजा के हाथ में चली गई, तब वाल्मिकी रामायण, स्मृतियां और पुराणों का लेखन आरम्भ हुआ। पुराणों के लेखन के समय परशुराम द्वारा क्षत्रियों का बीजवंश नष्ट करने एवं क्षत्राणियों द्वारा पुत्र उत्पत्ति के लिए ब्राह्मणों से आग्रह करने की बात जोड़ दी गई। जिसके फलस्वरूप क्षत्रियों को ब्राह्मणों ने अपना बदला ले लिया। मूर्खता के कारण आज भी क्षत्रिय ब्राह्मणों के गुलाम बने हुए हैं और अपने आपको ब्राह्मणों से नीचा और सभी जातियों से ऊंचा समझते हैं। यह सब ब्राह्मणवाद का परिणाम है।

आज वैश्य जाति ब्राह्मणवाद के शिकंजे में जकड़ी हुई है। चूंकि बनियों में व्यवसाय के कारण सम्पत्ति की कमी नहीं रहती। इस कारण उनमें अंधविश्वास, पाखण्ड और मूर्खता अधिक पाई जाती है। इस जाति में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का नितांत अभाव पाया जाता है। इस बात को मैं एक उदाहरण से सिद्ध करना चाहूंगा। मेरे पड़ोस में एक बनिया रहता है, जिसकी उपजाति/गोत्र बंसल है। उसने कुछ माह

पूर्व अपने घर तुलसी के पौधे की शादी की। शादी का दूल्हा एक ब्राह्मण लड़का था और सौ ब्राह्मण बराती थे। उस पौधे की शादी लड़की की तरह की थी। उस पौधे को दहेज में साड़ियां, सोने-चांदी के जेवर, दूल्हे को पांच कपड़े, सोने की अंगूठी, सोने की गले की चैन और पांच हजार रुपये नगद दिए थे। बारातियों को अच्छी दावत दी और पांच-पांच कपड़े तथा एक सौ एक रुपया दक्षिणा में दिया। इस बेवकूफी की चर्चा मैंने अपने एक अग्रवाल मित्र से की, तो उसने बताया कि ऐसा तो कार्य हरेक बनिये के यहां होता है। इसी प्रकार मैंने एक बनिये को पुराने सचिवालय के पास उसके परिवार के साथ नंगे पैर पैदल वैष्णों देवी की यात्रा पर जाते देखा। चौकी, रामायण का अखण्ड पाठ, वैष्णों देवी का जगराता अक्सर बनियों में देखा पाया जाता है। जितने भी ब्राह्मणवाद के कारण अंधविश्वास एवं पाखण्ड सम्भव हो सकते हैं, वे सब वैश्यों में पाए जाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समस्त बनिया जाति ब्राह्मणवाद के शिकंजे में जकड़ी हुई है।

कायस्थों में ब्राह्मणवाद बड़े जोरों से छाया हुआ है। कायस्थ वर्मा, श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ और सक्सैना उपजातियां में बंटे हुए हैं। श्रीवास्तव अपने को सबसे ऊंचा कायस्थ समझते हैं और सक्सैना को सबसे नीचा। एक दिन मेरे मित्र मा. विष्णुदत्त श्रीवास्तव ने मुझसे कहा, "पक्षियों में मैना और कायस्थों में सक्सैना बड़े खतरनाक होते हैं।" वर्मा, श्रीवास्तव, कुलश्रेष्ठ और सक्सैना आदि में रोटी-बेटी के सम्बंध नहीं हैं। कायस्थों के बारे में सुना जाता है कि जब उनके घर कोई बच्चा जन्म लेना है, तब उसके मुंह में शराब की एक बूंद डाली जाती है। अक्सर जितने भी कायस्थ होते हैं, उनके यहां मीट, मुर्गा व शराब खूब पी जाती है। खाने-पीने के मामले में सभी कायस्थ स्वतंत्र होते हैं।

जहां तक भेदभाव एवं ऊंच-नीच की बात है, कायस्थ दलित जातियों से पूरा भेदभाव, ऊंच-नीच की भावना और छुआछूत करते हैं। इस मामले में सम्पूर्ण कायस्थ जाति ब्राह्मणवाद की गुलाम नम्बर एक है।



जैनियों में ब्राह्मणवाद

श्रमण-संस्कृति के विकास में भगवान महावीर का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। यथार्थ में श्रमण-संस्कृति का उदय एवं विकास वैदिक-संस्कृति के प्रतिक्रिया स्वरूप हुआ था। भगवान महावीर इस संस्कृति की महत्वपूर्ण कड़ी थे। जैन धर्म में चौबीस तीर्थकारों का उल्लेख मिलता है, जिसमें पहले तीर्थकर ऋषभदेव और आखरी तीर्थंकर महावीर स्वामी को माना जाता है। इन दोनों के बीच में बाइस तीर्थंकर और आते हैं। जैन धर्म में मान्यता है कि इस धर्म की स्थापना तीर्थंकर ऋषभदेव ने की थी। यहां एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि तीर्थंकर धर्मनाथ, अरहनाथ एवं कुन्थुनाथ का जन्म कुरुवंश में, मुनि सुव्रतनाथ का हरिवंश और शेष तीर्थंकरों का जन्म इक्ष्वांकुवंश में हुआ था।

सभी तीर्थंकरों का जन्म क्षत्रिय कुल में माना जाता है। वैदिक संस्कृति में ब्राह्मणों को पहला, क्षत्रियों को दूसरा, वैश्यों को तीसरा और शूद्रों को चौथा स्थान प्राप्त था। ब्राह्मण यज्ञों में जानवरों की हत्या किया करते थे। वर्ण-व्यवस्था में शूद्रों को समानता, स्वतंत्रता और न्याय प्राप्त नहीं था। ब्राह्मणों ने समाज में कर्मकाण्ड के नाम पर अंधविश्वास, पाखण्ड व अत्याचार मचा रखा था। हिंसा, चोरी, व्यभिचार, झूठ और नशाखोरी को ब्राह्मणों ने वैदिक धर्म का आधार बना रखा था। श्रमणों को वह व्यवस्था पसंद नहीं थी। इसलिए श्रमणों के द्वारा वर्ण-व्यवस्था में क्षत्रियों को पहला स्थान दिया गया। जैन धर्म में ब्राह्मणों को नीचा स्थान दिया जाता था। एक ब्राह्मणी ने एक तीर्थंकर को जन्म देने के लिए गर्भधारण किया, जब तीर्थंकर को भ्रूण अवस्था में पता चला कि यह स्त्री जो गर्भ धारण किए हुए है, वह तो ब्राह्मणी है, तो उन्हें अपनी गलती का बोध हुआ और वे उस ब्राह्मणी के गर्भ से स्थानान्तरित होकर क्षत्राणि के गर्भ में प्रवेश कर गए। यह बात अवैज्ञानिक अवश्य है, लेकिन इसका तात्पर्य यह है कि प्राचीन काल में जैन धर्म में ब्राह्मणों से अधिक घृणा की जाती थी। उसका मुख्य कारण ब्राह्मणों के द्वारा अन्य वर्णों के प्रति शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार एवं अन्यायपूर्ण पाशविक व्यवहार करना और यज्ञों में पशुओं की बलि देना था।

श्रमणों में जातिभेद नहीं था। वे मनुष्य में किसी भी आधार पर भेदभाव एवं जातिवाद नहीं मानते थे। उनके लिए सभी समान थे। भगवान महावीर की समानता की भावना महान् थी। एक ओर उनके शिष्यों में मगध का राजा श्रेणिक, कूणिक, वैशाली का राजा चेटक (महावीर के मामा), अवंती के राजा चण्डप्रद्योत जैसे अनेक

राजा थे, तो दूसरी और हरिकेशी एवं मेतार्य जैसे अतिशूद्र भी साधुपद प्राप्त कर चुके थे। कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान महावीर के शिष्यों में अनेक शूद्र, चाण्डाल जैसे अछूत संघ में ऊंचा स्थान प्राप्त कर चुके थे। उस जमाने में जैन धर्म व ब्राह्मणवाद में काफी अन्तर था। उस युग में जैन समाज में समानता, भाईचारा और इंसानियत का बोलबाला था। जैन लोग पशु हिंसा, चोरी व्याभिचार, झूठ और नशाखोरी से दूर थे।

आज जैन समाज भगवान महावीर के द्वारा प्रतिपादित समानता, भाईचारे जैसे मानवीय सिद्धान्तों की होली जला रहा है। भगवान् महावीर ने जिस ब्राह्मणवाद से दूर रहने के लिए उपदेश दिया था, आज वही जैन समाज ब्राह्मणवाद के शिकंजे में फंसा हुआ है और आज जो बुराइयां ब्राह्मणों में पाई जाती हैं, उन सभी बुराइयों को जैनियों में देखा जा सकता है। जैन समाज में जातिवाद, भेदभाव, ऊंच-नीच और छुआछूत का जोरदार प्रचलन है। इसका मुख्य कारण यह है कि कालान्तर के बाद जैनियों ने ब्राह्मणवादियों से समझौता कर लिया है, जिसके परिणामस्वरूप जो बुराइयां हिन्दुओं में पाई जाती हैं, आज वे सभी बुराइयां जैन समाज में मिलती हैं।

मैं इस बात को कुछ उदाहरण देकर सिद्ध करना चाहूंगा। एक बार, लगभग पांच दशक पूर्व जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा के विश्व प्रसिद्ध संन्यासी, मुनि सुशील कुमार जी आगरा जनपद में गए हुए थे। आगरा के जैन समाज ने आगरा कालेज, आगरा के गंगाधर शास्त्री भवन में उनका प्रवचन रखा था। उन्होंने बहुत ही अच्छा प्रवचन दिया। अंत में उन्होंने प्रश्न कर्त्ताओं को प्रश्नों के लिए आमंत्रित किया। मैंने मुनि सुशील कुमार जी से अहिंसा सम्बंधी एक प्रश्न पूछा। लेकिन उन्होंने मेरे प्रश्न के उत्तर में कहा, "आपका प्रश्न बहुत जटिल है। कल आप लोहा मण्डी के जैन मंदिर में आइए, तभी इस पर विस्तृत चर्चा की जाएगी।"

दूसरे दिन मैं अपनी साइकिल पर लोहामण्डी के जैन मन्दिर में जा पहुंचा। मंदिर में दरवाजे पर एक वृद्धा प्याऊ पर पानी मिला रही थी। मैंने साइकिल में ताला लगाकर जैसे ही मन्दिर में प्रवेश करना चाहा, तो उस वृद्धा ने मुझे रोक दिया और उससे नीचे लिखा हुआ वार्तालाप हुआ।

वृद्धा "कहां जाते हो?"

मैंने उत्तर दिया, "अन्दर मन्दिर में जाता हूं।"

वृद्धा "कौन जाति हो?"

मैंने उत्तर दिया, "क्या जैन धर्म में भी जातिवाद और छूआछूत होती है?"

वृद्धा "क्यों नहीं होती। हम भी जातिवाद और छुआछूत मानते हैं।"

मुनि सुशील कुमार जी मन्दिर के अन्दर बरामदे में टहल रहे थे। उन्होंने मुझे उस वृद्धा से उलझते एवं भिड़ते हुए देखा। उन्होंने एक आदमी भेजा और उसने आकर कहा, "भाई साहब! आपको मुनि जी बुला रहे हैं।" मैं उनके साथ चल दिया और मुनि

जी के पास जाकर मैंने उनका अभिवादन किया और हम लोग दोनों अपने-अपने स्थान पर बैठ गए। मैं वृद्धा के आचरण से बड़ा दुःखी और खिन्न था। मैं गया तो स्वामी जी के पास अहिंसा विषय पर चर्चा करने के लिए था, लेकिन विषय दूसरा ही छिड़ गया।

मैंने मुनि सुशील कुमार जी से पूछा, "मुनि जी! भगवान महावीर ने तो वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत का डटकर विरोध किया था, लेकिन आज के जैन समाज में ये बुराइयां एवं परिग्रह जोरों से पाया जाता है। इससे तो जैन समाज रसातल में चला जाएगा और इस समाज का भयंकर नैतिक पतन हो जाएगा। जैन समाज तो आज ब्राह्मणवाद की सड़ी-गली दुर्गन्धपूर्ण लाश को अपनी पीठ पर ढ़ो रहा है।"

मुनि सुशील कुमार जी ने उत्तर दिया, "मैं मानता हूं कि आज जैन समाज भगवान महावीर के द्वारा बताए हुए मार्ग पर नहीं चल रहा। इस समाज में वे सभी बुराइयां आ गई हैं, जो ब्राह्मणवाद में हैं। बड़े ही दुःख की बात है कि ये लोग जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत के चक्कर में फंसे हुए हैं, परिग्रह करते हैं आदि और इनमें अनेक बुराइयां आ गई हैं।" मैंने मुनि जी से निवेदन किया, "मुनि! मैं चाहता हूं कि जैन धर्म मुनियों की एक फौज तैयार करे। उसमें मैं भी सहायता देने के लिए तैयार हूं, फिर क्यों नहीं इस बुराई से लड़ा जाए।" मैंने मुनि सुशील कुमार जी से अनेक विषयों पर बातचीत की, उसके बाद मैं वहां से चला आया।

एक बार दिल्ली के सदर बाजार में बारह टोंटी के चौराहे पर एक धर्मशाला में एक जैन लड़के की शादी के टीके में जाने का अवसर मिला। मैने वहां देखा कि एक पंडित जी हवन कर रहे थे और मंत्र का उच्चारण करने के बाद जलती हुई अग्नि में कुछ सामग्री डालकर स्वाहा कर देते थे। इसे देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। जब पंडित जी का कार्यक्रम समाप्त हुआ और खाना आरम्भ हुआ, तो खाना खाते समय पंडित जी को एक कौने में ले जाकर मैंने पूछा, "पंडित जी! भगवान महावीर ने तो हवन करने और आहुति डालने के लिए मना किया है, फिर आप यह क्या कर रहे थे?" पंडित जी ने धीरे से कहा, "साहब! आप तो विद्वान हैं। ये सभी मूर्ख हैं, चूंकि ये हिन्दुओं के शादी-विवाह में इस प्रकार के आडम्बर देखते रहते हैं, इसलिए इनकी जेब ढ़ीली करने और अपने बच्चों का पेट पालने के लिए हमें भी तो कुछ न कुछ करना पड़ता है। लेकिन ये बात आप किसी से कहिए मत। यह हमारे पेट की रोटी का सवाल है।" मैं उस पण्डित की ईमानदारी की बात सुनकर चुप रह गया।

एक बार मैं माउन्ट आबू, राजस्थान में दिलबाड़ा के जैन मन्दिरों को देखने गया। वहां पर भगवान महावीर की एक भव्य दिगम्बर मूर्ति को देखा। उस पर एक पंडे ने लाल कपड़ा ओढ़ा रखा था। मैंने पुजारी से पूछा, "भगवान महावीर की

दिगम्बर मूर्तियां होती हैं फिर आपने जैन धर्म के विरुद्ध यह लाल कपड़ा क्यों पहिना रखा है?" इस प्रश्न का वह कोई उत्तर नहीं दे सका। फिर मैंने उससे प्रश्न किया, "आपकी जाति क्या है?" उसने उत्तर दिया, "ब्राह्मण।" इतना सुनकर मैं वहां से चला आया।

एक दिन मैं अग्गोपासक मधुकर पिपलायन जी से इस विषय पर चर्चा कर रहा था, तो उन्होंने बताया कि ब्राह्मणों और जैनियों के अन्दर हुए एक आन्तरिक समझौते की वजह से जैनियों के सभी मन्दिरों में पूजापाठ करने के लिए ब्राह्मण पुजारी रखे जाते हैं। उसके बाद मैं समझ गया कि जैन धर्म भी आज ब्राह्मणवाद की गिरफ्त में आ गया है, उसके पीछे कारण क्या है? इस कारण से आज जैन समाज में वे सभी बुराइयां, पाखण्ड, पाप एवं बेवकूफी की बातें पाई जाती हैं, जो ब्राह्मणवादियों में होती हैं।



सिखों में ब्राह्मणवाद

हिन्दू धर्म के अनुयाइयों में फैले हुए जातिवाद, छुआछूत और भेदभाव के कारण शूद्र और अतिशूद्र वर्ग में आने वाली तथाकथित नीची जातियों के लोगों का शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार और अन्याय बड़ी जोर से होने लगा था। सवर्ण इनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार करते थे, जिससे इनका जीवन नरक के समान हो गया। मध्ययुग में इन दलितों और शोषितों को ब्राह्मणवादी अत्याचारों से बचाने के लिए अनेक संतों एवं समाज सुधारकों का जन्म हुआ। इन संतों में गुरु नानक भी एक महान संत थे, जो अत्यन्त ही सम्वेदनशील थे। गुरु नानक देव की परम्परा में नौ और संतों का जन्म हुआ था, जिसमें गुरु मा. गोविन्द सिंह जी दसवें गुरु थे। उनके युग में फैले हुए अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं अन्याय को समाप्त कर मानवता की रक्षा के लिए उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया और अंत में शहीद हो गए।

सिख धर्म के दसवें गुरु मा. गोविन्द सिंह जी ने सिख धर्म की नींव रखी और उन्होंने मानवता की रक्षा के लिए अपने लड़ाकू शिष्यों की एक फौज तैयार की। इनके शिष्यों में लगभग सभी जातियों के लोग थे। सिख धर्म के अनुसार सभी मनुष्य बराबर होते हैं। ईश्वर एक है और सभी आदमी ईश्वर के बेटे हैं, इस लिहाज से सभी आपस में भाई-भाई हैं। उनमें न कोई ऊंचा है और न नीचा। इसलिए मनुष्य को आपस में भेदभाव एवं छुआछूत का व्यवहार नहीं करना चाहिए। सिख धर्म के अनुसार हिन्दू और मुसलमान सब बराबर होते हैं।

लेकिन दुःख की बात यह है कि कुछ समय के बाद ब्राह्मणवाद सिख धर्म में घुसपैठ कर गया और ब्राह्मणवादी मानसिकता के लोग सिख धर्म को हाई जैक करके ले भागे। जिससे सिख धर्म में भी जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत प्रवेश कर गई। इस कारण सिख धर्म की एकता को ब्राह्मणवादी मानसिकता ने भ्रष्ट कर दिया। जिसका नतीजा यह हुआ कि सिखों में भी ऊंची-नीच, जातिवाद व भेदभाव की भावना पैदा हो गई और आपस में ये लोग नीची जाति के सिखों से छुआछूत करने लगे। इस कारण आज सभी सिखों में आपस में रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं है।

सिख धर्म में जो जट्ट सिख हैं, वे अपने आपको हिन्दुओं में ब्राह्मणों की तरह सबसे ऊंची जाति का समझते हैं। जो सबसे नीची जाति के सिख हैं, वे मजहबी होते हैं, वे वाल्मिकियों में से सिख बनकर आते हैं। उनसे ऊंचे, जो चमार जाति से सिख बनते हैं, उन्हें रामदासिया सिख कहते हैं। नीची जाति के

सिखों में कोसी, बेरकूट जाति के सिख भी होते हैं। सिखों के दिल और दिमाग में ब्राह्मणवाद ऐसे बैठ गया है, जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। एक दिन हमारी पड़ौसिन महिला ने मुझसे कहा, "पुत्तर! हम सिखों में सबसे ऊंची जाति के हैं। हमारी जाति तो बेदी है, जो हिन्दुओं में ब्राह्मणों के बराबर होती है।" मैं यह सुनकर आश्चर्यचकित रह गया कि जो धर्म समानता के लिए बना था, आज वहां ऊंच-नीच की बात हो रही है।

सिखों में एक वर्ग अफगानिस्तान से आए सिखों का है; जिनके गुरुद्वारे अलग होते हैं और उनकी शादियां भी आपस में ही होती रहती हैं। सामान्यतः सिखों में जाति तोड़कर रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं होता। ये लोग शादियां अपनी जाति के दायरे में ही करते हैं। जट्ट सिख जट्ट के यहां, सैनी सिख सैनी के यहां, तिरखान सिख तिरखान के यहां, रामदासिया सिख राम दासिया के यहां और मजहबी सिख मजहबी सिख के यहां ही शादी-विवाह करेगा। सिखों में जातिवादी बंधन बड़े कठोर हैं। अब प्रश्न पैदा होता है कि सिख धर्म के दसों गुरुओं ने आपस में भाईचारे की बात कही और भेदभाव व छुआछूत का खण्डन किया, तो फिर सिखों में जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत की मानसिकता कहां से आ गई?

यह प्रश्न कोई कठिन नहीं, बल्कि बड़ा ही आसान है कि जो सिख बने थे, वे पहले हिन्दू धर्म की वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत के आवश्यक अंग थे। सिख धर्म अपनाने के बाद वे अपने पूर्व धर्म के संस्कारों को भुला नहीं पाए और उन्हें वे अपने साथ ले आए। इस कारण उनमें जातिवाद एवं ब्राह्मणवाद की भावना ज्यों की त्यों बनी रही, जो कि बड़े ही दुःख एवं बेशर्मी की बात है।

जिस प्रकार अनेक हिन्दू मन्दिरों में चमार, भंगी आदि तथाकथित नीची जातियां प्रवेश नहीं कर पातीं; उसी प्रकार ऊंची जाति के सिखों के गुरुद्वारों में रामदासिया और मजहबी सिख प्रवेश नहीं कर पाते। इसलिए इनके गुरुद्वारे अलग-अलग होते हैं। यह बड़े ही खेद का विषय है कि प्रगतिशील कहे जाने वाले सिखों की रगों में ब्राह्मणवादी खून बह रहा है, जिसे त्यागना अत्यन्त आवश्यक है।

उपरोक्त कथन के आधार पर यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सिखों में ब्राह्मणवाद का बोल बाला है।



कबीरपंथियों में ब्राह्मणवाद

कबीर भारत के संतों में सर्वश्रेष्ठ संत माने जाते हैं। उनके जन्म के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना कठिन होगा कि उनके माता-पिता का नाम क्या था और ब्राह्मणवाद के अनुसार वह किस जाति में पैदा हुए थे? लेकिन एक जुलाहे को तालाब के किनारे पड़ा हुआ मिलने के कारण, उनका पालन-पोषण उसी जुलाहे के घर में हुआ। इस कारण वह जुलाहे जाति के ही कहे जाने लगे। आज की भांति उस जमाने में भी जुलाहे को नीची जाति का माना जाता था। नीची जाति होने के कारण कबीर बचपन में पढ़ लिख नहीं सके और निरक्षर रह गए। उन्होंने इस बात को खुद ही स्वीकार किया है कि 'मसी कागद छूओ नहीं, कलम गही न हाथ।' निरक्षर होने के बाद भी कबीर महान् संत हो गए और उन्हें 'संतों का संत' उपाधि से सुशोभित किया गया था।

कबीर हिन्दू एवं मुसलमानों में फैले हुए अंधविश्वासों, पाखण्डों, भेदभाव, ऊंच-नीच, जातिवाद और छूआछूत के कट्टर विरोधी थे। ब्राह्मणवाद के पागलपन की मानसिकता किसी भी जाति में हो, वह बात कबीर को पसंद नहीं थी। कबीर सभी को समान मानते थे। वह कहते थे कि सभी लोग एक ही रास्ते से आए हैं, इसलिए सभी समान हैं। वह अक्सर कहते थे 'जाति न पूछो साधु की', बल्कि उसके कर्म को देखना चाहिए। जो अपने को ऊंचा कहता है वह मूर्ख होता है। इसलिए कबीर हिन्दू-मुसलमानों व ब्राह्मण-शूद्रों में फैली हुई भेदभाव की भावना और छुआछूत को समाप्त करने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे थे।

कबीर की मृत्यु के बाद उनके अनुयायियों ने उनके मिशन को पूरा करने के लिए 'कबीर-पंथ' नामक एक मज़हब की शुरुआत की। आज इस पंथ पर जो लोग चलते हैं, उन्हें कबीर पंथी कहते हैं। इस पंथ का सबसे बड़ा उद्देश्य समाज में फैले हुए अंधविश्वासों, पाखण्डों, मूर्तिपूजा को खत्म करके सच्चे ज्ञान का प्रचार-प्रसार करना था। इसके साथ ही साथ वह वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, ऊंचनीच और छुआछूत को समाप्त करके भाई-चारा व समरसता पैदा करना चाहते थे। लेकिन दुःख इस बात का है कि कबीर ने जिन उद्देश्यों के लिए जीवन भर संघर्ष किया था, आज उसके अनुयायी कबीर के सिद्धांतों की अर्थी निकालने में लगे हुए हैं।

भारत में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, कायस्थ, जाट, अहीर एवं गूजर आदि सवर्णों को, कबीर का पंथ अपना कर कबीरपंथी बनने की जरूरत नहीं है। इसका कारण यह है कि ये जातियां तो समाज में वैसे ही अपना ऊंचा एवं सम्मानजनक स्थान रखती हैं।

इनमें आपस में किसी भी प्रकार की छुआछूत एवं भेदभाव नहीं है। कबीर का मार्ग तो तथाकथित नीची जातियां, जैसे-चमार, जुलाहे, कोली, खटीक आदि, अपनाकर और अपने को कबीर पंथी कह कर गर्व अनुभव करते हैं। अगर किसी चमार से पूछा जाए कि तेरी 'जाति क्या है?' तो वह चमार कहने में हिचकिचाएगा, लेकिन उसे कबीरपंथी कहने में किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होगी। इसलिए तथाकथित नीची जातियां अपने को चमार, जुलाहे एवं कोली आदि के स्थान पर कबीरपंथी कहने में अपेक्षाकृत सुविधा अनुभव करती हैं।

समाज में फैले हुए अंधविश्वास, पाखण्ड, जातिवाद, भेदभाव, ऊंच-नीच और छुआछूत को समाप्त करने के लिए कबीर जीवन भर संघर्ष करते रहे। लेकिन बड़े दुःख की बात है कि आज कबीरपंथी स्वयं भेदभाव, ऊंचनीच, छुआछूत और पाखण्डों के शिकार हैं। मैं यहां कुछ उदाहरण देकर अपने कथन को सिद्ध करना चाहूंगा।

यह घटना सोन गांव, खेरागढ़ तहसील आगरा जनपद की है। सोन गांव में ठाकुरों, ब्राह्मणों और बनियों के छुआछूत एवं भेदभाव के व्यवहार से जाटव जाति के लोग काफी परेशान थे। इसलिए उनमें से कुछ जाटव कबीरपंथी हो गए थे। कबीर पंथी होते ही, वे अपने को दूसरे जाटव भाइयों से ऊंचा समझने लगे और अपनी ही जाति के लोगों के यहां शादी-विवाहों की दावतों में जाना उन्होंने बंद कर दिया और उन्होंने सीधा अर्थात् आटा, चावल, घी, गुड़, चीनी आदि लाना शुरू कर दिया। कहने का मतलब यह है कि कबीरपंथी बनते ही उन्होंने अपने भाइयों को नीचा कहना शुरू करके उनसे छुआछूत करना शुरू कर दिया और उनके ऊपर बामनवाद का भूत सवार हो गया।

इस घटना को मेरे पिता जी बताया करते थे। पिजाजी के चाचा कबीरपंथी थे। उन्होंने एक दिन पिताजी से कहा, "हमारे सबसे बड़े महंत काशी से आए हुए हैं, चलो उनके दर्शन कर आएं।" पिताजी आर्यसमाजी और जिज्ञासु थे, इसलिए उन्होंने तमाशा देखने के बहाने जाने का मन बना लिया। अगले दिन वह अपने चाचा के साथ दर्शन करने चले गए। वहां देखा कि महंत जी कोठी की पहली मंजिल पर ठहरे हुए थे और उनके दर्शन के लिए हजारों कबीरपंथी लाइन लगाकर खड़े हुए थे। लाइन में ही पिताजी अपने चाचा के साथ खड़े हो गए। पिताजी ने देखा कि दूसरी मंजिल पर लगे परनाले से पानी नीचे रखे हुए ड्रम में गिर रहा था। कुछ समय के बाद परनाले से पानी आना बंद हो गया। वहां के कार्यकर्त्ताओं ने उस ड्रम में दो बाल्टी पानी लाकर और डाल दिया और उसे लाठी से हिला दिया। पिताजी ने जब इसकी जानकारी अपने चाचा से प्राप्त करना चाही, तो उन्होंने बताया, "महंत जी ऊपर स्नान कर रहे थे और जो परनाले से आकर पानी ड्रम में गिरा है, वह महंत जी के स्नान किया हुआ पानी है। चूंकि यहां आदमियों की संख्या अधिक है, इसलिए दो बाल्टी पानी और मिला दिया गया है। यह ड्रम का पानी पवित्र प्रसाद है। यह दर्शन करने वालों में प्रसाद के

रूप में थोड़ा-थोड़ा सबमें बांटा जाएगा। उपस्थित सभी भक्त चरणामृत पीएंगे।" पिताजी को यह अंधविश्वास और पाखण्ड की बात देखकर आश्चर्य हुआ। उन्होंने मन ही मन सोचा कि जिस पाखण्ड को समाप्त करने के लिए महान् कबीर ने जीवन भर ब्राह्मणवाद से संघर्ष किया, आज उसी के अनुयायी कबीर के सिद्धांतों का बेड़ा गर्क करने में लगे हुए हैं।

कुछ ही समय के बाद महंत साहब बाहर आकर सीढ़ियों पर खड़े हो गए और उसी समय सभी लोग साष्टांग दंडवत करके जमीन पर लेट गए। लगभग एक-दो मिनट के ड्रामा के बाद महंत जी अंदर चले गए। पिता जी ने देखा कि वह महंत राजा-महाराजा जैसे कपड़े, हीरे-जवाहरात के जड़े हार, अंगूठियां और कीमती टोपी पहने हुए थे। लोगों ने हजारों रुपये चढ़ावे में चढ़ाया। बाद में उस ड्रम में भरे हुए गंदे पानी को प्रसाद के रूप में बांटा गया उसे कबीरपंथी बड़ी खुशी के साथ अमृत समझ कर पी रहे थे। लेकिन पिताजी उस चरणामृत से दूर ही रहे। पिता जी को यह सब देखकर भारी दुःख हुआ और सोचा कि ये कैसे कबीरपंथी हैं? ये तो कबीर के सिद्धांतों की होली जला रहे हैं।

एक बार पिताजी के चाचा ने चौका किया, जिसमें दो जूनियर महंतों को दावत में बुलाया। दो जूनियर महंत और उनके साथ एक सेवादार भी आया। सेवादार पहले कुंए से पानी लाया और उसने चौके-चूल्हे को गोबर-मिट्टी से लीपा-पोता। उसके बाद जितने भी बर्तन एवं चिमटे-फुकने थे सभी को रगड़-रगड़ कर मिट्टी से साफ किया। उसके बाद उन्होंने बिना पानी के पांच-छः सेर दूध को चूल्हे पर खीर बनाने के लिए रख दिया और थोड़ी देर के बाद उसमें पांच-छः छटांक चावल उसमें डाले। जब खीर आधी पक गई तो काफी मात्रा में किसमिस, चिरोंजी, कटी हुई गिरी और पिश्ते डाल दिए। जब वह पक कर रबड़ी बन गई, तो उसे नीचे उतार लिया। उसके बाद उन्होंने देसी घी में दो प्रकार की सब्जी बनाईं। मेंदा और आटे में ढेर सारा देसी घी का मोमन डालकर पांच सेर मेंदा एवं आटे की पूड़ियां बनाई। उसके बाद देसी घी में ही दो किलो आटे के मालपूए बनाए। जब यह सब सामान बन गया तो सारी खीर को एक बर्तन में डाला। पांच सेर बूरा, दो सेर देसी घी और पकी हुई सब्जियों को बर्तनों में और पूड़ियों एवं माल पूओं को एक बड़े से बांस के टोकरे में बांध कर चल दिए। पिताजी के चाचा ने उन्हें ग्यारह रुपये दक्षिणा के दिए। उनके जाने के बाद पिता जी ने अपने चाचा से पूछा, "ये यहां पर क्यों नहीं खा गए?" तो उत्तर मिला, "महंत जी ऊंची जाति के हैं।" पिताजी ने टिप्पणी करते हुए कहा, "जिस महान् संत ने छुआछूत को खत्म करने के लिए जीवन भर संघर्ष किया, आज उसी के चेले उसके नाम पर धब्बा लगा कर सत्यानाश कर रहे हैं।"

मेरे मामा ग्यासीराम जी कबीरपंथी साधू थे। सीनियर साधू होने के कारण वह कबीरपंथियों में सम्मानजनक स्थान रखते थे। उन्हें इस बात का बड़ा घमंड

था कि जब किसी जाटव के घर शादी-विवाह होता था, तो वह उनके यहां खाना खाने नहीं जाते थे। कहने का मतलब यह है कि वह उनसे छुआछूत करते थे। शादी वाले के घर से उनके लिए आटा, गुड़, घी आदि सूखा आ जाया करता था और वह अपने हाथ से बनाकर खाया करते थे। वह जब हमारे घर आते थे, तो गोश्त खाने की फरमायश करते थे और अम्मा उसे मीट पका कर खिलाती थी। बाद में वह हमारे हाथ जोड़कर कहता था कि इस बात को हम लोग किसी से कहें नहीं। कहने का मतलब यह है कि वह सीनियर कबीरपंथी साधू होने पर भी पाखण्डी नम्बर एक था।

मेरे मामा ग्यासीराम जी को जिस कबीरपंथी साधू ने दीक्षा देकर साधू बनाया था, वह बड़ा ही चरित्रहीन बाबा था। उसी गांव के दूसरे आदमी को जिसे हम गांव के रिश्ते में मामा कहते थे, उसे भी साधू बनाया था। उस व्यक्ति की पत्नी रिश्ते में हमारी मामी लगती थी। वह गोरी-चिट्टी, हट्टी-कट्टी बड़ी ही सुन्दर महिला थी। हमारे मामा का गुरु उस पर तबियत रखता था और वह अपनी कुटिया में न रह कर मामा के घर ही पड़ा रहता था। मामी खूबसूरत होने के साथ-साथ चरित्रवान और अक्लमंद भी थी। परोक्षरूप से उस दुष्ट एवं चरित्रहीन साधू ने उसे फंसाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वह उसके हत्थे नहीं चढ़ी। एक दिन वह मामी से बोला, "जविता! जैसे तू अपने आदमी को समझती है, वैसे ही मुझे समझा कर।" यह सुनकर जविता मामी ने गुस्से में जवाब दिया, "महाराज! वो तो मेरा खसम (पति) है, तो क्या तुम्हें भी अपना खसम ही समझूं।" मामी ने गुस्से में कहा, "महाराज! मैं तुम्हें कई महीने से देख रही हूं, लेकिन तुम सुधरे नहीं। लेकिन अब कभी इस प्रकार की बदचलनी की बात की तो मैं तुम्हारी पोल खोल दूंगी और किसी के लायक नहीं छोड़ूंगी।" उसके बाद वह बाबा मामी के पास कभी नहीं आया। यह बात मामी ने मुझे और मेरे बड़े भाई को कही थी।

एक कबीरपंथी साधू आगरा जनपद में फतेहपुर सीकरी का रहने वाला था। वह साधू बनने के पहले एक रास लीला में जोकर का काम करता था। वह साधू कम जोकर अधिक था। एक दिन हमारे गांव में सत्संग हो रहा था। उस साधू ने दो-तीन आदमियों को अपना चेला बनाया। चेला बनाते समय उसने कुछ उनके कान में कहा और बाद में तीन बार फूंक मार दी। सत्संग में बैठे पोप सिंह ने अपनी शंका के समाधान के लिए पूछा, "महाराज! आप कान में क्या कहते है? और बाद में फूंक क्यों मार देते हैं? जरा यह समझाओ।" बाबा ने उत्तर दिया, "अरे पोप सिंह! हम बेवफूफ बनाने के लिए कान में गुड़म-सुड़म कहते हैं और फूंक मारते समय यह सोच लेते हैं कि दो-तीन फूंक चूल्हे में ही मार दीं।

चेला यह समझता है कि गुरु ने कान में मंत्र दे दिया और बाद में फूंक मार कर मंत्र को आत्मा और दिमाग में घुसेड़ दिया।" चेलों ने गुरु की बात सुनी तो उनके चेहरे पर उदासी छा गई। पोप सिंह भी कहां चुप बैठने वाला था, वह भी मजाकिया नम्बर एक था, उसने बाबा को कहा, "महाराज! जब आप समझते हैं कि आपने दो-तीन फूंक चूल्हे में मार दीं, तो चेले भी यह समझते हैं कि हमारे कान को कुत्ता ही सूंघ गया।" यह सुनकर सब को हंसी आ गई और बाबा का चेहरा उदास हो गया। यह मैंने कबीरपंथी साधुओं के सोचने और बातचीत करने की एक बानगी पेश की है।

आज कबीरपंथी साधू अपने को बहुत ही सुपीरियर आदमी समझते हैं। कहने का मतलब यह है आधुनिक कबीरपंथी ब्राह्मणवाद की गिरफ्त में आ चुके हैं। जिन पाखण्डों, ब्राह्मणवाद एवं छुआछूत के विरुद्ध महान् संत कबीर ने क्रांति का बिगुल बजाकर जेहाद एवं संघर्ष किया था आज वे ही पाखण्ड, ब्राह्मणवाद एवं छुआछूत जैसी कुरीतियां कबीर पंथियों में देखी जा सकती हैं और आज वे ब्राह्मणवाद की चादर ओढ़ कर ब्राह्मणवाद का अलख जगा रहे हैं, जो बड़ी ही शर्म एवं चुल्लू भर पानी में डूब मरने की बात है।



ईसाइयों में ब्राह्मणवाद

हिन्दू धर्म के ब्राह्मणवादी आतंकवाद से परेशान, उत्पीड़ित और आतंकित लाखों दलित ईसाई धर्म में दीक्षा लेकर विधर्मी बन गए थे। जब भारत में अंग्रेजी शासन आया, तो हजारों सवर्ण सुख-सुविधा, ऐश-आराम और सरकारी नौकरियां लेने के लिए ईसाई बन गए। यह धर्मान्तण सिद्धांतों के लिए नहीं, बल्कि स्वार्थों के लिए किया गया था। दूसरी तरफ हिन्दू-समाज का एक और वर्ग जिसमे चमार, भंगी, खटीक, धोबी, मल्लाह और कोली जैसी तथाकथित जातियां आती थीं, उन्होंने हिन्दुओं के द्वारा किए जाने वाले शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अन्याय एवं जानवरों जैसे व्यवहार से परेशान होकर ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया, जिससे वे समाज में समानता, स्वतंत्रता, व आत्म-सम्मान और हिन्दुओं के द्वारा किए गए अत्याचारों से छुटकारा पा सकें।

दुख की बात यह रही कि भंगियों के द्वारा ईसाई बनने पर भी ऊंच-नीच एवं भेदभावपूर्ण जो ब्राह्मणवादी मानसिकता एवं संस्कार उनमें थे, ईसाई बनने पर भी वे उन्हें नहीं बदल पाए और ईसाई भी आपस में एक दूसरे के प्रति हीन भावना रखने लगे। कहीं-कहीं और कभी-कभी तो ईसाइयों में ऐसी विकृत मानसिकता देखी गई, जिसके परिणामस्वरूप वे आपस में शादी-विवाह करते समय एक दूसरे की जाति को जानना चाहते हैं। कभी-कभी छुआछूत करते भी देखा गया है। ईसाई वर्ग में छुआछूत का मूल कारण यह है कि वे हिन्दू धर्म को छोड़कर और चर्च में जाकर ईसाई तो बन गए, लेकिन वे हिन्दू धर्म के ब्राह्मणवादी संस्कारों को नहीं छोड़ सके और वे ब्राह्मणवाद की सड़ी-गली बुदबूदार लाश को अभी भी अपनी पीठ पर लादे-लादे फिर रहे हैं।

मैं अपने इस कथन को सिद्ध करने के लिए कुछ उदाहरण देना चाहूंगा। आगरा जनपद में साईं की तकिया के बगल में महात्मा गांधी रोड के किनारे पर बैपटिस्ट मिशन हाई स्कूल है, जो उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध स्कूल माना जाता है। यह स्कूल ईसाइयों के द्वारा चलाया जाता है। मैं इस स्कूल का छात्र रह चुका हूं। काफी वर्ष पूर्व इस स्कूल के प्रधानाचार्य ईसाई थे। उनके घर पर काम करने वाले चपरासी को प्रधानाचार्य की पत्नी अपनी रसोई में घुसने नहीं देती थी। इस बात की खोजबीन करने पर पता चला कि ईसाई बनने के पहले प्रधानाचार्य और उनकी पत्नी पढ़े-लिखे ब्राह्मण थे, लेकिन नौकरी के लालच के कारण वे विधर्मी बन गए। इसी प्रकार उनका चपरासी हिन्दुओं के शोषण, अत्याचारों और अन्याय के कारण ईसाई बन गया था, जिससे कि वह समानता और इंसानियत का व्यवहार प्राप्त कर सके। लेकिन ईसाई बनने पर भी उसे छुआछूत, अपमान एवं अन्याय मिला, क्योंकि वह ईसाई धर्म ग्रहण करने के पूर्व हिन्दुओं की भंगी जाति का सदस्य था।

दिल्ली मैं मेरे एक ईसाई मित्र हैं और वे कभी ईसाई धर्म के फादर रह चुके हैं। इनका नाम मिस्टर थॉमस है, जो बहुत ही उच्चकोटि के इंसान हैं। इनकी इंसानियत बेमिसाल है। इनके व्यक्तित्व में भगवान् ईसा की दया, करुणा, प्रेम एवं मानव-सेवा कूट-कूट कर भरी हुई है। मेरा इनसे पारिवारिक सम्बंध है। इनकी पत्नी भी इन्हीं की तरह सुशील और एक अच्छी ग्रहणी हैं। मिस्टर थॉमस की बातों और व्यवहार में ब्राह्मणवाद का लेश मात्र भी असर दिखाई नहीं देता। लेकिन कभी-कभी इनकी पत्नी गर्व से यह कहती पाई जाती हैं कि उनके पूर्वज चौहान क्षत्रिय थे। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि आज भी ब्राह्मणवाद का भूत उनके पीछे पड़ा हुआ है। इसी प्रकार मेरे दामाद चौधरी प्रदीप कुमार जी का एक ड्राइवर ईसाई धर्म का अनुयायी था। वह भी अक्सर मुझसे बड़े गर्व से कहा करता था कि उसके बाप-दादे भी राजपूत (क्षत्रिय) थे। कहने का तात्पर्य यह है कि ब्राह्मणवाद ऐसी छूत की बीमारी है, जो कभी पीछा नहीं छोड़ती, चाहे व्यक्ति मुसलमान हो जाए अथवा ईसाई।

आज भारत में ब्राह्मणवाद की चपेट में आने के कारण ईसाई समुदाय दो भागों में बंट चुका है। एक भाग में वे ईसाई आते हैं, जो पहले सवर्ण थे और दूसरे भाग में वे लोग आते हैं, जिनके पूर्वज दलित थे। दूसरे वर्ग में आने वाले ईसाइयों को दलित ईसाई कहते हैं। आज दलित ईसाई अन्य अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों की तरह आरक्षण की मांग कर रहे हैं। आज राजनीति में दलित ईसाइयों के आरक्षण का मुद्दा बना हुआ है, जो संयुक्त राष्ट्र संघ तक पहुंच चुका है। आश्चर्य और दुःख की बात यह है कि ईसाइयों में फैले हुए ब्राह्मणवाद के कारण आपस में ऊंच-नीच, भेदभाव और छुआछूत की मानसिकता फैली हुई है, जिसके कारण उनमें रोटी-बेटी का सम्बंध भी नहीं है। इतनी ही बात नहीं, लेकिन सवर्ण जातियों से परिवर्तित ईसाइयों के गिरजाघर अलग हैं और दलित इसाइयों के अलग। जिस प्रकार चमार, भंगी आदि तथाकथित नीची जातियों के लोग हिन्दुओं के मन्दिरों में प्रेवश नहीं कर सकते, उसी प्रकार दक्षिण भारत में दलित ईसाई सवर्ण ईसाइयों के गिरजाघरों में नहीं जा सकते। यह सब ब्राह्मणवाद के पागलपन का असर है।

वैसे तो सभी मनुष्य समान होते हैं, लेकिन मरने के बाद तो सभी लोग शव को सम्मान देते हैं। लेकिन दक्षिण भारत में सवर्ण ईसाईयों के कब्रिस्तान अलग हैं और दलित ईसाइयों के अलग। अगर दलित ईसाई यह चाहें कि वे अपने शव को सवर्ण ईसाईयों के कब्रिस्तान में दफन कर दें, ऐसा कभी नहीं हो सकता। जिस ईसा मसीह ने मनुष्य को समानता, प्रेम, मैत्री, और करुणा का पाठ पढ़ाया था। आज वे ही भारतीय ईसाई धर्म की कब्र खोदने पर लगे हुए हैं। इसका एक मात्र कारण सवर्ण ईसाई अपने हिन्दू धर्म के संस्कारों एवं ब्राह्मणवादी मानसिकता को नहीं भुला पाए हैं, जो बड़े ही शर्म की बात है। इस प्रकार के ईसाइयों को तो चुल्लू भर पानी में डूबकर मर जाना चाहिए।

मुसलमानों में ब्राह्मणवाद

पाठक इस लेख को पढ़कर यह सोचने लगेंगे कि ब्राह्मणवाद तो हिन्दुओं में होता है, मुसलमानों में कैसे आ गया? ब्राह्मणवाद एक मानसिकता है, जो प्रत्येक समाज एवं उसके व्यक्ति में पाई जा सकती है। ब्राह्मणवाद की तार्किक एवं सटीक व्याख्या पहले की जा चुकी है, जिसका तात्पर्य मनुष्य, मनुष्य में ऊंच-नीच का भेद करने वाली मानसिकता, जो किसी भी धर्म को व्यक्ति में पाई जा सकती है।

दुनिया में इस्लाम धर्म ही एक ऐसा धर्म है, जहां पर समानता और भाईचारा पाया जाता है। कुरान के अनुसार सभी आदमी अल्लाह के बेटे हैं, इस लिहाज से वे आपस में भाई-भाई हैं। इसलिए मस्जिद में सभी मुसलमान एक साथ एक पंक्ति में बैठकर नमाज अदा करते हैं। उनमें कोई भेदभाव एवं हिन्दुओं की तरह छुआछूत एवं ऊंच-नीच का भेदभाव नहीं पाया जाता। जब यह धर्म पैदा हुआ था, तो उस जमाने में कबीले हुआ करते थे और अपने-अपने अस्तित्व में वे कबीले आजाद थे, लेकिन उनमें छुआछूत की भावना नहीं थी। वे सब कबीले एक दूसरे के प्रति समानता एवं भाईचारे और इंसानियत के सम्बंध रखते थे।

जब मुसलमान भारत में आकर स्थाई रूप से रहने लगे, तो वे हिन्दुओं के सम्पर्क में आए और जिसका नतीजा यह हुआ कि हिन्दुओं में फैली हुई जातिवाद, भेदभाव और ऊंच नीच की भावना, जो भयंकर छूत की बीमारी है, वह मुसलमानों में भी लग गई। यह जानकर बड़ा आश्चर्य होता है कि जिन सवर्णों ने किन्हीं कारणों से इस्लाम धर्म कबूल किया था, वे लोग अब भी ब्राह्मणवाद की मानसिकता को सैकड़ों वर्ष के बाद भी नहीं भुला पाए हैं और उस विकृत मानसिकता से अभी भी पीड़ित हैं। मुझे शाहदरा क्षेत्र में स्थिति सीमलपुर में मुसलमानों के एक समारोह में जाने का मौका मिला। वहां पर एक मौलवी साहब और एक उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति से मुलाकात हुई। जब मौलबी साहब से परिचय प्राप्त हुआ, तो उन्होंने बड़े गर्व से अपने नाम के साथ उपनाम 'गौतम' बताया। मैंने जब उनसे पूछा कि "आपका उपनाम गौतम क्यों है?" तो उन्होंने बड़े गर्व के साथ ऊंचा सिर करके उत्तर दिया, "क्योंकि उनके पूर्वज गौतम ब्राह्मण थे, इसलिए जबसे यह उपनाम हमारे परिवार में अब तक चला आ रहा है।" जब मौलवी साहब बोल रहे थे, तब ब्राह्मणवाद का अहंकार उनके चेहरे पर साफ दिखाई दे रहा था।

मौलबी साहब से परिचय प्राप्त करने के बाद मैंने प्रिन्सीपल राव से पूछा, "जनाब! राव तो हिन्दू होते हैं, तो आप प्रतिष्ठित मुसलमान होकर अपने नाम के पीछे

'राव' क्यों लिखते हैं?" मेरा प्रश्न सुनकर उन्होंने भी मौलवी साहब के स्टाइल में जवाब दिया, "डॉ. साहब! हमारे बाप दादे हिन्दू थे, जो बहुत बड़े जागीरदार एवं जाति के राव थे। इसलिए यह उपनाम अब तक चला आ रहा है।" राव साहब ने भी यह बात बड़े गर्व के साथ कही। मैंने उन दोनों को बड़े प्यार से समझाया और कहा, "हिन्दू धर्म में कुछ कमी और खामियां आप लोगों के पूर्वजों ने देखी होंगी और इस्लाम में कुछ अच्छी बातें, जिनके कारण उन्होंने हिन्दू धर्म छोड़कर इस्लाम को कबूल कर लिया। लेकिन मुझे अफसोस इस बात का हो रहा है कि जिस प्रकार एक बंदरिया अपने मरे हुए बच्चे की सड़ी-गली बुदबूदार लाश को अपने सीने से लटकाए फिरती है, उसी प्रकार आप लोग भी सैकड़ों साल के बाद हिन्दू धर्म के सड़े-गले उपनामों को अपने नामों के पीछे लगाए फिर रहे हो। इसका मतलब यह है कि आप लोगों के अचेतन मन में अभी भी ब्राह्मणवाद की भेदभावपूर्ण एवं ऊंच नीच की भावना भरी हुई है।" मैंने पुनः कहा, "अरे अल्लाह के बन्दो! अगर अपना भला चाहते हो तो ब्राह्मणवादी की मानसिकता से जल्दी ही पीछा छुड़ा लो। नहीं तो पाखण्डी हिन्दुओं की तरह तुम्हारा बेड़ा गर्क हो जाएगा।" मेरी बात का उन दोनों पर बड़ा सकारात्मक प्रभाव पड़ा और उन्होंने भविष्य में गौतम एवं राव न लिखने का वचन दिया।

भारत में आकर हिन्दुओं में फैले हुए जातिवाद, भेदभाव, ऊंच-नीच का प्रभाव मुसलमानों पर पड़े बिना नहीं रह सका और मुसलमान भी ऊंच-नीच एवं भेदभाव की बीमारी से पीड़ित हो गए और उनमें भी जातिवाद घुस गया। मुसलमानों में सैयद, शेख, मुगल, पठान, कुरैशी, मिर्जा अपने आप को ब्राह्मणों की तरह सबसे ऊंचा मुसलमान मानते हैं। तेली, तमोली, जुलाहे, नाई, कुजड़े, भटियारे, धोबी और कसाइयों को नीचा मुसलमान समझा जाता है। मुसलमानों की नीची जातियां ऊंची जातियों के साथ हिन्दुओं की तरह रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं रखतीं।

लेकिन मुसलमानों में यह खूबी है कि उनमें भाईचारा काफी है और हिन्दुओं की तरह छुआछूत नहीं है। हिन्दुओं में दलित मंदिर प्रवेश नहीं कर सकते, लेकिन मुसलमानों में सभी जातियों के मुसलमान एक साथ कंधे से कन्धा मिला कर नमाज़ पढ़ते हैं। आज मुसलमानों में जो ऊंच-नीच की मानसिकता पाई जाती है, उसे हम एक प्रकार से ब्राह्मणवाद ही कह सकते हैं, जो हिन्दुओं से मुसलमानों में पहुंच गई है।

जाटों में ब्राह्मणवाद

उत्तर भारत में जाट एक महत्वपूर्ण जाति मानी जाती है। हिन्दुओं की वर्ण-व्यवस्था के अन्तर्गत जाट जाति किसी भी वर्ण में नहीं आती। एक दिन दुःखी मन से भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी ने प्रोफेसर बुद्धप्रिय मौर्य जी से पूछा, "मौर्य जी! मुझे इस बात का अफसोस है कि भारत का ब्राह्मण जाटों को न तो ब्राह्मण मानता है, न क्षत्रिय, न वैश्य और न शूद्र। समझ में नहीं आता वर्ण-व्यवस्था में जाटों का स्थान कहां है?" प्रोफेसर मौर्य जी ने उत्तर दिया, "चौधरी साहब! यह सत्य है कि आपका स्थान आर्यों द्वारा बनाई वर्ण-व्यवस्था में नहीं है। लेकिन जाट जाति का इतिहास बहुत महान् और गौरवपूर्ण है। जिस प्रकार भारत में आर्य बाहर से आकर यहीं बस गए थे, उसी प्रकार जाटों के पूर्वज शक अनेक वर्षों तक यहां आते रहे और उन्हें अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा और इन संघर्षों में इन्हें विजय प्राप्त होती रही और ये अपने राज्य स्थापित करते चले गए। बौद्ध सम्राट कनिष्क जाट जाति के ही राजा थे।"

भरतपुर, धौलपुर, मुड़सान, अलवर आदि रियासतों में अपनी बहादुरी के कारण जाटों ने अपने राज्य स्थापित कर लिए थे और इतिहास के तथ्यों की अज्ञानता के कारण यह जाति कभी अपने को क्षत्रिय तो कभी राजपूत कहने लगी। चूंकि यह जाति विचारधारा एवं सामाजिक व्यवहार में प्रगतिशील थी, इसलिए मनु ने इन्हें नौ अन्य जातियों के साथ वर्ण-व्यवस्था से निकाल दिया था। जब इनका कोई धर्म और वर्ण-व्यवस्था में कोई स्थान नहीं रहा, इसलिए समस्त शक, जिनके वंशज आज के जाट हैं, उन सभी ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया और जिन क्षेत्रों में इनका शासन था, उनमें बौद्धधर्म की काफी प्रगति हुई।

जाति एवं वंशगत बौद्ध होने के कारण जाटों में पंचशील, अष्टांगिक मार्ग और कर्म का सिद्धांत आज भी परोक्ष रूप से देखा जा सकता है। चूंकि जाट ऐसी सामाजिक व्यवस्था में रहते थे, जिसमें जातिवाद, भेदभाव, छुआछूत का बोलबाला था, इसलिए इस दोषपूर्ण एवं विषैले हिन्दुओं के सामाजिक वातावरण का प्रभाव जाटों पर भी पड़ने से नहीं रह सका और इनमें भी भेदभाव और छुआछूत की भावना आ गई। चूंकि वर्ण-व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र का शोषण व उत्पीड़न करता चला आ रहा है। क्षत्रिय वैश्य व शूद्र का करता है और वैश्य शूद्र का शोषण करता है। लेकिन जाट ब्राह्मण, क्षत्रिय, एवं वैश्य का शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार एवं अन्याय कर नहीं सकता था, लेकिन देखा-देखी ब्राह्मणवाद जाटों के सिर पर चढ़कर बोल रहा

था, तो वे ब्राह्मणवाद के भूत को कैसे संतुष्ट करें? यह समस्या जाटों के सामने आ गई। उसके लिए उनमें खेतों में काम करने वाले बेगारी, चमारों का शोषण, अत्याचार और अन्याय करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार समस्त जाट जाति ब्राह्मणवाद के शिकंजे में आ गई और ब्राह्मणवाद उनके सिर पर नंगा नाचने लगा।

यहां पर एक बात साफ कर देना जरूरी है कि जाट जाति एक ऐसी जाति है कि उसमें और छोटी-छोटी उपजातियां नहीं हैं। इस कारण जाटों में आपस में भेदभाव और छुआछूत नहीं है, जैसे कि अन्य जातियों में पाई जाति है। जाटों में अपने निवास एवं गांव के नाम से गोत्र अवश्य पाए जाते हैं, लेकिन गोत्रों के कारण उनमें भेदभाव कतई नहीं है। जाटों में संगठनात्मक दृष्टि से एक बात अवश्य पाई जाती है कि ये जाति संवेदनात्मक दृष्टि से इतनी संगठित है कि इनके संगठन को आज तक कोई भी तोड़ नहीं पाया है। प्रायः जाट जाति खेती हर जमींदार होती है और उनके खेतों में काम और बेगार करने वाले बंधुआ मजदूर चमार हुआ करते थे और जाट इन चमारों का भरपूर शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार और अन्याय किया करते थे। चमार सदियों से इस व्यवहार को अपना भाग्य समझ कर सहन करते रहे थे। भारत के आजाद होने तक यह अन्याय एवं अमानवीय व्यवस्था चली आ रही थी।

भारत के आजाद होने के बाद भारतीय संविधान लागू हुआ, जिसके अन्तर्गत भारत के सभी नागरिकों को स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा व संस्कृति और शोषण के विरोध के अधिकार प्राप्त हो गए। इसके बाद चमारों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार से आत्मसम्मान पैदा हुआ और सामाजिक चेतना विकसित हुई। डॉ. आंबेडकर जैसे नेता पैदा होने के कारण दलितों में शिक्षा, संगठन एवं संघर्ष की भावना का उदय हुआ और उन्होंने जाटों के यहां बेगार करना बंद कर दिया। जिसका प्रभाव यह हुआ कि सैकड़ों वर्षों से दलित जाटों की बेगार करते थे, वह उन्होंने बंद कर दिया और जाटों को खेती हर मजदूरों की कमी पड़ गई और उन्हें आर्थिक दृष्टि से हानि होना आरम्भ हो गया। दूसरे जाट दलितों का शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार और अन्याय सैकड़ों वर्षों से व उनके साथ जानवरों का व्यवहार करते थे, वह भी बन्द हो गया, इससे जाटों के अहंकार और बिगड़े हुए मनोविज्ञान पर बड़ी गहरी चोट लगी। जाटों के मन में यह बात आई कि जो चमार बेगारी इनके सामने भीगी बिल्ली और कीड़े-मकोड़ों की तरह इनके सामने रहते थे, वे अब पढ़ लिखकर अच्छे-अच्छे अफसर बनकर राज करने लगे हैं। साफ-सुथरे कपड़े पहने व अच्छा-अच्छा खाने लगे हैं और मोटरों पर चढ़ने लगे हैं। यह सब जाटों को असहनीय हो गया और उनके दिल एवं दिमाग में जो ब्राह्मणवाद घुस गया था वह अब जाग उठा। जिसका परिणाम यह हुआ कि जाट दलितों पर बिना किसी कारण अत्याचार, लूट, हत्याएं, आगजनी एवं बलात्कार करने शुरू कर दिए। जो जाट पहले बौद्ध धर्म के

अनुयायी थे, वे ब्राह्मणवाद के शिकंजे में पड़कर अत्याचारी, अन्यायी और दलितों के हत्यारे बन गए। इस जातिवादी एवं छुआछूत की भावना का मुख्य कारण जाटों में ब्राह्मणवाद की मानसिकता का घर कर जाना है।

ऊपर लिखे कथन को प्रमाणित करने के लिए मैं कुछ उदाहरण देना चाहूंगा। उत्तर भारत व राजस्थान के जिस-जिस गांव में जाट और दलित रहते हैं, वहां पर ब्राह्मणवाद के कारण आज भी जाट दलितों के साथ जातिवाद एवं छुआछूत का व्यवहार करते हैं। आज भी चमार या भंगी जाति का आदमी जाटों के कुएं से पानी नहीं ला सकता। आज भी साठ वर्ष की आजादी के बाद भी हरियाणा, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में यह कुप्रथा लागू है। जहां पर जाटों का बाहुल्य है, वहां पर दलितों का दूल्हा घोड़े पर बैठ व चमकीला सिर पर मोहर बांध कर बैन्ड बाजे के साथ बारात में नहीं जा सकता। आगरा के जनपद गांवों में इसके लिए बड़ा संघर्ष करना पड़ा था। कुछ वर्ष पूर्व आगरा में पनवारी कांड हुआ, जिसकी चर्चा संयुक्त राष्ट्र संघ तक हुई। आगरा जनपद के पदूमा का नगला, ग्वालियर रोड से एक जाटव लड़के की बारात आगरा पश्चिम में स्थित पनवारी गांव में गई थी, वह गांव एवं क्षेत्र जाट बहुल्य है। बारात घोड़े पर बैन्ड बाजे के साथ जा रही थी। वह गांव के जाटों ने चढ़ने नहीं दी। बारात वापस आ गई। उसके बाद आगरा के जिलाधीश ने कुछ पुलिस फोर्स के साथ बारात शादी के लिए फिर भेजी। उस समय उन गांव के जाटों ने महाभारत के युद्ध की तैयारी करने के लिए चारों तरफ के हजारों जाटों को दो-तीन दिन पहले एकत्रित कर लिया और वे सभी बन्दूक, राइफल, भाले, तलवार, पिस्तौल, कट्टे और लाठियों आदि अस्त्र-शस्त्रों से लैस होकर आ गए।

जब बारात पुलिस के साथ बैन्ड बाजे के साथ चढ़ने लगी, तो जाटों ने पुलिस की परवाह किए विना हमला कर दिया। पुलिस वाले दूल्हा को लेकर और अपनी जान बचाने के लिए एक घर में छुप गए। उस हजारों जाटों की भीड़ ने पूरे गांव में आग लगा दी। घरों में जो कुछ भी था उसे लूट कर ले गए। औरतों के साथ बलात्कार किए और जो दलित सामने आया उसे मारकर कुंए में फेंक दिया अथवा उपलों के बिटरों में फैंककर आग लगा दी। जब से पुलिस ने स्थिति को भयंकर देखा, तब उन्होंने आगरा के जिलाधीश से वायलैस से बात ..रके फौज की मदद मांगी। आगरा से फौज के जाने पर स्थिति को कावू में किया जा सका और दूल्हा व पुलिस वालों की जान बच सकी। यह घटना इसी गांव तक सीमित नहीं रही। बल्कि पूरे आगरा जनपद में जिस-जिस गांव में जाटों की आबादी थी, उन्होंने उस-उस गांव में भी भारी लूटपाट, अत्याचार, हत्याएं और बलात्कार किए। यह जाटों की फैली हुई ब्राह्मणवादी पागल मानसिकता का परिणाम था।

इस घटना के कुछ ही दिन बाद इसी प्रकार की घटना कुम्हेर कस्बा, भरतपुर,

राजस्थान में जाटों और दलितों के बीच घटी। कुछ दलित लड़के एक सिनेमा हॉल में फिल्म देख रहे थे। उनके बगल में कुछ जाट लड़के भी सिनेमा देख रहे थे। जाटों को यह बात असहनीय लगी और उन्होंने दलितों की पिटाई कर दी। अगले दिन इस घटना की सूचना पूरे कुम्हेर क्षेत्र में जंगल में आग की तरह फैल गई। कुम्हेर कस्बा और उसके चारों ओर के जाट बन्दूकें, तलवारें, भाले आदि लेकर इकट्ठे हो गए। सुना जाता है कि उस हजारों जाटों की भीड़ ने एक युवक दलित को पकड़ा और गांव की देवी पर ले गए। देवी की पूजा करने के बाद उस दलित युवक का तलवार से सिर धड़ से अलग करके उसके रक्त को देवी पर चढ़ाया गया और उस रक्त का तिलक वहां उपस्थित सभी जाटों ने लगाया। उसके बाद देवी का जैकारा बोलकर दलितों की बस्ती में आकर हमला बोल दिया। झोंपड़ियों व मकानों में आग लगा दी। मवेशियों को लूट ले गए। लड़कियों और महिलाओं के साथ बलात्कार किए गए। जो दलित सामने आया उसका कत्ल कर दिया गया। बहुत से दलितों को जीवित जलते हुए उपलों के विटोरों में फैंक दिया गया।

आज भी दलित युवक को जाटों के द्वारा भरी पंचायत में गर्दन में रस्से से फन्दा लगाकर पेड़ से लटका दिया जाता है। एक मामले में एक दलित युवक की भरी पंचायत में कुटी कूटने वाले गंडासे से गर्दन ही काट डाली गई थी। आज भी राजस्थान, उत्तर प्रदेश और हरियाणा में जाटों के द्वारा दलितों की हत्या करना और आगजनी करना फैशन बन गया है। जिसे किसी भी दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता।

जाटों में फैली हुई अमानवीय एवं पाशविक घटनाओं के एकमात्र कारण ब्राह्मणवादी मानसिकता है, जिसने जाटों के दिल और दिमाग को खराब कर दिया है। भारत की साठ वर्ष की आजादी के बाद भी आज जाटों द्वारा दलित दूल्हे को बैन्ड के साथ घोड़े पर नहीं बैठने नहीं दिया जाता, तो इसे जाटों पर सवार ब्राह्मणवाद का भूत ही कहा जाएगा। कानून के पालन करने वाले भी इसी मनोवृत्ति से प्रभावित होते हैं, इस कारण वे भी कुछ नहीं कर पाते और चुपचाप बैठकर जाटों का ब्राह्मणवादी ताण्डव नृत्य देखते रहते हैं यथार्थ में भारत में दलितों के साथ इस प्रकार का किया गया अमानवीय एवं पाशविक व्यवहार देश पर कलंक का टीका है।

पिछड़ी जातियों में ब्राह्मणवाद

वर्ण-व्यवस्था के अनुसार जो वर्ण व जातियां वर्ण-व्यवस्था में नहीं आतीं, वे सभी शूद्र वर्ण की श्रेणी में आती हैं अथवा ये उन जातियों में आती हैं, जिनको मनु ने वर्ण-व्यवस्था से निकाल कर बाहर कर दिया था, वे जातियां इस प्रकार हैं—"पौण्ड्रक, चौड, द्रविण, काम्बोज, पवन, शक, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद एवं खश आदि।[1] इसके आगे मनु कहता है, "ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्रों की क्रियालोपादि से जो बहिष्कृत जातियां ही आती हैं—वे चाहे म्लेच्छ भाषा बोलती हों या आर्य भाषा—सब दस्यु कहलाती हैं।"[2]

भारत में वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, भेदभाव के कारण जो अनेक जातियां सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक क्षेत्र में पिछड़ गईं, लेकिन वे अछूत नहीं थीं, वे सभी जातियां जीवन की दौड़ में पीछे रह गईं। यद्यपि वे जातियां अछूतों की तरह अस्पृश्य नहीं थीं, लेकिन उन्हें सछूत होने का दर्जा प्राप्त था। कहने का तात्पर्य यह है कि सवर्ण इन जातियों के साथ छुआछूत का व्यवहार नहीं करते थे। प्रदेश और क्षेत्र के हिसाब से भारत में इनकी संख्या सैकड़ों में गिनी जा सकती है। यद्यपि इस पुस्तक में इन जातियों की संख्या, उनके नाम और उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों का वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। यहां तो केवल यह बताया जा रहा है, कि ब्राह्मणवाद की वजह से पिछड़ी जातियों में भी रोटी-बेटी के आपस में सम्बंध नहीं हैं। एक जाति दूसरे को और दूसरी जाति पहले को अपने से नीचा अथवा ऊंचा समझती है।

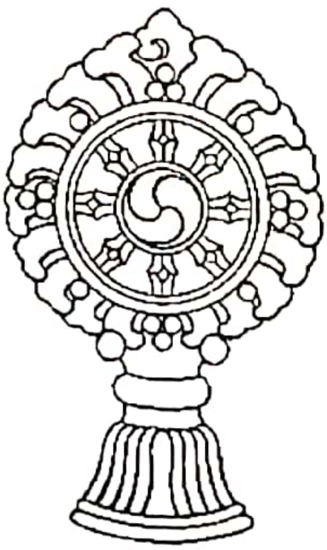
उत्तर भारत में गूजर, जाट, कछवाए, धीमर, अहीर, पटेल, लोधी, माली, कोली जैसी अनेक जातियां हैं, जो पिछड़ी जातियों में गिनी जाती हैं। इनमें से गूजर व अहीर खेती बाड़ी, कछवाए खेतों में सब्जी उगाने और धीमर घरों में पानी भरने का काम करते हैं। लोधी जाति भी खेती करती है। माली फूलों का कार्य करती है। कहने का तात्पर्य यह है कि समस्त पिछड़ी जातियों में आपस में रोटी-बेटी के सम्बंध नहीं हैं। सभी जाट आपस में गोत्र को छोड़कर एक दूसरे गोत्र में शादी-विवाह करते हैं, लेकिन हरियाणा के जाट उत्तर प्रदेश के जाटों से अपने आप को ऊंचा समझते हैं। जाटों में इस प्रकार की कहावत भी प्रचलित है कि 'यू.पी. का जाट जब तौले तब घाट ही घाट'

---

1. *मनुस्मृति, 10/43-44*
2. *वही, 10/45*

इसी प्रकार गूजर जाति पिछड़ी जातियों में आती है और इसका पेशा भी खेती है। वैसे कुछ सरकारी सेवा, पुलिस और शिक्षा के क्षेत्र में भी कार्य करते हैं। ऐसा देखा गया है कि इस जाति में शिक्षा का प्रचार-प्रसार जाटों की अपेक्षा कम है। गूजरों में भी अनेक गोत्र हैं, लेकिन गोत्र को छोड़ रोटी-बेटी का सम्बंध उनमें पाया जाता है।

पिछड़ी जातियों में ब्राह्मणवाद बड़ी जोरों पर है। ब्राह्मणवाद के कारण उनमें ऊंच-नीच की भावना तो पाई जाती है, लेकिन वे आपस में छुआछूत नहीं करते। और शादियां भी उनकी अपनी ही जाति में होती हैं। यह भावना ब्राह्मणवाद के कारण पैदा हुई है।



दलित जातियों में ब्राह्मणवाद

ब्राह्मणवाद ऐसी छुआछूत की बीमारी है, जो समस्त दलित वर्ग एवं उनकी उपजातियों में पाया जाता है। दलितों में चमार एक ऐसी जाति है, जो प्राचीन काल से लेकर अब तक पूरे देश में पाई जाती है। ऋग्वेद के जमाने में यह जाति चर्मग्न एवं चर्मकार के नाम से जानी जाती थी। आज चर्मग्न और चर्मकार का अपभ्रंश शब्द चमार हो गया है। भारत के घृणित एवं ब्राह्मणवादी इतिहास के कारण 'चमार' ऐसा अपमानजनक शब्द हो गया है कि चमार जाति के लोग चमार कहलाना पसंद नहीं करते और इसे गाली समझते हैं। यद्यपि जाटव जाति चमारों में से ही उत्पन्न हुई है और एक प्रकार से जाटव शब्द को चमार का पर्याय कहा जाता है, फिर भी अगर आगरा जनपद के किसी जाटव को चमार कह दिया जाए, तो वह अच्छा महसूस नहीं करेगा और अधिकांश लोग तो लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार हो जाएंगे।

आगरा में चमार जाति सैकड़ों वर्षो से सम्पन्न और जागरूक रही है। व्यवसाय के क्षेत्र में सीताराम मानसिंह (दो भाई) व हीरा लाल बोदी लाल जैसे उच्चकोटी के व्यवसायी, दुनिया में अपनी सम्पन्नता का डंका बजा चुके हैं। पंडित छेदी लाल कणिक, प्रसिद्ध साहित्यकार मा. यादवेन्द्र जैसे सैकड़ों बुद्धिजीवी भारत में अपनी योग्यता का झण्डा फहरा चुके हैं। राजनीति के क्षेत्र में डॉ. मानिक चन्द जाटव वीर, परिनिर्वृत मा. करन सिंह केन बी.ए. एवं मा. छत्रपति अम्बेश उत्तर भारत में प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके हैं।

इतनी भारी आर्थिक सम्पन्नता, सामाजिक व बौद्धिक श्रेष्ठता एवं राजनीतिक चेतना के कारण चमार जाति की स्थिति बुलन्द रही और आगरा के विकास में इस जाति का सक्रिय एवं प्रभावकारी सहयोग रहा। 'हम किसी से कम नहीं' वाली लोकोक्ति इन पर लागू होती है। आगरा में इस जाति के नेताओं, बुद्धिजीवियों, समाज सुधारकों और सम्पन्न लोगों ने अनुभव किया कि हमारी सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनीतिक श्रेष्ठता एवं उच्चता को देख हमें जो घृणासूचक शब्द चमार से पुकारा जाता है, वह अनुसूचित एवं अपमानजनक है। इसलिए लगभग एक शताब्दी पूर्व आगरा के प्रबुद्ध लोगों ने चमार शब्द के स्थान पर यादव कहना आरम्भ किया, जिसके परिणामस्वरूप आज भी राजस्थान में अनेक चमार यादव जाति से जाने जाते हैं और कुछ लोग तो आज भी अपने को यादवेन्दु लिखना पसंद करते हैं।

कुछ वर्ष के बाद यादव शब्द पर भी काफी उहापोह हुई, उसके बाद जाटव

शब्द की खोजबीन हुई। तब से आगरा की सम्पूर्ण चमार जाति अपने को जाटव कहती है। आगरा ने राजस्थान, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों का नेतृत्व किया है, इसलिए इन इलाकों के लोगों ने भी अपने को जाटव कहना आरम्भ किया। हरियाणा के चमार, चमार शब्द में ही सम्मान एवं इज्जत महसूस करते हैं, तो वे आज भी अपने को चमार कहलवाना पसन्द करते हैं, लेकिन इनमें से एक वर्ग ऐसा है, जो हरियाणा की जाट जाति के गोत्रों को लिखकर अपनी जाति छिपाकर अपनी झेंप मिटाते हैं।

उत्तर भारत में चमारों की अनेक उपजातियां हैं, जैसे ग्वालियर के गुलिया, मेरठ और सहारनपुर के चाह्मण, कानपुर की ओर के कुरील, पुराने जूते ठीक करके पोलिश करने वाले मोची, कच्चे चमड़े की देहाती जूतियां बनाने वाले रैदासी और मरे हुए जानवर को उठाने व उसका चमड़ा उतार कर पकाने वाले रंगिया कहे जाने लगे। चमारों में जाटव जाति अपने आपको सबसे ऊंची जाति समझती है। उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि ये लोग पके हुए चमड़े के अच्छे किस्म के जूते बनाते हैं। इसके अतिरिक्त ये लोग उन व्यवसायों को भी करते हैं, जिन्हें सवर्ण किया करते हैं। आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से इनका स्थान अन्य चमारों एवं दलितों से बहुत अच्छा है। ये लोग उच्च शिक्षा प्राप्त एवं आई.ए.एस., आई.पी.एस., पी.सी.एस, न्यायधीश, एडवोकेट, इन्जीनियर, डाक्टर, प्रोफेसर, शिक्षक आदि हैं। इसलिए जाटवों का स्तर बहुत ऊंचा उठ चुका है। अब तो सवर्ण विशेषकर ब्राह्मण अपनी लड़कियों की शादियां जाटवों के लड़कों से करने लगे हैं। इसलिए जाटवों में ब्राह्मणवाद का आना स्वाभाविक बात है। इसलिए जाटव चमारों की अन्य उपजातियों से रोटी-बेटी का सम्बंध नहीं रखते।

चमारों का एक वर्ग ऐसा था जो चमड़े के काम को छोड़कर कपड़े बुनने का काम करने लगा। इस कारण इस वर्ग के चमारों ने अपने आपको चमर जुलाहा कहना शुरू कर दिया और ये लोग चमड़े का काम करने वाले चमारों से अपने आप को ऊंचा समझने लगे। चमारों का एक वर्ग चमड़े की अटैची, कमर की बैल्ट, पर्स, घोड़ों की जीन एवं चाबुक आदि बनाने लगे, उन्होंने अपने आपको सक्सैना कहना आरम्भ कर दिया और चमारों से रोटी-बेटी का सम्बंध छोड़ दिया। कुमारी प्रेम नामक एक लड़की मेरे विभाग में परियोजना अधिकारी के पद पर कार्य करती थी। एक दिन बिना पूछे हुए मुझ से कहने लगी, "सर! आप मेरी जाति जानते हैं?," मैंने उत्तर दिया, "मैं कभी किसी से जाति सम्बंधी प्रश्न नहीं करता। यह मेरे सिद्धांत के खिलाफ है। मैं तो इतना जानता हूं कि तुम्हारी जाति इंसान है। इससे अधिक मुझे जानने की जरूरत नहीं है।" फिर भी उसने कहा, "सर! मैं चमर जुलाहा जाति की हूं, जो चमारों से ऊंची होती है।" मैं उसकी बेवकूफी की बात पर मन ही मन दुःख अनुभव करता रहा। चमार जुलाहे अक्सर

हरियाणा में पाए जाते हैं, जो चमारों से अपने आपको ऊंचा समझते हैं। इन पर भी ब्राह्मणवाद का भूत सवार हो चुका है।

बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर के बौद्ध बनने पर उत्तर भारत के अनेक जाटव और चमार बौद्ध हो गए, लेकिन बड़े दुःख की बात यह है कि वे ब्राह्मणवाद की पागलपन की मानसिकता से बाहर नहीं निकल पाए। इस कारण वे रोटी-बेटी के सम्बंध जाटवों में ही करते हैं। इसका मतलब यह है कि या तो वे बौद्ध नहीं बन पाए हैं, और यदि वे अपने को बौद्ध कहते हैं, तो पाखण्डी बौद्ध हैं। मेरे दो बौद्ध परिवार भली प्रकार के जानकार हैं। लेकिन बौद्ध बनने के पूर्व क्रमशः एक कोली और दूसरे बाल्मिकी जाति के थे। उन दोनों परिवार की लड़कियों ने दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि बौद्ध अध्ययन में प्राप्त की थी। उनके पिता चाहते थे कि उन लड़कियों की शादियां बौद्धों में की जाएं, लेकिन बौद्धों को मैंने अक्सर यह कहते सुना था, "अरे! वह कोली है, अरे! वह भंगी है, हम कैसे अपने लड़कों की शादी उनसे कर लें।" यह उन बौद्धों की गलती थी। यह गलती उस ब्राह्मणवाद की है, जो उनके सिर पर भूत बन कर बैठा हुआ है, जो अत्यधिक खतरनाक है।

जो जाटव बौद्ध नहीं बन पाए हैं, उन्होंने हीनता की भावना के कारण अपनी जाति को छिपाना शुरू कर दिया है। आगरा में कुछ जाटव अपने को त्रिवेदी, द्विवेदी, भारद्वाज, सक्सैना, वर्मा आदि लिखने लगे हैं। आगरा की जाटव जाति के एक व्यक्ति दिल्ली के सदर बाजार में रहते थे और वह अपने नाम के पीछे अग्रवाल लगाते थे। मेरे पूछने पर उन्होंने बताया, "क्योंकि वह आगरा के रहने वाले हैं, इसलिए अग्रवाल लिखते हैं।" आगरा के जाटवों के वोटों से एक बनिया सज्जन मेयर बन गए थे और वह अपने आप को गुप्ता लिखते थे, एक दिन मेरे पूछने पर उन्होंने बताया, "मैं भी जाटव हूं, चूंकि जाति छिपाकर गुप्त रहा हूं, इसलिए यह शब्द अंग्रेजी में लिखने से गुप्ता हो जाता है।" नगला भवानी सिंह का एक परिवार तो अपनी जाति छिपाकर लगभग 70-80 वर्षों से रहता है और उसके सभी सदस्य वर्मा बन चुके हैं। इसी गांव का एक जाटव परिवार ब्राह्मण बन गया है, जो मेरठ में स्थायी रूप से रहता है। उस परिवार के रोटी-बेटी के सम्बंध ब्राह्मणों में ही होने लगे हैं। उनके सभी रिश्तेदार ब्राह्मण हैं। आगरा की बोदला बस्ती के कई परिवार मुम्बई में जाकर बस गए हैं और वे अपनी जाति छिपाते-छिपाते सौ सैकड़ा ब्राह्मण बन गए हैं और उनके रोटी-बेटी के सम्बंध भी ब्राह्मणों में होते हैं, यह बहुत ही निम्न स्तर की बात है। असलियत में यह एक मनोरोग एवं पागलपन है, जिसका मुख्य कारण ब्राह्मणवाद है।

दलितों में सभी जातियों ने ब्राह्मणवाद की मानसिकता के कारण अपनी जातियों का नाम पुकारने में बुरा महसूस करते हैं। धोबी को धोबी, नाई को नाई, भंगी को भंगी, माली को माली, कोली को कोली, चमार को चमार, गड़रिया को गड़रिया, कांछी को कांछी कहलाना पंसद नहीं करते। ऐसा करने से इनमें

हीनता की भावना पैदा हो जाती है। इसलिए धोबियों ने ऐंठा ठाकुर, नाइयों ने न्यायी ठाकुर, भंगियों ने बाल्मिकी, मालियों ने सैनी, कोलियों ने तन्तुवाय वैश्य, चमारों ने कबीरपंथी, रैदासी गड़रियों ने पाल एवं कांछियों ने कुशवाहा व जाटव कहना शुरू कर दिया। आश्चर्य और दुःख की बात यह भी है कि आर्थिक, राजनीतिक और शैक्षणिक स्तर समान होने के कारण ये सभी दलित वर्ग में आते हैं एवं वैदिक व हिन्दू धर्म के अनुसार ये शूद्र वर्ण में इनकी गिनती होती है। फिर भी ब्राह्मणवाद इन सभी जातियों में कूट-कूट भरा हुआ है, जिसके कारण ये जातियां इतनी भयंकर मनोरोगी बन चुकी हैं कि वे एक दूसरे से घृणा व द्वेष की भावना एवं छुआछूत का व्यवहार करती हैं। अब स्थिति यह है तो आपस में रोटी-बेटी की बात तो स्वप्न में भी नहीं सोची जा सकती। इस प्रकार दलित जातियों में भी ब्राह्मणवाद भयंकर रूप से पाया जाता है, जो उनके अस्तित्व और विकास के मार्ग में बहुत बड़ा रोड़ा है।

भारत के कम्युनिस्टों में ब्राह्मणवाद

यह बड़े ही दुःख एवं आश्चर्य की बात है कि भारत में लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या गरीब एवं गरीबी के स्तर से नीचे रहती है। इसके अतिरिक्त लगभग 20 प्रतिशत लोगों को गरीब कहा जा सकता है। 60 प्रतिशत जनसंख्या को पेट भरने के लिए चटनी से सूखी व बासी रोटी, तन ढ़कने के लिए फटे-पुराने कपड़े और सिर ढ़कने के लिए टूटी झोंपड़ी नहीं मिल पाती। इनके लिए पीने के लिए स्वच्छ पानी नहीं है। ये लोग उन तालाबों, पोखरों एवं गड्ढ़ों में से गंदा पानी पीने के लिए मजबूर हैं, जिनमें गाय, भैंस, कुत्ते, बिल्ली, भेड़, बकरी पानी पीते हैं और सूअर लेटे हुए देखे जा सकते हैं। इस गन्दे पानी में कीड़े-मकौड़े भी देखे जा सकते हैं। इसके अलावा इनके लिए शिक्षा की व्यवस्था न होने के कारण ये लोग निरक्षर एवं अंगूठा टेक रह जाते हैं। बीमार पड़ने पर दवाई के अभाव में ये लोग जानवरों की तरह तड़फ-तड़फ कर मर जाते हैं। दूध, दही, घी, मक्खन और फल आदि को तो सपने में भी नहीं देख पाते होंगे। यह स्थिति है भारत के गरीब लोगों की।

भारत में गरीबी का नंगा नाच साफ तौर पर देखा जा सकता है। इन गरीबों में पूरी जनसंख्या दलितों, शोषितों, कमेरों और पिछड़ों की है। अब ज्वलंत प्रश्न यह पैदा होता है कि भारत में दलितों, शोषितों व कमेरों की इतनी भारी एवं अधिक जनसंख्या होने पर भी यहां साम्यवाद क्यों नहीं पनप पाया? जबकि यहां की जमीन साम्यवाद के अनुकूल है। इसका तात्पर्य यह है कि या तो साम्यवाद में कोई बुनियादी कमी या खोट है या इसके नेताओं में। इस प्रश्न पर विचार करने की सख्त जरूरत है। भारत में लगभग 50 वर्ष तक कांग्रेस एवं उसके बाद लगभग 10 वर्ष तक अन्य विरोधी दलों के गठबंधन का शासन रहा। जो भी दल भारतीय सरकार में रहे, वे शतप्रतिशत पूंजीवाद एवं ब्राह्मणवाद के समर्थक एवं अंधभक्त रहे। जब-जब इन दलों की सरकारें बनीं और उनमें जो मंत्री, गवर्नर एवं उच्चपदों पर नियुक्तियां की गईं, वे लगभग सभी पूर्व राजे-महाराजे, नवाब, जमींदार, जागीरदार, और बड़े-बड़े उद्योगपति बनाए गए। कहने का तात्पर्य यह है कि साठ वर्ष की आज़ादी के दौरान कांग्रेस, जनसंघ, बीजेपी आदि सभी दलों का वर्ग चरित्र एक ही रहा। कांग्रेस सांपनाथ रही तो अन्य दल नागनाथ। दलितों, शोषितों, कमेरों और पिछड़ों को सत्ता के गलियारों से दूर ही रखा। सत्ता हमेशा मुट्ठी भर लोगों के साथ में रही। ये सभी दल दलितों, शोषितों व कमेरों की समस्याओं के समाधान और उनके कल्याण के प्रति तनिक भी संवेदनशील नहीं देखे गए।

भारत के दलित, शोषित एवं कमेरे चक्की के दो पाटों के बीच में पिस रहे हैं। पहले तो वे जातिवाद, ऊंच-नीच, भेदभाव व छुआछूत के शिकार रहे, तो दूसरे पूंजीवाद के कारण शोषित बना दिए गए, जिससे इनका जीवन जानवरों एवं कीड़े-मकौड़ों के समान हो गया। जब दुनिया में साम्यवाद का तूफान आया, तो उससे भारत भी अछूता नहीं रह सका। भारत की आजादी की लड़ाई के समय शहीदे आज़म सरदार भगत सिंह और उनके साथियों ने भारत में साम्यवादी शासन की स्थापना करने का स्वप्न देखा था। लेकिन उस समय के नेताओं की कुटिल चालों और षड्यंत्रों ने उन बहादुर शहीदों के स्वप्न को पूरा नहीं होने दिया और आखिर भारत मां के उन महान सपूतों को आजादी की लड़ाई में शहादत देकर अपने प्राण न्यौछावर करने पड़े और साम्यवाद की स्थापना का स्वप्न धूमिल हो गया।

दलितों, शोषितों और कमेरों के लिए बुरी बात यह रही कि आजादी की लड़ाई का नेतृत्व खिसक कर महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल जैसे ब्राह्मणवादियों के हाथों में चला गया, जो पूंजीपतियों और ब्राह्मणवाद के कट्टर समर्थक थे। कांग्रेस के ये सभी नेता पुराने राजे-महाराजे, नवाबों, जागीरदारों, जमींदारों और पूंजीपतियों के शुभचिन्तक, परोक्ष रूप से चमचे, कठपुतली और दलाल थे। इस कारण कांग्रेसी नेताओं का उनकी ओर झुकाव होना स्वाभाविक हो गया था और जिसे भारत की आजादी के साठ वर्ष के बाद भी देखा जा सकता है। कांग्रेसी नेताओं ने दलितों, शोषितों एवं कमेरों को मीठी-चुपड़ी बातों में लगाकर झुनझुना पकड़ा दिया, जिसे लेकर वे अपनी मूल समस्याओं को भुलाकर अब भी बजाने में लगे हुए हैं।

मूल रूप में उस समय साम्यवाद की विचारधारा भारत में साम्यवादी रूस से आई थी और वहीं से वह चीन देश में पहुंची। साम्यवाद का संस्थापक कार्ल मार्क्स को माना जाता है। कार्ल मार्क्स के सिद्धांत का प्रयोग रूस में कामरेड लैनिन, कामरेड स्टालिन एवं उनके गिने चुने साथियों ने किया था, जो पूरी तरह सफल रहा। जिसका नतीजा यह रहा कि कुछ ही वर्षों में रूस दुनिया का सशक्त और सम्पन्न राष्ट्र होकर उभरा, जिससे अमरीका भी कन्नी काटता था। लेकिन कुछ वर्षों के बाद रूस की साम्यवादी व्यवस्था में पूंजीवादी व्यवस्था पर विश्वास करने वाले नेताओं ने घुसपैठ शुरू कर दी, जिसका नतीजा यह निकला कि जिस महान् देश रूस में साम्यवाद का झण्डा बड़ी शान-शौकत के साथ फहराता उसी देश से उसे उखाड़कर फैंक दिया गया। यह सब साम्यवाद के दुश्मनों की चाल का नतीजा था।

चीन में साम्यवाद का नेतृत्व कामरेड माओ के हाथों में रहा। कामरेड माओ साम्यवाद के लिए पूरी तरह समर्पित थे और उन्होंने पूंजीवादी देशों की विचारधारा से समझौता नहीं किया। माओ ने बड़ी ईमानदारी, मेहनत और बहादुरी के साथ चीन में समर्पित भावना से साम्यवाद की स्थापना के लिए जिद्दोजहद के साथ संघर्ष किया और साम्यवादी क्रांति को सफल बनाया। आज दुनिया के साम्यवादियों के लिए चीन एक

आदर्श देश है। साम्यवाद पर चलने के कारण चीन दुनिया में आर्थिक एवं सामरिक दृष्टि से एक सशक्त एवं आदर्श देश माना जाता है। साम्यवाद पर चलने के कारण ही वहां का राष्ट्रीय चरित्र अन्य देशों की अपेक्षा उच्चकोटि का है।

भारत की जमीन एवं जलवायु साम्यवाद के बीज को उगाने, उसके विकसित होकर मजबूत एवं बड़ा वृक्ष बनने के लिए काफी अनुकूल थी। लेकिन दुःख की बात यह है कि भारत में प्रच्छन्न पूंजीवादी लोग एवं ब्राह्मणवाद के कट्टर अनुयायी साम्यवाद को हाइजैक करके ले उड़े। इस कारण यह महान् विचारधारा भारत की मिट्टी के अनुकूल होते हुए भी सफल नहीं हो पाई और पूरी तरह असफल रही। उसका सबसे बड़ा कारण यह रहा कि बहुत से ब्राह्मणवादी गीदड़, शेर की खाल ओड़कर घुसपैठ कर गए और वे पूंजीवादी बनकर मठाधीश हो गए। जिस कारण इस महान आंदोलन को ब्राह्मणवाद की दीमक लग गई।

कार्ल मार्क्स के समाज एवं देश में वर्ण-व्यवस्था, जातिवादी भेदभाव एवं छुआछूत नहीं थे। उनके समाज में मनुष्य दो वर्गों में विभाजित था, एक श्रमिक दूसरा उनका मालिक पूंजीपति अर्थात् एक शोषित तो दूसरा शोषक। बड़े-बड़े कारखानों के मालिक पूंजीपति कमेरों का शोषण व उत्पीड़न किया करते थे। इसी शोषण से बचाने के लिए मार्क्स ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ 'दी कैपीटल' लिखा जिसमें उन्होंने अपने सिद्धांत को विस्तृत रूप में प्रस्तुत किया। इसलिए कार्ल मार्क्स ने कमेरों को, जिनकी कोई जाति नहीं होती, केवल वर्ग होता है उनको शोषण से बचाने की बात कही। रूस की तरह चीन की भी वही स्थिति थी, इसलिए वहां भी साम्यवाद पूरी तरह सफल रहा।

जब रूस और चीन में साम्यवादी क्रांति चल रही थी, उस समय भारत के कुछ सम्वेदनशील नेताओं का ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ, जिनमें शहीदे आजम भगत सिंह, महान् रैडीकल ह्यूननिस्ट कामरेड एम.एन. रॉय आदि जैसे नेता सम्मिलित थे, जिन्होंने भारत में साम्यवादी विचारधारा लाने का स्वप्न देखा था। लेकिन भारत की आजादी की लड़ाई महात्मा गांधी, सरदार पटेल एवं जवाहर लाल नेहरू जैसे नेताओं के हाथों चली गई। कांग्रेस के लगभग सभी नेता ब्राह्मणवाद के रास्ते पर चलने वाले और पूंजीवाद के समर्थक एवं सहयोगी थे। भारत के आजाद होने तक यह पूरा स्वतंत्रता आन्दोलन ऐसे ही समझौतावादी नेताओं के हाथ में रहा, जिन्होंने भारत के पुराने राजे-महाराजे, नवाबों, जागीरदारों, जमींदारों और पूजीपतियों से आन्तरिक समझौता कर लिया, जिसका नतीजा यह हुआ कि भारत के आज़ाद होने पर, जो सत्ता भारत के दलितों, शोषितों, कमेरों और पिछड़ों के हाथों आनी थी, वह सोचे समझे षड़यंत्र के फलस्वरूप पूंजीपतियों और ब्राह्मणवादियों के हाथों में चली गई और दलितों, शोषितों एवं कमेरों का शोषण, उत्पीड़न व अन्याय ज्यों का त्यों बना रहा। जो दलित व शोषित पहले गुलाम थे, वे आज भी गुलाम हैं।

भारत में कुछ प्रगतिशील बुद्धिजीवियों को साम्यवादी विचारधारा ने प्रभावित

किया। रूस और चीन में वर्ण-व्यवस्था, जातिवादी, भेदभाव और छुआछूत नहीं थी, बल्कि वहां पर वर्ग भेद था। इसलिए इन देशों में वर्ग-संघर्ष के आधार पर क्रांति सफल हो गई। लेकिन भारत में यह प्रयोग सफल नहीं हो सका। उसका मुख्य कारण यह था कि यहां पर वर्ग भेद के साथ-साथ वर्ण-व्यवस्था, जातिवाद, भेदभाव और छुआछूत का पागलपन भी मौजूद है, जो वर्गों की अपेक्षा अधिक सशक्त एवं ताकतवर है। भारत में ब्राह्मणवाद एवं जातिवाद यहां के नेताओं के खून की प्रत्येक बूंद एवं जीन्स में समाया हुआ है। जब कभी कोई राजनेता सोचता है या विचार करता है, उसके पहले वह अपनी जाति के हितों का ध्यान रखता है।

यहां पर मैं कुछ ऐसे ब्राह्मणों के उदाहरण देना चाहूंगा, जो तथाकथित साम्यवादी रहे हैं। कामरेड अमृतपाद डांगे प्रसिद्ध साम्यवादी नेता थे और वह महाराष्ट्र के निवासी थे। यह सामान्य मान्यता रही है कि साम्यवादी नेता दलितों, शोषितों एवं कमेरों का शुभचिन्तक और समर्थक होता है और वह उनके शोषण के विरुद्ध संघर्ष करता रहता है। बाबासाहेब डॉ. बी.आर. आंबेडकर मुम्बई से लोकसभा का चुनाव लड़ रहे थे। उस समय कामरेड डांगे उनके चुनाव क्षेत्र में बाबासाहेब के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। कामरेड डांगे ने बाबासाहेब के विरुद्ध काफी ज़हर उगला और कहा कि आंबेडकर को वोट मत देना, क्योंकि वह महार है। इतना ही नहीं, बल्कि कामरेड डांगे की विचारधारा तो उस समय नंगी हो गई, जब उन्होंने मुम्बई की एक आम-सभा में कहा था कि वह पहले ब्राह्मण हैं और बाद में साम्यवादी। कामरेड डांगे साम्यवादी विचारधारा एवं ब्राह्मणवादी पाखण्ड को साथ-साथ रखना चाहते थे। वह लाल टाई और जनेऊ एक साथ धारण करने वाला जन्तु था। यह उनके मानसिक दिवालिएपन का प्रभाव था। कामरेड डांगे ने अपने अंतिम दिनों में अपनी सुपुत्री को वेदान्त और उसकी प्रशंसा में एक पुस्तक 'डिकटेट' कराई थी, जो बाद में छापी गई। इससे निष्कर्ष प्राप्त होता है कि कामरेड डांगे साम्यवाद और ब्राह्मणवाद के मानसिक संघर्ष के मनोरोगी हो गए थे।

कामरेड डांगे की तरह कामरेड डांगे नम्बूदरीपाद भी प्रसिद्ध साम्यवादी नेता थे और जो जाति से ब्राह्मण थे। जब बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर की मूर्ति लोकसभा के प्रांगण में लग रही थी, उस समय कामरेड नम्बूदरीपाद ने प्रोफेसर बुद्धप्रिय से अपने मन में छिपे हुए ब्राह्मणवाद से प्रेरित होकर कहा, "मौर्य जी! डॉ. आंबेडकर की मूर्ति को संसद के मैदान में लगाने से कोई लाभ नहीं है। इससे दलितों और शोषितों में अंधविश्वास और व्यक्ति पूजा को बढ़ावा मिलेगा, जो ठीक बात नहीं है।" यह सुनकर प्रोफेसर मौर्य जी ने उत्तर दिया, "कामरेड रूस में मार्क्स, लैनिन एवं स्टालिन आदि अनेक साम्यवादी नेताओं की मूर्तियां लगाई जा रही हैं। उनके बारे में आपकी यह राय नहीं है। वहां भी तो व्यक्ति पूजा को बढ़ावा मिल रहा है।" यह सुनकर कामरेड नम्बूदरीपाद चुप हो गए। असलियत यह है कि कामरेड नम्बूदरीपाद स्वयं भी एक

कट्टर ब्राह्मण थे, तो उन्हें एक दलित की मूर्ति और वह भी संसद के प्रांगण में क्यों पसंद आती? असलियत यह है कि कामरेड डांगे एवं कामरेड नम्बूदरीपाद जैसे साम्यवादी नेता पाखण्डी साम्यवादी एवं दलित विरोधी नेता पहले थे और बाद में साम्यवादी। यथार्थ में भारत के साम्यवादी शेर की खाल ओढ़े हुए गीदड़ हैं और ब्राह्मणवाद के अंधसमर्थक ऐसे ही नकली साम्यवादियों के आचरण के कारण दलित, शोषित और कमेरे साम्यवाद से भय खाकर दूर भाग गए। यहां एक बात को साफ करने की जरूरत है कि इन दोनों नेताओं की जबान पर तो था साम्यवाद और व्यवहार में था पूंजीवाद।

अब आज के साम्यवादी नेताओं को लीजिए। कामरेड बुद्धदेव भट्टाचार्य बंगाल के मुख्यमंत्री हैं। भट्टाचार्य जाति एवं वर्ण से ब्राह्मण होते हैं। अब यह सवाल पैदा होता है कि जब वह साम्यवादी मुख्यमंत्री हैं, फिर अपने नाम के बाद जाति वाचक शब्द भट्टाचार्य क्यों लगाते हैं? इसी प्रकार पूर्व मुख्यमंत्री कामरेड, ज्योतिबसु, बीस वर्ष बंगाल के मुख्यमंत्री रहे थे और वह भी अपने नाम के पीछे बसु लिखते हैं, जो कि जाति सूचक शब्द होता है, जो ब्राह्मणवाद का पोषक होता है। अभी कुछ माह पूर्व बंगाल के एक साम्यवादी मंत्री ने बड़े गर्व से कहा था कि वह ब्राह्मण पहले है बाद में कम्युनिष्ट। बंगाल में जितने भी तथाकथित साम्यवादी नेता हैं, वे सभी काली एवं दुर्गा की पूजा करते हैं, क्या यह पूजा साम्यवाद के अनुकूल है?

भारत में लाखों साम्यवादी नेता हैं, जो अपने नाम के साथ शर्मा, वशिष्ठ, पराशर, चौहान, वर्मा, गुप्ता, अग्रवाल आदि अपनी जातियां लिखते हैं, और अपने पुत्र व पुत्रियों के शादी-विवाह भी अपनी जाति में ही करते हैं। भारत में वर्ग के साथ-साथ वर्ण और जातियां भी हैं। इसलिए भारत में साम्यवाद को लागू करते समय, अगर यहां के साम्यवादी ईमानदार होते तो वे वर्ग को समाप्त करने के साथ-साथ जाति व्यवस्था को भी समाप्त करने के लिए संघर्ष में पूंजीवाद के द्वारा कमेरों के ऊपर होने वाले शोषण को समाप्त करने के लिए संघर्ष करते। लेकिन ब्राह्मणवाद के द्वारा दलितों एवं शोषितों के ऊपर होने वाले शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार और अन्याय को चुपचाप देखते रहे और तथाकथित साम्यवादियों के कान पर जूं तक नहीं रेंगी। इससे यह सिद्ध होता है कि भारत के तथाथित साम्यवादी भी ब्राह्मणवाद के चक्कर में फंस चुके हैं, जो बड़ी ही आपत्तिजनक एवं शर्मनाक बात है।

कांग्रेस, भाजपा एवं बसपा में ब्राह्मणवाद

भारत में ब्राह्मणवाद ऐसा जहर है जो हरेक ब्राह्मणवादी मनुष्य में भरा रहता है और जहां ऐसा जहर वाला भारतीय पहुंच जाता है, वहां यह विष अपना प्रभाव छोड़ देता है। भारत के सभी राजनीतिक दलों का जन्म और विकास इसी देश में हुआ है। किसी राजनीतिक दल के गठन एवं अस्तित्व का महत्वपूर्ण अंग जनता होती है। जिस प्रकार ईंटों, लोहा-सीमेन्ट आदि के बिना मकान नहीं बन सकता, उसी प्रकार आदमियों और जनता के बिना किसी भी राजनीतिक दल का जन्म नहीं हो सकता। भारत की शतप्रतिशत जनता, वर्णों, जातियों, उपजातियों, गोत्रों आदि में बंटी हुई है। इसके साथ ही साथ भाषा एवं क्षेत्रीय आधार पर लोग विभाजित हैं। ऐसी स्थिति में जब कोई राजनीतिक दल गठित किया जाता है अथवा कोई व्यक्ति किसी दल का सदस्य बनता है, तो वह अपने साथ अपनी जाति, जातिगत कुंठाओं, भेदभाव की भावना, जातिगत स्वार्थों एवं परम्परागत छुआछूत की मानसिकता को भी ले जाता है, जिससे दल के कुछ सदस्यों में उच्चता की और कुछ में निम्नता की भावना का पैदा होना स्वाभाविक बात है। इस प्रकार भारत के सभी राजनीतिक दलों के सदस्य किसी न किसी रूप में इस कुंठा से ग्रसित पाए जाते हैं।

भारत में सभी राजनीतिक दलों, चाहे वह कांग्रेस हो अथवा भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जिसमें बहुजन समाज पार्टी (बसपा) हो अथवा आर.जे.डी, कहने का तात्पर्य है कि पूरब से पश्चिम एवं उत्तर से दक्षिण तक का कोई भी छोटा या बड़ा दल हो, जिसमें में ब्राह्मणवाद की बीमारी महामारी के रोग का रूप धारण नहीं कर गई हो। नीची जाति का नेता ऊंची जाति के नेता के पैर छूकर यह साबित करना चाहता है कि "महाराज! हम तो आपके ही पिल्ले हैं, कृपया हमारे ऊपर अपना आशीर्वाद एवं नजरें नियात बनाकर रखिए।" कभी-कभी नीची जाति का नेता, जैसे बाबू जगजीवन राम, कुमारी मायावती, माननीय मीरा कुमार, मा. सुशील शिन्दे, मा. माता प्रसाद, मा. महावीर प्रसाद आदि जब ऊंचे कुर्सी पर बैठ जाते हैं तो बड़े से बड़े ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य, जो पीठ पीछे उन्हें अपशब्द एवं चमार कह कर गाली देते हैं, वे अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए उनके पैर छू कर आशीर्वाद लेते हुए दिखाई देते हैं। यह सब ब्राह्मणवाद का प्रभाव है।

दलित समाज में दो ऐसे महान् नेता हुए, जो चरणस्पर्शवादी पंडा राजनीति से घृणा करते थे। उनमें से एक थे, परिनिर्वृत डी. संजीवैया जी और दूसरे थे प्रोफेसर बुद्धिप्रिय मौर्य जी। डी. संजीवैया जी और मेरा निकट का सम्बंध था। वह ऐसे महान

नेता थे कि एक बार वह मुख्यमंत्री, केन्द्र में केन्द्रिय मंत्री और अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष भी रहे थे। मैं उनकी महानता और मानवता से इतना प्रभावित था, जिसको मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। मैं अक्सर उनके निवास पर शिष्टाचार की मुलाकात करने जाया करता था और उनसे मुलाकात के बाद कुछ न कुछ सीखने के लिए मिलता था। मैंने कभी भी किसी आदमी को उनके पैर छूते हुए नहीं देखा और यदि कोई छूने की कोशिश भी करता था, तो वह पीछे हट कर ऐसा करने के लिए मना कर दिया करते थे। यही आदत प्रोफेसर बुद्धिप्रिय मौर्य जी की थी। जब कभी कोई व्यक्ति मौर्य जी के पैर छूने की कोशिश किया करता था, वह बड़े प्यार से समझा दिया करते थे, "कि अपने माता-पिता के पैर छूओ और उनका सम्मान करो।" एक दिन मैंने पूछा, "प्रोफेसर साहब! ये लोग तो आपके प्रति आदर, सम्मान व इज्जत करने के लिए आपके पैर छूते हैं, इसमें को हर्ज तो नहीं है।" यह सुनकर मौर्य जी ने उत्तर दिया, "धर्मकीर्ति जी! आप तो मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक हैं। ऐसा करने से एक के मन में हीनता की भावना एवं दूसरे के मन में उच्चता की भावना पैदा हो जाती है, जिससे उसमें अहंकार एवं घमंड पैदा हो जाता है। इसलिए यह परम्परा ठीक नहीं है। माता-पिता, गुरुओं एवं परिवार में बड़ों के पैर छूना ठीक होता है। इसमें व्यक्ति का सम्यक विकास होता है।" थोड़ी देर के बाद मौर्य जी ने पुनः कहा, "मेरा सिद्धांत है, कि अपने से किसी को नीचा मत समझो ओर न अपने से किसी को ऊंचा।" मुझे प्रोफेसर मौर्य जी की बात शत प्रतिशत ठीक लगी।

ब्राह्मणों एवं क्षत्रियों में चरण-स्पर्श की दिमागी बीमारी भयंकर रूप से फैली हुई है। ब्राह्मण तो पैर छुवाने को अपना जन्म सिद्ध अधिकार समझते हैं। पंडित गोविन्द वल्लभ पंत, मा. नरसिंह राव, मा. जीतेन्द्र प्रसाद और अन्य सभी ब्राह्मण कांग्रेसी नेताओं में यह रोग व्यापक रूप से फैला हुआ था। उसके बाद यह रोग खिसक कर क्षत्रियों, वैश्यों, जाटों, यादवों में आ गया। यह यहीं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह रोग पुनः खिसक कर चमारों और भंगियों के कांग्रेसी नेताओं में आ गया। मा. जगजीवन राम में यह रोग भयंकर था। मा. जगजीवन राम जब सोफे पर बैठते थे, तो अपने पैरों को लम्बा करके बैठते थे। इसका मतलब जो भी आदमी, चाहे किसी भी जाति का आता,तो उसे बाबू जगजीवन राम के पैर छूने पड़ते थे। अगर कोई उनके पैर नहीं छूता था, तो वह उसकी तरफ बड़ी टेड़ी निगाह से देखते थे। अब यह मानसिक रोग मा. जगजीवन राम की लड़की माननीय मीरा कुमार और उनके पति मा. मंजुल कुमार में आ गया है।

बाबू जगजीवन राम के समीप के जानकार मा. बिहारी लाल हरित थे। मैंने उनसे इसका कारण पूछा तो मा. हरित ने कहा, "डॉ साहब। बाबू जी इस सम्बंध में कहते हैं कि इन ब्राह्मणों, क्षत्रियों आदि ऊंचि जाति के लोगों ने हमसे और हमारे बाप-दादों से अब तक पैर छुवाए हैं। अब हमारा मौका आ गया है तो हम इसका बदला ले रहे

हैं।" मैंने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, "हरित जी! यह बात तो कीचड़ को कीचड़ से धोने के समान हुई, जो उचित नहीं है।" ऐसा लगता है कि शायद इसी भावना से प्रेरित होकर कुमारी मायावती ऊंचे समझे जाने वाले ब्राह्मणों, क्षत्रियों, बनियों आदि जातियों के युवकों और बुजुर्गों से चरणस्पर्श कराती है। सैद्धान्तिक रूप से चरणस्पर्शवादी राजनीति नैतिक मूल्यों की दृष्टि से उचित नहीं है। इससे ब्राह्मणवाद को बढ़ावा मिलता है, जो मानवता की दृष्टि से उचित बात नहीं है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की नींव ही ब्राह्मणवाद पर निर्भर करती है। इसलिए इस पार्टी का प्रत्येक छुट भैया नेता अपने बड़े नेता के चरण-स्पर्श करता है। मा. अटल विहारी वाजपेयी इन पार्टी के वयोवृद्ध नेता हैं और दूसरे वह ब्राह्मण भी हैं। इससे उनके चरण-स्पर्श भारतीय जनता पार्टी का प्रत्येक नेता करता है। उसके बाद मा. लालकृष्ण आडवाणी का नाम आता है, उनके भी सभी नेता पैर छूते हैं। उसके उपरान्त पार्टी अध्यक्ष मा. राजनाथ सिंह तीसरे नम्बर पर आते हैं, उनके पैर भी सभी लोग छूते हैं, चाहे वे ब्राह्मण ही क्यों न हों। यह क्रम नीचे तक चलता चला जाता है।

इसी तरह की परम्परा बहुजन समाज पार्टी में पाई जाती है। कुमारी मायावती एक दलित जाति की सदस्य हैं, लेकिन उनके पैर आयु में उनसे बड़े व्यक्ति चाहे वे ब्राह्मण हो अथवा क्षत्रिय, वैश्य हो अथवा चमार, यादव हों अथवा धोबी, कुम्हार, कश्यप, गड़रिया आदि सभी कुमारी मायावती के चरण-स्पर्श करते हैं। अब यह परम्परा बहुजन समाज पार्टी में ऊपर से नीचे तक आ गई। लेकिन दुःख इस बात का है कि यह पार्टी ब्राह्मणवाद की कटु आलोचना करके आगे बढ़ी थी। आज वही ब्राह्मणवाद इस पार्टी में पसर रहा है, जिसे औचित्यपूर्ण कदापि नहीं कहा जा सकता।

भारत में आज जितने भी राजनीतिक दल हैं, चाहे वामपंथी हों अथवा दक्षिण पंथी, आज सभी दलों में ब्राह्मणवाद जंगल में आग की तरह फैल रहा है। यथार्थ में यह प्रवृत्ति भारतीय जनतंत्र के लिए बहुत बड़ी खतरे की घन्टी है। जो लोग चापलूस हैं, मक्खन लगाते एवं चमचागीरी करते और बड़े नेताओं की सुबह-शाम आरती उतारते, साष्टांग दंडवत करते, चाहे वे अकल के गधे, महाभ्रष्ट, व्यभिचारी, बलात्कारी, हत्यारे, चोर-डकैत, ही क्यों न हों वे चरण-स्पर्शवादी राजनीति अपना कर आगे बढ़ जाते हैं। विधायक, सांसद व मंत्री एवं करोड़पति व अरबपति बन जाते हैं। इसके विपरीत जो लोग आत्मसम्मानी हैं, योग्य हैं, ईमानदार हैं, कर्मठ हैं, जनतांत्रिक हैं वे इस दौड़ में पिछड़ जाते हैं।

लोग नेताओं के चरण-स्पर्श इसलिए करते हैं कि चुनाव में टिकटों का वितरण होते समय उनका विशेष ध्यान रखा जाए। अब यह ब्राह्मणवादी मानसिकता चमारों, भंगियों, खटीकों आदि में भी आ गई है, जो भारतीय जनतंत्र एवं राष्ट्र के विकास में बहुत खरतनाक है। यदि राजनीतिक दलों को सच्चे जनतंत्र की स्थापना करनी है, तो उनमें फैल रही ब्राह्मणवादी अर्थात् भेदभाव व ऊंच-नीच की भावना को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करना होगा।

ब्राह्मणों ने जाटों और अहीरों को बहुत बड़ी गाली दी

हिन्दू धर्म के पुराणों, स्मृतियों और गीता में अनेक ऐसे संदर्भ आए हैं, जहां पर जिन जातियों ने ब्राह्मणवाद के विरुद्ध बिगुल फूंक दिया अथवा वे ब्राह्मणवाद के जाल में नहीं फंसे, वहीं पर ब्राह्मणों ने उन जातियों का अपमान करना और गाली देना आरम्भ कर दिया। उनमें से जाट और अहीर जातियां भी थीं, जिनके अपमान के बारे में नीचे दिया जा रहा है।

जाट जाति का प्रादुर्भाव शकों से हुआ था। सम्राट कनिष्क शक थे, जो बाद में बौद्ध हो गए। शक लोग अहिंसक, प्रगतिशील, अंधविश्वासों और पाखण्डों से दूर थे। वे ब्राह्मणों के यज्ञों से दूर रहते थे और उन्हें दान-दक्षिणा भी नहीं देते थे। पहले इनकी बहादुरी के कारण इन्हें क्षत्रिय बना दिया था, बाद में शूद्र बना दिया गया, मनु का कथन है, "पौण्डू आदि नाम के देशों में उत्पन्न पौण्ड्रक, चौड, द्रविण, काम्वोज, पवन, पारद, पल्हव, चीन, किरात, दरद, खश आदि क्षत्रिय जातियां ही धीरे-धीरे कर्तव्य आचरण न रहने तथा आचार व्यवहार के हीन होने तथा ब्राह्मणों के दर्शन न करने से शूद्र बन गईं"[1]

जाटों की उत्पत्ति का वर्णन ब्राह्मणों ने बड़ा ही अपमान जनक तरीके से दिया है। चौधरी रणजीत सिंह दिल्ली के जमुना पार गांधी हरिजन सीनियर सैकण्ड्री, सीलमपुर में प्रधानाचार्य थे और वह जाट थे। एक दिन उन्होंने बड़े गर्व से कहा, "सर! जाट जाति क्षत्रिय है?" मैंने तुरंत पूछा, "क्यों"? उन्होंने उत्तर दिया, "परशुराम ने क्षत्रियों को 21 बार अपने परशु से काटकर पृथ्वी को क्षत्रिय विहीन कर दिया था। यह देखकर क्षत्राणि बड़ी दुःखी और परेशान हुईं। अपना वंश चलाने के लिए वे ब्राह्मणों के पास वीर्यदान के लिए गईं। ब्राह्मणों ने वीर्यदान किया और उसके बाद उन क्षत्राणियों को पुत्रों की प्राप्ति हुई। उन्हीं पुत्रों की औलाद आज के जाट हैं।" मुझे चौधरी रणजीत सिंह की बात सुनकर हंसी आई और उससे कहा, "जाति बाप की जाति के ऊपर होती है, मां पर नहीं। अगर वीर्यदान ब्राह्मणों ने किया था, तो उसके फलस्वरूप जो औलाद होगी वह ब्राह्मण ही होगी, क्षत्रिय कैसे? अगर आप उसे जाट कहते हैं, तब तो यह बहादुर जाट जाति के लिए बहुत बड़ी गाली हो गई। बाप ब्राह्मण व मां क्षत्राणि तो

1. *मनुस्मृति, 10/43-44*

उसकी संतान वर्ण संकर हुई जिसे सामान्य एवं चलती फिरती भाषा में हरामी कहते हैं।" चौधरी रणजीत सिंह मेरी बात को सुनकर दंग रह गए और ब्राह्मणों को भला बुरा कहकर अपना गुस्सा शान्त किया।

जाटों की तरह ही अहीर जाति अपनी बहादुरी एवं शौर्य के लिए प्रसिद्ध है। मध्य युग में दक्षिण भारत में अहीरों ने कई राज्यों की स्थापना की थी। अहीर भी जाटों की तरह प्रगतिशील और ब्राह्मणवाद के चक्कर में नहीं फंसे थे। इसलिए ब्राह्मणों ने इनको बदनाम करने का भरसक प्रयास किया था। अहीर शब्द आभीर का अपभ्रंश लगता है। मनु आभीर की उत्पत्ति के बारे में कहता है, "ब्राह्मण से उग्रवर्ण पुरुष की कन्या (निस्सन्देह विवाहित) में उत्पन्न का नाम 'आवृत' है। अम्बष्ठ कन्या में उत्पन्न नाम आभीर है और आयोग्वी कन्या में उत्पन्न का नाम 'धिग्वण' है"।[1] विष्णु पुराण में बताया है कि आभीर जाति नगर और ग्राम से दूर नदी-तट पर निवास करती थी। अन्य पुराणों जैसे वायु पुराण एवं मत्सय पुराण में भी इसका उल्लेख मिलता है। हेमचन्द्र ने इसे महाशूद्र के अन्तर्गत रखा है तथा द्वयाश्रय महाकाव्य में ग्रहरिपु को 'आभीर' जाति का बताया गया। वृज प्रदेश में जब जातियों की क्रम में गिनती की जाती है, तो सामान्यतः अहीर के बाद धीवर जाति ही आती है। मनु ने भी इसी क्रम को जारी रखा है।

जब किसी व्यक्ति को अपमानित किया जाता है, तो एक लोकोक्ति अक्सर कही जाती है, 'जिसका जूता उसका सिर।' श्रीकृष्ण को ब्राह्मणों के द्वारा ईश्वर का अवतार बताया गया, जो परम ज्ञानी एवं समदर्शी कहे जाते थे, लेकिन वे जाति के अहीर (आज भी भाषा में यादव) थे। ब्राह्मणों के द्वारा श्रीकृष्ण के मुंह से किस प्रकार वैश्यों, शूद्रों और समस्त वर्णों की स्त्रियों को पाप-योनि कहलवाया गया है, वह सुनिए, श्रीकृष्ण कहते हैं, "हे अर्जुन! मेरी शरण में आकर स्त्री, वैश्य तथा शूद्र भी, जिनकी उत्पत्ति पाप से हुई है परमगति को प्राप्त हो जाते हैं।"[2] इसका अर्थ यह है कि समस्त वर्णों की 50 प्रतिशत स्त्रियां, बचे हुए वैश्य 12.50 प्रतिशत और शूद्र 12.50, कुल मिलाकर यह जनसंख्या 75 प्रतिशत हुई। इसका तात्पर्य यह है कि भारत की 75 प्रतिशत जनसंख्या पाप योनि हो गई। अब 12.50 एवं 12.50 प्रतिशत कुल मिलाकर 25 प्रतिशत ब्राह्मण एवं क्षत्रिय पुण्य योनि बच गए।

इस प्रकार मनु के अनुसार श्रीकृष्ण भी पाप योनि हुए, क्योंकि वे अहीर थे। मनु एवं हिन्दु मान्यताओं के अनुसार अभीर वर्ण संकर थे। शांकर भाष्य में 'पापयोनि' का अर्थ है, जिनका पाप से जन्म हुआ है। मिसेज एनीबेसेन्ट ने इसको

---

1. *मनुस्मृति, 10/15*
2. *भगवदगीता, 9/32*

अंग्रेजी में कहा है 'of the womb of the sin' अर्थात 'पाप के गर्भ के।' देखिए ब्राह्मण का दिमाग कितना शातिर किस्म का है कि उसने एक तीर में दो निशाने मार दिए। श्रीकृष्ण के द्वारा ही समस्त यादवों को पापयोनि घोषित करा दिया गया, जिसमें उनकी जन्म देने वाली असली मां, पालन करने वाली याशोदा, उनकी प्रेमिका राधा, पत्नि रुक्मिणी, सभी गोप एवं गोपिकाओं, कुन्ती आदि सभी महिलाओं को चुटकी वजाते पापयोनि कहला दिया। इतना ही नहीं, इस कथन के अनुसार उनके पिता, चाचा, ताऊ, वह स्वयं ही (श्रीकृष्ण) पाप योनि सिद्ध हो गए। देखिए किस चालबाजी से ब्राह्मणों ने धोखे से समस्त सभी शूद्रों और वैश्यों को पाप योनि श्रीकृष्ण के द्वारा ही कहलवा दिया। यह है ब्राह्मणों का शातिर एवं चालबाज दिमाग।

ब्राह्मणवादी आतंकवाद

यदि विश्व में आतंकवाद की खोज की जाए तो उसकी सबसे पहली पौध भारत में ही दिखाई देती है। जब आर्यों ने प्राचीन काल में सबसे पहले भारत पर आक्रमण किया था, तब उन्होंने यहां के मूल निवासियों की जघन्य एवं पैशाचिक हत्याएं की थीं। उनके मकान जलाए गए और उनके राजाओं के किलों को तोड़कर मिट्टी में मिला दिया गया था। आर्यों ने आतंकवाद को स्थायी बनाने के लिए वर्ण-व्यवस्थाएं आश्रम-व्यवस्था को पैदा किया, जिसे ब्राह्मणवाद के आतंकवाद की नींव कहा जा सकता है। श्रीकृष्ण के कहने पर अर्जुन के द्वारा नाग-यज्ञ और बाद में अर्जुन के ही वंशज परीक्षत के द्वारा किए गए नाग-यज्ञों का सिलसिला जारी रहा। इन नाग-यज्ञों में लाखों नाग जाति के आदिवासियों जो आज के दलितों के पूर्वज थे, उन्हें जीवित आग में जला दिया गया। इनमें बच्चे, जवान, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सभी को भस्म कर दिया गया। ये आर्यों के द्वारा किए गए आतंकवाद का पैशाचिक, जघन्य एवं अमानवीय उदाहरण है, जिसका आज भी ब्राह्मणवादी बखान व प्रशंसा करते हुए गुणगान करते हैं, जब कि इन्हें अपने पूर्वजों के कुकर्मों एवं पैशाचिक व जघन्य अत्याचारों पर शर्म आनी चाहिए।

आज दुनिया के हरेक देश में आतंकवाद किसी न किसी रूप में पाया जाता है, जिसकी लोग आलोचना एवं भर्त्सना करते हैं। आतंकवाद ब्राह्मणवाद की तरह वह पागलपन की मानसिकता है, जिससे अपने धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए घृणा, ईर्ष्या व द्वेष का सहारा लेकर, अपनी बात सिद्धांत एवं मांग मनवाने के हथियारों का प्रयोग किया जाता है और जिसमें भोले-भाले हजारों-लाखों लोग विना मौत मारे जाते हैं। आज दुनिया के अनेक देश चाहे भारत हो अथवा पाकिस्तान, अफगानिस्तान हो अथवा अमरीका, सिरिलंका हो अथवा म्यांमार सभी देशों में आतंकवाद फैला हुआ है।

यदि पैनी निगाह से देखा जाए, तो भारत में ब्राह्मणवाद सबसे बड़ा आतंकवाद है। उसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिक आतंकवादी तो अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के बाद अथवा सरकार की सख्ती एवं दबाव में आकर आतंकवाद को समाप्त कर देते हैं, जिस प्रकार भारत में खालिस्तान की मांग कर रहे आतंकवाद को दबा दिया गया। समय-समय पर आतंकवाद पैदा हुआ और इतिहास के थपेड़ों में आकर समाप्त होता रहा। लेकिन ब्राह्मणवाद एक ऐसा आतंकवाद है, जो अधिकांश भारतीयों के खून, रक्त-की धमनियों, जिन्स, दिल एवं दिमाग में व्याप्त है, जो प्रत्येक भारतीय के व्यवहार में दिखाई देता है।

ब्राह्मणवाद का आतंकवाद भारत के सभी प्रदेशों में पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण और कौने-कौने तक फैला हुआ है। इस आतंकवाद की मानसिकता से भारत के अधिकांश व्यक्ति, हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, जैन बौद्ध, पारसी आदि थोड़े बहुत इसकी चपेट में आ चुके हैं। भारत दुनिया का महान् देश है, लेकिन ब्राह्मणवाद के आतंकवाद से यह इतना पीड़ित है कि यह सर्वनाश के कगार पर पहुंच चुका है। असलियत यह है कि इसे देश कहने में शर्म आती है।

मनु को यदि हिन्दुओं के आतंकवाद का मसीहा या सरगना कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहां पर मैं मनु के आतंकवाद के कुछ उदाहरण देकर यह प्रमाणित करना चाहूंगा कि मनु के आतंकवाद के दुष्परिणाम आज भी भारत में दिखाई देते हैं। आज हिन्दुओं के समाज में दहेज-प्रथा का भारी प्रचलन है। जिस लड़की के माता-पिता अपनी सुपुत्री की शादी में कम दहेज देते हैं, तो उस लड़की को ससुराल में जाकर तरह-तरह से उत्पीड़ित किया जाता है। उस पर अनेक प्रकार के अत्याचार और अन्याय किए जाते हैं। उसका गला दबाकर अथवा मिट्टी का तेल डालकर उसको जला कर मार दिया जाता है। समाचार पत्रों में कुछ समाचार तो ऐसे देखने को मिले, जिसमें बेचारी असहाय बहू के साथ उसके देवर, जेठ, ससुर, चाचा ससुर, आदि सभी पुरुष जघन्य एवं पैशाचिक बलात्कार करते थे। यह सब शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, व्यभिचार दहेज के कारण किए जाते हैं। यथार्थ में दहेज के चलन की व्यवस्था का आरम्भ मनु के द्वारा किया गया था।

मनु ने "चारों वर्णों के लिए, यहां-वहां अच्छे-बुरे आठ प्रकार के विवाह बताए हैं, जो इस प्रकार हैं—(1) ब्राह्म, (2) देव, (3) आर्य, (4) प्रजापत्य (5) आसुर, (6) गान्धर्व, (7) राक्षस, (8) पैशाच,[1] मनु ने ब्राह्म, देव आर्य विवाह में 'कन्यादान' के साथ-साथ धन, जेबर, कपड़े, गाय-बैल, दास-दासियों, सोना-चांदी, आदि जानवर दिए जाते थे। इसलिए मनु के द्वारा कन्यादान का मतलब पुत्री को गाय-भैंस, दास-दासी, भेड़-बकरी आदि के समान समझा जाने लगा। इसका मतलब मनु ने कन्यादान की जो प्रथा चलाई वह आज भी हिन्दुओं के समाज में प्रचलित है। मनु की इसे बेवकूफी के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता। यही कारण है कि गाय-भैंस, दास-दासियों, भेड़-बकरियों की तरह कन्यादान में दी गई लड़कियों का शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार एवं जघन्य व पैशाचिक हत्याएं की जाती हैं। यह मनु के आतंकवाद का दुष्परिणाम है।

मनु के द्वारा प्रतिपादित 'राक्षस-विवाह' और 'पैशाच' विवाहों को भी विवाह की श्रेणी में रखा है, जो मनु के आतंकवाद की चरम सीमा है। इस संदर्भ में मनु कहता है, "मार-पीटकर, मकान आदि तोड़कर, गाली देती एवं रोती हुई कन्या को बलात् अपहरण कर उससे विवाह करना 'राक्षस' विवाह है।"[2] पैशाच विवाह के बारे में मनु

1. मनुस्मृति, 3/20-21

2. वही, 3/33

कहता है, "सोई हुई, नशे में लिप्त अथवा प्रमादी स्त्री के साथ निर्जन स्थान में भोग करना नीच 'पैशाच' विवाह है। इन विवाहों में मनु के आतंकवाद के स्पष्ट दर्शन होते हैं। लेकिन आज की भाषा में इस प्रकार के विवाह कानून का घोर उल्लंघन हैं और ऐसा करने वाले के लिए सख्त दण्ड का विधान है। इस दृष्टि से मनु को घोर आतंकवादी कहा जा सकता है। आज जो हिन्दू समाज में दहेज के कारण आतंकवाद फैला हुआ है, वह मनु की देन है।

आज ब्राह्मणवादी आतंकवाद पूरे भारत में छाया हुआ है। जिस कारण भारत की आजादी के साठ वर्ष के बाद भी आज दलितों और शोषितों पर भिन्न-भिन्न प्रकार के शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार, अनाचार, व्यभिचार, जघन्य एवं पैशाचिक हत्याएं, दलित महिलाओं के नग्न जुलूस, दलितों की बस्तियों में आगजनी की घटनाएं हो रही हैं। इसका एक मात्र कारण मनु के द्वारा दी गई आतंकवादी व्यवस्थाएं हैं।

आज हिन्दुओं में जो आतंकवाद व्याप्त है, उसका मुख्य कारण एवं स्रोत मनु का पाशविक न्याय एवं आतंक है। यहां पर बानगी के रूप में मनु के आतंकवाद की कुछ व्यवस्थाएं दी जा रही हैं, जो इस प्रकार हैं—मनु कहता है, "शूद्र यदि द्विजों को गाली दे, तो उसकी जीभ काट लेनी चाहिए। उसका जन्म तो निकृष्ट ही कहा है। शूद्र यदि द्विजों को जाति के नाम से गाली दे, तो उसके मुंह में, आग से तपी हुई, दस अंगुल लंबी कील ठोंक दे। यदि शूद्र अहंकारपूर्वक ब्राह्मणों को धर्मोपदेश दे, तो राजा उसके मुंह और कान में तपाया हुआ तेल भर दे।"[1] समस्त प्राकृतिक न्याय के सिद्धान्तों का उल्लंघन करते हुए मनु पाशविक व्यवस्था देता है, वह कहता है, "मनु की आज्ञा है कि वह अन्त्यज (चाण्डाल आदि) श्रेष्ठ द्विजाति पर अपने जिस अंग से चोट करे, शूद्र का वही अंग काट ले। जैसे कि जो हाथ से प्रहार करे, तो उसका हाथ काट ले, क्रोध में आकर पांव से पीटे, तो पांव काट लेना चाहिए। नीच कुलोत्पन्न यदि श्रेष्ठ कुलोत्पन्न के साथ एक आसन पर बैठना चाहे, तो उसके कटि भाग को दाग देकर देश निकाला दे अथवा उसके चूतड़ों को ऐसे काट दे कि वह मरे नहीं। घमण्ड से यदि (श्रेष्ठ पर) थूके, तो राजा उसके दोनों होंट काट दे। पेशाब करे तो मूत्रेन्द्रिय और पाद मारने वाले की गुदा कटवा दे।"[2] मनु की ये पाशविक एवं दानवीय व्यवस्थाएं मानवाधिकारों का स्पष्ट उल्लंघन हैं।

मनु के इस आतंकवाद का प्रभाव ब्राह्मणवादी आतंकवाद पर देखा जा सकता है। आज मनु का आतंकवाद प्रत्येक हिन्दू के दिल और दिमाग में बैठा हुआ है। हिन्दूवादी आतंकवाद और मनुवादी आतंकवाद एक दूसरे के पर्याय और एक समान हैं। इस आतंकवाद का उद्देश्य दलितों व शोषितों पर जितना अत्याचार, अन्याय,

1. मनुस्मृति, 8/270-271-272
2. वही, 8/279-280-281-282

शोषण, अनाचार और उत्पीड़न किया जाए, किया जाना चाहिए। आज दलितों के दूल्हे घोड़े पर बैन्ड बाजे के साथ बरात नहीं ले जा सकते। जिस दलित एवं शोषित ने भारतीय संविधान के अन्तर्गत आत्मसम्मान के साथ जीवन बिताने की कोशिश की, उससे तरह-तरह से प्रताड़ित करके उस पर अत्याचार किए जाते हैं और उसकी हत्या कर दी जाती है। दलित महिलाओं को नंगा करके जुलूस निकालना फैशन बन चुका है। दलित महिलाओं के साथ बलात्कार करके उनकी हत्या करना बहुत ही असान बात है। आगरा जनपद का पनवारी काण्ड और भरतपुर का कुम्हेर काण्ड प्राचीन नाग यज्ञ याद दिलाता है, जिसमें दलितों को जलते हुए बिटोरों में फैंक कर जला दिया और पूरे आगरा और भरतपुर काण्डों की पूरे भारत में चर्चा हुई। मुरैना की जेल में दलित युवक से जेलर के द्वारा मुख मैथुन कराना और आदमी का मल खिलाना अमानवीय एवं पाशविक कृत्य था। हरियाणा में दलित महिला को जमीन में डालकर उसके गुप्तांग में लाठी डालकर घुमा दिया गया और बाद में उस में आग लगा दी गई। आज दलित महिलाओं को डायन का फतवा देकर जीवित जला दिया जाता है। राजस्थान में एक दलित महिला सरपंच को नंगाकर के जुलूस निकाला गया। धौलपुर में एक दलित युवक की नाक में लोहे की कील से सुराख करके और उसमें रस्सी डालकर गांव में बन्दूकों के साये में उसे घुटनों के बल जमीन पर घुमाया गया। सरकारी दलित कर्मचारियों को प्रताड़ित करके उनका भविष्य बिगाड़ा जाता है। अच्छे स्कूलों में दलितों के बच्चे को प्रवेश नहीं दिया जाता।

इस प्रकार की एक घटना नहीं बल्कि दलित उत्पीड़न शोषण, हत्या, आगजनी, बलात्कारों व अन्याय की हजारों घटनाएं भारत में प्रतिदिन घट रही हैं। लेकिन सरकारी अधिकारी, पुलिस, न्यायपालिका मूक दर्शक होकर देखती रहती है। यथार्थ यह है कि साठ वर्ष की आजादी के बाद भारत में ब्राह्मणवादी आतंकवाद जंगल में आग की तरह फैल रहा है, जो यथार्थ में मानवता के माथे पर कलंक का टीका है।

कुछ ब्राह्मणों में ब्राह्मणवाद नहीं

ब्राह्मण वर्ण व जाति में ब्राह्मणवाद का पाया जाना लाज़मी एवं जरूरी बात है। यथार्थ में ब्राह्मण और ब्राह्मणवाद में उच्चकोटि का सकारात्मक सह-सम्बंध (High Possitive Co-relation) होता है। जब भारत में तथाकथित नीची जातियों, जैसे जाटवों, चमारों, बाल्मिकियों, चमर जुलाहों, कबीर पंथियों व रैदासियों में ब्राह्मणवाद कूट-कूट कर भरा हुआ है, जो उस अवस्था में ब्राह्मणों में ब्राह्मणवाद का पाया जाना किसी हद तक अनुचित होने पर भी उचित प्रतीत हो सकता है। मैंने अपने जीवन में कुछ ब्राह्मण ऐसे देखे, ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवाद उनके समीप से होकर नहीं गुजरा, जिनके कुछ नाम मैं नीचे दे रहा हूं जो इस प्रकार हैं–

(1) **डॉ. बृजगोपाल तिवारी**–डॉ. बृजगोपाल तिवारी, आगरा कालेज, आगर में दर्शनशास्त्र विभाग में अध्यक्ष थे। डॉ. तिवारी विशुद्ध रूप से सच्चे इंसान एवं मानवतावादी व्यक्ति थे। उन्होंने दलित और उच्चजाति के छात्रों में कभी भेद नहीं किया, लेकिन फिर भी दलित छात्रों की ओर उनका झुकाव अधिक रहता था। डॉ. डी.आर. जाटव प्रोफेसर तिवारी जी के कारण एवं सहयोग से ही पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर सके। जबकि लाला दीवानचन्द जो डॉ. जाटव के बाह्य परिक्षक थे, उन्होंने काफी अड़चनें पैदा की थीं। इस केस में एक ब्राह्मण में ब्राह्मणवाद नहीं था। बल्कि एक बनिया में ब्राह्मणवाद देखा गया था।

(2) **डॉ. एच.के. कपिल**–डॉ. एच.के. कपिल राजा बलवंत कालेज के मनोविज्ञान विभाग मैं अध्यक्ष थे। डॉ. कपिल ब्राह्मण जाति के थे, लेकिन आपका झुकाव मार्क्सवाद की तरफ था। इसके कारण डॉ. कपिल ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवाद इनके समीप होकर नहीं गुजर सका। डॉ. कपिल का झुकाव भी हमेशा दलित छात्रों के कल्याण की ओर अधिक रहता था। यथार्थ में डॉ. एच.के. कपिल ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवाद से दूर थे।

(3) **डॉ. बी.एन. चतुर्वेदी**–डॉ. चतुर्वेदी दिल्ली के एक प्रसिद्ध अस्पताल में वरिष्ठ डॉक्टर हैं। जब वह आगरा कालेज में पढ़ते थे, उस समय उनकी नज़दीकी एक बेड़िया (दलित) जाति की लड़की से बढ़ गई। लड़की अच्छी, सुशील, योग्य व चरित्रवान् थी। डॉ. चतुर्वेदी ने बाद में उस लड़की से शादी कर ली। आज वे दिल्ली में भली प्रकार से अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। डॉ. चतुर्वेदी के ब्राह्मण होने पर भी ब्राह्मणवाद उनमें रत्ती भर भी नहीं है।

(4) **प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय**–प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय जगत प्रसिद्ध

वौद्ध धर्म एवं दर्शन के विद्वान थे। मैंने उन्हें अनेक बार समीप से देखा और परखा, लेकिन उनके व्यक्तित्व में लेशमात्र भी ब्राह्मणवाद नहीं था। उनके ब्राह्मण होने पर ब्राह्मणवाद उनसे कोसों दूर था।

(5) **महापण्डित राहुल सांकृत्यायन**—विश्व के प्रकाण्ड विद्वान थे। उनके पाडित्य से प्रभावित एवं शास्त्रार्थ में परास्त होकर काशी के पण्डितों ने उन्हें महापण्डित की उपाधि से सुशोभित किया था। आप विश्व की लगभग 30 भाषाओं के विद्वान थे। राहुल जी का जन्म पाण्डे परिवार में हुआ था, लेकिन ब्राह्मणवाद से वह बेहद घृणा करते थे।

(6) **मा. निधिमणि शर्मा**—आप आगरा निवासी हैं और बहुत ही प्रगतिशील एवं विद्वान हैं। आपने अपनी सुपुत्री की शादी मेरे मित्र के पुत्र मा. पवन वर्मा से की है। मा. निधिमणि शर्मा एक महान् इंसान हैं, जो ब्राह्मणवाद की सीमाओं को लांघ चुके हैं।

(7) **प्रोफेसर एन.के. कौशिक**—प्रोफेसर कौशिक दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में कैमिस्ट्री विभाग में विभागाध्यक्ष हैं। आपने अपनी सुपुत्री कुमारी हिमांशु कौशिक की शादी एक मुसलमान लड़के से की थी। प्रोफेसर कौशिक ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणवाद की दीवारें तोड़ चुके हैं। यह प्रोफेसर कौशिक की महानता है।

(8) **प्रोफेसर ए.के. चटर्जी**—प्रोफेसर चटर्जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रोफेसर थे। आप एक प्रगतिशील महान दार्शनिक है। ब्राह्मण होने के बाद भी आपने ब्राह्मणवाद की चूलें हिला दी हैं।

इस प्रकार के ब्राह्मणों के नाम एक नहीं हजारों हैं, जो ब्राह्मणवाद को ठोकर मार चुके हैं। लेकिन पुस्तक के आकार को देखते हुए उनका वर्णन करना जरूरी नहीं है।

ब्राह्मणवाद के दुष्परिणाम

भारत में अनेक बुराइयां हैं। उन समस्त बुराइयों की जड़ ब्राह्मणवाद है। आज भारत में छुआछूत, निरक्षता, बेरोजगारी, भेदभाव, गरीबी, भुखमरी, नारी-उत्पीड़न, भ्रूण हत्या, डायन प्रथा, जूआ, शराब, अंधविश्वास आदि सामाजिक बुराइयों का एक मात्र कारण ब्राह्मणवाद है। ब्राह्मणवाद के दुष्परिणाम कुछ नीचे दिए जा रहे हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. ब्राह्मणवाद के कारण भारत जाति-पांतियों में बंट गया, जिस कारण यह संगठित नहीं रह सका और वह विधर्मियों के आक्रमणों का सामना नहीं कर सका, जिसके कारण भारत लगभग एक हजार वर्ष तक गुलाम बना रहा।
2. ब्राह्मणवाद के कारण भारत को सभ्य राष्ट्रों में सम्मानजनक स्थान प्राप्त नहीं है।
3. ब्राह्मणवाद भारत में निरर्थक एवं अनुपयोगी है। इससे भारत की अवनति अधिक हुई है।
4. ब्राह्मणवाद के कारण भारत में अंधविश्वास एवं पाखण्डों का बोलबाला है, जिससे भारतीय समाज की प्रगति के स्थान पर दुर्गति हो रही है।
5. ब्राह्मणवाद भारत के विकास में बहुत बड़ा व्यवधान एवं रोड़ा है।
6. ब्राह्मणवाद के कारण आज भारत में चार वर्ण एवं लगभग सात हजार जातियां एवं उपजातियां हैं। जिनमें संगठन का नितान्त अभाव है।
7. ब्राह्मणवाद के कारण दलितों का शोषण, अत्याचार, अन्याय और जघन्य हत्याएं आज भी की जा रही हैं।
8. ब्राह्मणवाद के कारण भारतीय समाज में स्त्रियों के साथ समानता का व्यवहार नहीं हो पाता।
9. ब्राह्मणवाद के कारण स्त्रियों को नंगा करके जुलूस निकाले जाते हैं, उनका शोषण, अत्याचार, पैशाचिक बलात्कार करके हत्याएं की जाती हैं।
10. ब्राह्मणवाद के कारण आज भी लड़कियां स्कूलों में पढ़ने नहीं जा पातीं।
11. ब्राह्मणवाद के कारण आज भी भारत में सती-प्रथा का प्रचलन जारी है।
12. ब्राह्मणवाद के कारण आज भी दलित महिलाओं को डायन का फतवा देकर उनको जीवित जला दिया जाता है।
13. ब्राह्मणवाद के कारण ही आज भारत में औरत को पैर की जूती समझा जाता है। उन्हें आज भी समानता, स्वतंत्रता, बन्धुत्व और न्याय प्राप्त नहीं है।

14. ब्राह्मणवाद के कारण साठ वर्ष की स्वतंत्रता के बाद भी आज दलितों एवं स्त्रियों को मानवाधिकारों से वंचित कर रखा है।
15. ब्राह्मणवाद के कारण ही देश में भ्रष्टाचार का बोलबाला है।
16. ब्राह्मणवाद के कारण ही मनुष्य को मनुष्य कम, जानवर अधिक बना रखा है।
17. भारत की राजनीति में पारिवारवाद, भ्रष्टाचार, जातिवाद और व्यक्तिपूजा भी ब्राह्मणवाद के कारण ही है।
18. ब्राह्मणवाद के कारण गधे पंजीरी खा रहे हैं और घोड़े भूखे मर रहे हैं।
19. ब्राह्मणवाद के कारण देश दलितों की योग्यताओं और बुद्धि का राष्ट्र के विकास, व्यवसाय की उन्नति में प्रयोग नहीं कर सकता।
20. वर्ण-व्यवस्था के कारण देश की बहुत बड़ी जनसंख्या निरक्षर और अशिक्षित रह गई, क्योंकि सभी वर्णों की स्त्रियों और शूद्रों के शिक्षा के अधिकार को छीन लिया गया था।
21. ब्राह्मणवाद ने दलितों के जीवन को नरक बनाकर रख दिया।
22. ब्राह्मणवाद के कारण समाज में अनुलोम, प्रतिलोम विवाहों को काफी प्रोत्साहन मिला, जिससे समाज में व्यभिचारों और बलात्कारों में अत्यधिक वृद्धि हुई।
23. ब्राह्मणवाद के कारण समाज में आठ प्रकार के विवाहों को मान्यता प्राप्त हो गई, जिससे समाज में बलात्कारों और व्यभिचारों में वृद्धि हुई।
24. ब्राह्मणवाद के कारण यज्ञों को प्रोत्साहन मिला, जिससे गाय, बैल, घोड़े, भेड़, बकरी, सूअर, आदि जानवरों की बलियों में वृद्धि हुई। कभी-कभी तो नर-बलि भी दी जाती थी।
25. ब्राह्मणवाद के कारण समाज में नशों का प्रचलन बहुत बढ़ गया, जिससे नैतिक पतन का आरम्भ हो गया।
26. ब्राह्मणवाद के कारण राजतंत्र को बढ़ावा मिला, जिससे जनतंत्र और समाजवाद कमजोर पड़ गया।
27. ब्राह्मणवाद से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संवर्द्धन नहीं हो सका, जिससे देश का पतन आरम्भ हो गया।
28. ब्राह्मणवाद के कारण मानव-कल्याण के स्थान पर गाय, गधे आदि जानवरों की पूजा पर अधिक जोर दिया जाने लगा, जिससे मनुष्य का स्थान गौण हो गया।
29. ब्राह्मणवाद के कारण लाखों दलित जातियों ने इस्लाम और ईसाई धर्म अपना लिया वे विधर्मी हो गए।
30. ब्राह्मणवाद के कारण भारत दुनिया के नक्शे पर एक शक्तिशाली राष्ट्र उभर कर नहीं आ सका, जिस कारण यह महान् देश लगभग एक हजार वर्ष तक गुलाम रहा।

31. ब्राह्मणवाद के कारण आज भी लगभग 25 करोड़ दलित अछूत बनकर कुत्ते सूअर का नरकीय जीवन व्यतीत कर रहे हैं।
32. ब्राह्मणवाद के कारण विभिन्न जातियों में पारस्परिक प्रेम का अभाव हो गया, जिस कारण वे समता और संगठन के सूत्र में नहीं बंध सकीं।
33. ब्राह्मणवाद के कारण आर्यसमाज अपने मिशन में पूरी तरह असफल रहा और शुद्धि आन्दोलन और गुण एवं कर्म के अनुसार वर्ण-व्यवस्था नहीं बना पाया।
34. ब्राह्मणवाद के कारण शिल्प की समुचित उन्नति एवं विकास नहीं हो पाया।
35. ब्राह्मणवाद के कारण हिन्दुओं की सहानुभूति अपने जाति वालों तक ही सीमित रही। उपरोक्त बिन्दु, ब्राह्मणवाद के दुष्परिणाम कहे जा सकते हैं।

ब्राह्मणवाद की काट सिर्फ बौद्धधर्म

आज भारत के विकास, समृद्धि और उत्थान में ब्राह्मणवाद बहुत बड़ा रोड़ा एवं व्यवधान बना हुआ है। उसका मुख्य कारण यह है कि इस समय भारत में, जो मुख्य धर्म मौजूद हैं, जैसे वैदिक धर्म, हिन्दू धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, कबीरपंथी, राधास्वामी, रैदासी आदि ब्राह्मणवाद से समझौता कर चुके हैं। ईसाई व इस्लाम धर्म के अनुयायी और पारसी ब्राह्मणवाद से भय खाते हैं। इसलिए सभी धर्मावलम्बियों की स्थिति बड़ी डबांडौल है और ब्राह्मणवाद इस स्थिति का लाभ उठाकर देश में पाखण्ड, अंध-विश्वास, भेदभाव फैलाकर देश को बर्बाद करने पर तुला हुआ है।

यदि भारत का समग्र विकास एवं उत्थान करना है, तो ब्राह्मणवाद को समाप्त करके उसको दफन करना होगा। इस कार्य को जैन, सिख, हिन्दू आदि धर्मावलम्बी नहीं कर सकते, क्योंकि वे ब्राह्मणवाद से समझौता कर चुके हैं। ईसाई, मुसलमान और पारसी यह कार्य नहीं कर सकते, क्योंकि वे ब्राह्मणवादियों से भय खाते हैं। यदि इस कार्य को कोई कर सकता है, तो वह बौद्ध धर्म ही कर सकता है, अन्य नहीं। इसलिए ब्राह्मणवाद की काट है, तो केवल बौद्ध धर्म है, जिसका प्रचार-प्रसार करना अत्यन्त आवश्यक है।

नीचे के बिन्दुओं में ब्राह्मणवाद और बौद्ध धर्म का तुलनात्मक विवेचन किया जा रहा है, जिसे देखकर प्रबुद्ध पाठक स्वयं ही अनुमान लगा लेंगे कि बौद्ध धर्म किस प्रकार ब्राह्मणवाद की काट कर सकता है।

ब्राह्मणवाद

1. ब्राह्मणवाद अंधविश्वास और पाखण्डवाद पर विश्वास करता है।
2. ब्राह्मणवाद अवैज्ञानिक दृष्टिकोण फैलाता है, जिससे लोग अज्ञानी व मूर्ख बनते हैं।
3. ब्राह्मणवाद ब्रह्म व ईश्वर को मानता है।
4. ब्राह्मणवाद आत्मा को अजर, अमर मानता है।
5. ब्राह्मणवाद वर्ण-व्यवस्था व जातिवाद को मानता है। वह भेद-भाव छुआछूत पर विश्वास करता है।
6. ब्राह्मणवाद राजशाही व राजतंत्र पर विश्वास करता है।
7. ब्राह्मणवाद असमानता पर विश्वास करता है।
8. ब्राह्मणवाद मनुष्य की परतंत्रता पर विश्वास करता है।

9. ब्राह्मणवाद बन्धुत्व, भाईचारे का विरोधी है।
10. ब्राह्मणवाद समाज में अन्याय फैलाता है।
11. ब्राह्मणवाद दलितों और स्त्री-शिक्षा का विरोधी है।
12. ब्राह्मणवाद शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार व अन्याय पर निर्भर करता है।
13. ब्राह्मणवाद हिंसा एवं मारकाट का समर्थक है।
14. ब्राह्मणवाद युद्ध से समस्या का समाधान करता है।
15. ब्राह्मणवाद व्यक्तिवादी सिद्धांत है।
16. ब्राह्मणवाद का नीतिशास्त्र ईश्वर के हाथ की कठपुतली मात्र है।
17. ब्राह्मणवाद की मान्यता है कि कर्म का फल ईश्वर देता है।
18. ब्राह्मणवाद में ईश्वर मोक्षदाता होता है।
19. ब्राह्मणवाद के अनुसार मनुष्य को जन्म देने वाला ईश्वर है।
20. समाज व देश का विकास ईश्वर व देवताओं के हाथ में होता है।

बौद्ध धर्म

1. बौद्धधर्म प्रज्ञा व बुद्धि की बात करता है। यह धर्म बुद्धिवादी धर्म है।
2. बौद्ध धर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण फैलाता है जिसे लोग ज्ञानी व बुद्धिमान बनते हैं।
3. बौद्ध धर्म ईश्वर को नहीं मानता।
4. बौद्ध धर्म आत्मा के अस्तित्व पर विश्वास नहीं करता।
5. बौद्ध धर्म वर्ण-व्यवस्था व जातिवाद को नहीं मानता। यह भेदभाव व छुआछूत पर विश्वास नहीं करता।
6. बौद्ध धर्म गणतंत्र अर्थात् जनतंत्र पर विश्वास करता है।
7. बौद्ध धर्म में सभी मनुष्य समान हैं, इस सिद्धांत को मानता है।
8. बौद्ध धर्म मनुष्य की स्वतंत्रता पर विश्वास करता है।
9. बौद्ध धर्म बन्धुत्व, भाईचारे का समर्थन करता है।
10. बौद्ध धर्म समाज में न्याय की स्थापना की बात करता है।
11. बौद्ध धर्म सभी दलितों और स्त्रियों की शिक्षा का समर्थन करता है।
12. बौद्ध धर्म शोषण, उत्पीड़न, अत्याचार व अन्याय का डटकर विरोध करता है।
13. बौद्ध धर्म अहिंसा का पोषक तथा मारकाट का विरोधी है।
14. बौद्ध धर्म अहिंसा एवं शान्ति से समस्या का समाधान चाहता है।
15. बौद्ध धर्म समष्टि के सिद्धांत का प्रचारक है।
16. बौद्ध धर्म के अनुसार मन ही केवलमात्र नीतिशास्त्र का निर्धारक है।
17. बौद्ध धर्म मानता है कि कर्म का फल मनुष्य के शुद्ध, पवित्र मन पर निर्भर करता है।
18. बौद्ध धर्म में बुद्ध केवल मार्ग-दाता हैं। निर्वाण के लिए प्रयास मनुष्य को ही करना पड़ेगा।

19. बौद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य प्रकृति का पुत्र है, ईश्वर, ब्रह्म का नहीं।
20. समाज व देश का विकास मनुष्य के प्रयास से होता है।

उपरोक्त बिन्दुओं को देखकर बात स्पष्ट हो जाती है कि आज ब्राह्मणवाद के कारण भारत का विकास अवरुद्ध हो गया है। यहां पर जातिवाद, भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार, व्यभिचार, बलात्कार, नशाखोरी, अशिक्षा, छुआछूत आदि जो बुराइयां फैली हुई हैं, वे ब्राह्मणवाद के कारण फैली हुई हैं। ब्राह्मणवाद की काट यदि भारत में है, तो वह केवल बौद्ध धर्म है। उदाहरण के लिए आज विश्व में जहां-जहां बौद्ध धर्म है उस देश का विकास उच्च कोटी का है। इसलिए आज भारत का आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राजनीतिक विकास करना है तो यह ब्राह्मणवाद समाप्त करके ही सम्भव है। हमें बौद्ध धर्म का अनुशीलन करना होगा।

देश का दुश्मन ब्राह्मण नहीं, ब्राह्मणवाद है

आज भारत बड़ी गम्भीर एवं विकट परिस्थितियों से गुजर रहा है। उसका मुख्य कारण यह है कि इस देश में समसरता, संगठन और इंसानियत का अभाव पाया जाता है। व्यक्तिवाद, परिवारवाद, जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद एवं आतंकवाद ने इस महान देश को जर-जर करके कमजोर कर दिया है। यहां पर भ्रष्टाचार अपनी चरम सीमा पार कर चुका है। इस देश में भुखमरी, बेरोजगारी, निरक्षरता, अंधविश्वास और पाखण्डों का साम्राज्य छाया हुआ है। इन सभी का जनक ब्राह्मणवाद है।

ब्राह्मण एक जाति है, जिसकी व्याख्या पहले की जा चुकी है। बुद्ध के अनुसार ब्राह्मण बुद्ध का पर्याय होता है, जो एक आदर्श व्यक्ति माना जाता है। कुछ लोग ना समझी, सीमित ज्ञान एवं अज्ञान के कारण ब्राह्मण को दलितों, शोषितों, पिछड़ों और देश का दुश्मन समझ बैठते हैं, जो आधारहीन एवं मिथ्या है। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, प्रोफेसर जगन्नाथ उपाध्याय आदि ब्राह्मण थे, जो हमेशा दलितों के शुभचिन्तक एवं सहायक सिद्ध हुए। ऐसी स्थिति में ब्राह्मण को दलितों, शोषितों पिछड़ों और देश का दुश्मन कहना अनुचित एवं ब्राह्मण के साथ अन्याय होगा।

यथार्थ में ब्राह्मणवाद एक अमानवीय व पाशविक विचारधारा है, जो मुनष्य में अनेक प्रकार के मनोरोग पैदा करती है। यह विचारधारा दलितों, शोषितों और पिछड़ों का उत्पीड़न, शोषण, अत्याचार, अनाचार एवं अन्याय करती है। जिससे देश सशक्त नहीं हो पा रहा है। यह जरूरी नहीं है कि यह ब्राह्मणवादी मनोरोग ब्राह्मण जाति में ही पाया जाए, यह किसी भी जाति में पाया जा सकता है। जिस जाति में ऊंच-नीच की भावना हो, चाहे वह भंगी हो अथवा चमार, धोबी हो अथवा नाई, वह ब्राह्मणवाद के शिकंजे में आ जाता है। वैसे तो भारत की प्रत्येक जाति ब्राह्मणवाद की गिरफ्त में आ चुकी है, लेकिन ब्राह्मण जाति में परम्परागत कारणों से ब्राह्मणवाद अधिक पाया जाता है। लेकिन अन्य जातियां भी इससे अछूती नहीं हैं। इसलिए ब्राह्मण जाति को ब्राह्मणवादी कहना अनुचित बात होगी।

उपरोक्त व्याख्या से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि जो लोग ब्राह्मण जाति को दलितों, शोषितों एवं पिछड़ों और देश का दुश्मन बताते हैं यह उनका भ्रम है। यथार्थ में देश का दुश्मन ब्राह्मण नहीं ब्राह्मणवाद है, जिसने सम्पूर्ण भारत का सर्वनाश पतन एवं ह्रास कर दिया है। इसलिए भारत का विकास, उत्थान करके समृद्ध एवं सशक्त राष्ट्र बनाना है, तो यहां से ब्राह्मणवाद का बीज वंश समाप्त करना होगा। ब्राह्मणवाद ने ही भारत को एक बड़ा पागलखाना बना दिया है।

लेखक की अन्य कृतियां

बौद्ध धर्म में अनात्मवाद	70
मैं अनीश्वरवादी क्यों?	70
बाबा साहेब का नरक से छुटकार	20
समस्त जाट जाति प्रच्छन्न बौद्ध हैं	60
क्या बाबा साहेब का धर्मान्तरण राजनीति से प्रेरित था?	5
बाबा ने ऐसा कहा (कुण्डली संग्रह)	30
अयोध्या में बौद्धों का बावरी महाविहार	20
मैंने हिन्दू धर्म क्यों छोड़ा?	60
मैं बौद्ध क्यों हुआ?	30
महान दार्शनिक : आचार्य धर्मकीर्ति	40
महान दार्शनिक : आचार्य नागार्जुन	40
महान दार्शनिक : आचार्य दिग्नाग	30
महान दार्शनिक : आचार्य वसुबंधु	40
महान दार्शनिक : आचार्य असंग	50
महान दार्शनिक : आचार्य सरहपा	40
महान दार्शनिक : आचार्य शान्तिदेव	75
महान दार्शनिक : आचार्य चन्द्रकीर्ति	35
महान दार्शनिक : आचार्य आर्यदेव	75
महान दार्शनिक : आचार्य शान्तरक्षित	35
महान दार्शनिक : भिक्खु नागसेन	75
बुद्ध धर्म : शंकाए और समाधान	70
समस्त मुण्डा जाति बौद्ध है	15
बौद्ध धर्म में शून्यवाद	75
बौद्ध धर्म में शून्यवाद (HB)	160
महान् बौद्ध दार्शनिक (पुरस्कृत)	750
जाति विध्वंसक भगवान बुद्ध	125
सांस्कृतिक क्रांति क्यों? क्या? और कैसे?	50
महान मनोचिकित्सक भगवान बुद्ध	125
बुद्ध का समाजदर्शन	300
बुद्ध का नीतिशास्त्र	प्रेस में
महान आचार्य : अश्वघोष	प्रेस में



डॉ. धर्मकीर्ति

जन्म तिथि	:	25 जुलाई 1938
जन्म-स्थान	:	गुम्मट तख्त पहलवान, सदर बाजार, आगरा, उ.प्र.
पिता	:	परिनिर्वृत भूपसिंह जी, क्रांतिकारी आर्यसमाजी चिंतक व स्वतंत्रता सेनानी
पितामह	:	परिनिर्वृत सीताराम जी, एक साधारण कृषक
शिक्षा	:	एम.ए. (दर्शन), एम.एड., एम.फिल्., पी-एच.डी. (मनो.), पी-एच.डी. (दर्शन), पी-एच.डी. (बौद्ध विद्या), डी.लिट्. (दर्शन)
आजीवन [illegible]	:	(1) दि इन्डियन साइंस कांग्रेस, कोलकाता (2) दि इन्डियन फिलोसोफिकल कांग्रेस, दिल्ली (3) दि इन्डियन साइकॉलोजीकल एसोसिएशन, दिल्ली (4) भारतीय दर्शन परिषद्, जबलपुर (5) महाबोधि सोसाइटी ऑफ इंडिया, कोलकाता (6) उत्तर प्रदेश समाज, दिल्ली (7) कंज्यूमर फोरम, इन्द्रपुरी, दिल्ली
फाउन्डर ट्रस्टी	:	(1) अम्बेडकर एजूकेशन ट्रस्ट, दिल्ली, (2) इन्टरनेशनल बुद्धिस्ट कल्चरल ट्रस्ट, दिल्ली
अध्यक्ष	:	मिलिन्द शिक्षा समिति, गाजियाबाद
अवार्ड्स	:	(1) इन्दिरा गांधी मैमोरियल अवार्ड, 1986 (दिल्ली), (2) प्रकाशवीर शास्त्री अवार्ड, 1988 (दिल्ली), (3) बाल भारती अवार्ड, 1986-87 (दिल्ली सरकार), (4) अम्बेडकर अवार्ड, 1993 (दिल्ली), (5) बुद्ध-रत्न अवार्ड, 2002 (दिल्ली), (6) डॉ. अम्बेडकर इन्टरनेशनल मिशन बुद्धिस्ट लिटरेसी अवार्ड, 2003 (कनाडा), (7) बोधिसत्व अम्बेडकर अवार्ड, 2005 (हरियाणा), (8) धम्म-रत्न अवार्ड, 2007 (आगरा), (9) दुष्यन्त अवार्ड, 2007 (दिल्ली)
पता	:	राजगृह, बी-4/109, पश्चिम विहार, नई दिल्ली—110063 फोन : 011-25285769, मो. 9811064733

70.

सम्यक प्रकाशन

32/3 क्लब रोड, पश्चिमपुरी, नई दिल्ली—110063

दूरभाष : 6570 6888 98101 61823

email : budhdharam@bol.net.in www.samyakprakashan.com